बलचनमा

(मैथिली)

मूल लेखक

नागार्जुन

मिथिला सांस्कृतिक परिषद, कलकत्ता

४

चुन्नी दोसर दिन भोरगरे हमरा उठौलक आ कहलक जे फूल बाबू सँ ई काज भऽ सकत। छोटका मालिक हुनके सँ कनी दबेल भऽ सकैत छथि। चुन्नीक ई विचार हमरा बड़ नीक लागल। हम चुपचाप लहेरियासराय पहुँचि गेलहुं, गाड़ीयो ठीक समय पर भेटि गेल छल। लोक सब सँ पुछारी कऽ कऽ बरहमपुरा आ ओतऽ सँ आसरम पहुँचलहुं। पहुँचबा मे कनिको कष्ट नहि भेल।

दुपहरक समय रहैक। आसरमक अंगनई मे एकटा बड़का आमक गाछ छलैक। गाछ तर एकटा कमलक (कम्बल) आसनी पर पलथी मारने फूल बाबू मगन भऽ कऽ चरखा काटि रहल छलाह।

फूलबाबूक पैर पकड़ि कऽ हम कानए लगलहुं। एकाएक पैर पकड़ने हमरा कनैत देखि फूलबाबूक मोन अकचका गेलैन आ हाथक पीर (पूनी) छूटि गेलैन सूत सेहो टूटि गेलैन। फूलबाबूक दाढ़ी मोछ तथा केश बड़ पैच-पैच छलैन्ह। देह उघारे छलैन। ठेहुन धरि खधरक धोती पहिरने छलाह। बाबू भैया कें आइ तक हम एहन फकीर भेष मे नहि देखने छलियैन। फूल बाबू ठीक महातमा जकाँ हमरा बुझि पड़लाह। आब तऽ बैरागी बरहमचारी लोकनि कें बिना ढेकाक धोती पहिरैत देखैत छियैन। अपना जनकपूरे मे एहितरहक कतेको बैरागी-बरहनचारी भेटताह। चोरौत, मटिहानी आदि कतेक महंथान अपना लोकनिक दिस अछि। ओतऽ बैरागी लोकनिक पलटन सेहो रहैत छैन जकरा लोक नागा कहैत छै। ओ सब खूब मेंही मलमलक धोती घेंट सँ बान्हिक डाँर मे लपेटने रहैत छथि तकरा बैरागीलोकनि बरहमगांती कहैत छथिन।

आसरम मे पहुंचिकऽ फूलबाबू के ओहि भेष मे जे हम देखऽलियैन तऽ भीतरक सब सरधा (श्रद्धा) उमड़ि आएल। एना तऽ प्रथमे जखन हम हुनका मलिकाइनक ओहि ठाम देखने छलियैन तखने हमर मोन हुनका मे गड़ि गेल छल। बाद मे चारि छौमास ओ हमरा पटना मे संगे रखलैन। बड़ा परेम सँ रखैत छलाह, जेना बाप बेटा कें रखैत छैक आ आब एहि भेख मे देखिकऽ हमरा चोटैल मोन के एहन लागल जे इएह फूलबाबू हमर उद्धार करथि तऽ करथि नहि तऽ छोटका मालिकक परकोप सँ छुटकारा पाबक आर कोनो रस्ता नहि अछि। से हम हुनकर दुनू पैर छानिकऽ लुढ़सँ माटि पर परि रहलहुं आ हिचुकि-हिचुकि कानऽ लगलहुं।

फूलबाबू हमरा उठा लेलनि। बेर-बेर पुछऽ लगलाह जे कि भेलौ—बाउ कोन संकट तोरा ऊपर आबि गेलौक अछि? माए तऽ ने दुखित छौक बलचनमा तोरा बहिन के तऽने किछु भऽ गेलौऽ अछि।

हमर हिचुकी बन्दे ने होइत छल। बड़ीकालतक ओ हमरा देह पर हाथ फेरैत रहलाह। आँगुर सँ कतेक बेर नोर पोछलनि। हमर दशा देखिकऽ हुनकर चेहरा सपेता मालदह जकाँ भऽ गेलैन। ओहि दिन हमरा बुझऽ मे आएल जे दिल भरल हो, आ मारी ठेस लागल हो तऽ खूब कानक चाही। बड़ सँ मोन हलुक होइत छैक। बहुत नोर बहेला पर हमरो मोन जखन हलुक भेल तखन हिचकी बंद भेल।

फूलबाबू ओतए सँ उठलाह, खादीक लच्छी आ पीर बला पथिया अपने

छड़ा लेलनि। आसनी आ चरखा हम लऽ लेलियनि। ओ आगां-आगां चललाह आ हम पाछां। दूनू गोटे ओइ कुटी मे अएलहुं जतए फूलबाबू रहैत छलाह। फूलबाबू मोने-मोने सोचने हेताह—खेल-पील, एमहर-ओमहरक बात करत, धूनि-धामि कऽ आश्रमक चीज वस्तु देखत, मोन हलुक भऽ जेतैक तखन अपने सब बात कहि देत।

कहिए चुकल छिअ जे फूलबाबूक स्वभाव बड़ मीठ रहैन। हुनका बात सँ मधु चुबैत छलैन, हुनका आँखि सँ दूधक ठंढा धार फुहारा बनिकऽ बहइत छलैन। देखहो मे बहुत सुन्दर रहथि।

अपना कुटी मे जखन ओ पहुँचलाह तऽ दिनक एगारह बाजि चूकल रहैक ओ काठक बक्सा मे सूतल अन्ठी मसहारह लगलाह। हम ताहि दिन देखैत छलहुं। ई कुटी एक बड़का फूसक घरक एक छोट कोठली रहैक। फोंफक पातर देबाल एक कमरा के दोसर कमरा सँ फराक करैत छलैक। खपरैली शीशोके रहैक। बरेड़ो मे नाम आ पातर बसुआक व्यवहार कैल गेल रहैक। ऊपर चार खढ़ सँ छाड़ल गेल रहैक। फोंफनक देबाल कँ काटिकऽ चौकोन खिड़की बनाओल गेल रहैक। ओसारा कें बाहीक आफरी कँ बीच-बीच मे घेर देल गेल रहैक। बाँसक एहन कारीगरी अइ सँ पहिनें हम कतौ नइ देखने छलिऐक। फूलबाबूक कमरा मे मामूली बस्तु-जात रहैन। एक एकटा खाट आ काठक एक बक्सा। आगांमे दू-टूटा ईंट राखिकऽ काठक एक तखता राखल छलैक ओहि पर गोट दस-बारहेक पोथी। एक कोन मे माटिक घैल पानि सं भरल राखल रहैक। छोट छिन कलगइयाँ लोटा सेहो रहैक। दूनू किनार में डोरी बानहल अलगनीक माँझ पर बाँसक लग्गा लटकैत छलैक। ओहि पर पचहत्थी खधर आ एक छोट छिन अंगपोछा लटकल सुखा-इत छलैक। शीशामे मढ़ल तीन मूरुत तीन दिस लटकैत छलैक। ओइ

दिस आँखि गड़ोने देखलनि तऽ फूलबाबू अपन गरदनि हँसुतैत बजलाह—महात्मा गाँधी छथि।

महात्माजीक नाँव सुनने तऽ हम अवस्से रही आ सुननो एना रही जे सरकार बहादुर सँ केओ लोहा लऽ सकैत अछि तऽ गाँधी महात्मा लऽ सकैत छथि, अंग्रेज बहादुर के ओ नाक मे कौड़ी बान्हि देलखीन अछि। सरकार हुनका सं हरान-हरान अछि। गाँधी के पकड़नाइ आ पानि मे आगि लगेनाइ दूनू मुश्किल अछि। महात्माजीकें अफसर लोकनि जहलखाना मे राखि दैत छैन्ह, मुदा भैया दोसरे दिन हुनका दोसर ठाँव खराम पहीर कऽ टहलैत देखि सरकार बहादुर के पेटक पानि डोलऽ लगैत छैक। बम्बई मे पकड़ि कऽ बंद कैलकनि तऽ लोक महात्माजी के कलकत्ता मे देखलकैन। अहमदाबाद मे पकड़ल गेलाह तऽ मद्रास मे मीटिंग करैत पाओल गेलाह। मनियार कक्काक मुँह सँ सुनने रही जे गाँधी महतमा के पूनाक जेलर खिसिया कऽ कोल्हू मे जोति देलकनि आ दू मोन सरिसो पेरबाक लेल कहलकैन। जेलर सोचने होयत जे दुबर-पातर कमजोर आदमी छथि, कोल्हू मे कि बहता, माफीनामा लिखि कऽ बैस जेताह। मुदा भैया, मनियार कका कहलैन जे गाँधी बाबाक हाथ लगिते देरी अपनहि दूनू मोन सरिसो कऽ तेल मे बदलि गेलैक। मनियार काका कहैत छलाह—कारी पहाड़ जकाँ हृष्ट पुष्ट बड़का बड़का बेहाल गाँधी महतमा के दासो दास भऽ कऽ हुनका संग चलैत छैन। ओहि बेहाल लोकनिक ई खेल रहैक'''एहि तरहक अजीब बात सं भरल गाँधी-महतमाक नाँव जखन हमरा जिला जवार मे फैललनि, तखन हमरा कान मे हुनकर नाँव पड़ल। हम सोचैत रही जे गाँधी महतमा केहन हेताह। मुदा बुझऽ मे किछु नहि आवए। सोचि-सोचि कऽ रहि जाइत छलहुँ। से आब फोटो मे देखलियैन तऽ मोन कें सन्तोष भेल। माथक केश उड़ल, कान छोट-छोट

आ उठल, चाकर कपार चेहरा कनेक नीचा दिस कऽ झुकल। ई सब देखिते हमरा अजगुत लागल जे ई महतमा गाँधी छथि। ई तऽ अनमन हमरा चुमान बबा सन लगैत छथि। दोसर फोटो रोबदाबक रहैक। बढ़िया अंगा पहिरने आ माथ पर मुरेठा बन्हने। बड़का-बड़का मोंछ। हेन-तरहक आँखि —ई के छथि हम फूल बाबू सँ पुछलियैन। उत्तर भेटल—लोकमान तिलक। तऽ इहो कांगरेस के भारी अफसर छथि। ओ कहलनि जे—नहि, छथि नहि। छिन कर स्वर्गवास भऽ गेलैन मुदा बड़का भारी नेता छलाह।

तेसर फोटो दिस हाथ देखा कऽ फूल बाबू कहलनि—ई तऽ अपना अइ ठामक राजिन्दर बाबू छथि। अपना अइठाम—दरिभंगाक? फूल बाबू हँसि कऽ कहलनि धुर बागल कहीं के! अपने अइठामक माने खाली अपने जिला थोड़े नइ होइ छइ। एकर माने होइ छइ अपन प्रांत, अपन कमिश्नरी, अपन जिला, अपन थाना, अपन इलाका आ अपन देश। अइ भारत देश मे छोट नमहर नौ प्रांत छैक। हमरा लोकनि जतए रहैत छी से बिहार प्रांत कहबैत छैक। एकरा अन्दर उड़ीसा सेहो मिलल छैक। छोटानागपुर, भोजपुरी, तिरहुत आ मगहक इलाका शामिल छैक। राजिन्दर बाबू छपरा कें रहऽ बला छथि आ गाँधी महतमाक बड़का भारी चेला छथि। आला दरजाके वकील छलाह। बहुत बढ़िया प्रैक्टीश रहैन। हँ, हजार मोकिल रहैन। खानदानी रोब-दाब रहैन, जमींनदारी ठाठ-बाट। सब छोड़ि-छाड़ि कऽ गाँधी महतमा के पाछां फकीर भऽ गेलाह अछि।

फूल बाबू एना तऽ कम बजैत छलाह मुदा कखनो-कखनो जेना बोतलक ठेकी फुजि जाइत छैक ओहिना हुनको मुँहक ठेकी फुजि जाइत छैन्ह आ तखन गोदा हुनका सँ दुनिया भरिक अल्लम गल्लम सुनि लऽ। एहन समय मे किछु आर पुछनाइ आगि मे घी देनाइ बुझह। तँइ हम चुप रहलहुँ।

ओ बजिते छलाह कि घंटी बजलै। हम अकचका गेलहुँ। फूल बाबू कहलनि भोजनक बनाहट छैक। चिकओ बुझह। हमरा मलिकान मे भोज-भात होइते रहैत छलैक। टोल-परोस आ कहियो-कहियो लऽसे गाँमक बाभन देवता भोज खएवालेल अबैत रहैत। बूढ़, नेना, जुआन सब केओ जखन आबि जाथि तऽ केओ परसैया आबि कऽ जोर सँ ई आवाज लगबैतथि जे चिकओ हो! चिकओ हो। से चिकओ के माने हमरा बुझल रहए मुदा भोजनक बनाहटिक लेल घंटी बजा कऽ ई चिकओ हमरा लेल एकदम नव बात छल। मालिक कहलनि चल संगे खाएब। एतऽ ऊँच नीचक झंझट नहि छैक। गाँधी महतमा कें गुरु मानऽ बला आश्रम निवासी ने छूत-छात मानैत छैक आऽने ऊँच नीच। सत कहै छिअ भैया फूल बाबूक ई बात सुनि कऽ हमरा बड़ा अजगुत भेल, मोने-माने हँसी आबि गेल। ऊँच नीचक भेद बहुत दिन सँ चलि अएलैक अछि आ बराबरि रहतैक। चारि आदमी कें मानला सँ की होइत-जाइत छैक? फूल बाबू कहलनि जे लोटा लऽले आ जल्दी चल।

आसरमक भनसा घर दोसरा कात पछुआर दिस रहैक। दू चारक छोट छिन घर, फाँफिनक टाट आ शीशोक दू टा खाम्ह छलैक। बड़ेरी पर टिकल चार, आ पाछा दिस धुँआ बहार देबाक लेल जाफरी बला खिड़की छलैक। खेबाक वास्ते एक चार बला नाम एकचारी। लाइक पातक छोट-छोट आसनी ओइठाम ओछाओल छलइक। एक पाँती मे मालिक आ कऽ बइस गेलाह। आरो दस बारह बाबू लोकनि छलाह। अपना सन हम एसगरे रही। कए गोटे हमरा मालिक सँ पुछलखिन—बजाकऽ अएलह अछि? फूल बाबू ओइ बेचारी कें आहाँ बेकारे सतबइत छियइक हम बुझि गेलियइ जे ई इशारा बाबू लोकनि के ककरा दिस रहैन? बुझलह भइया? ई इशारा रहैक फूल बाबूक स्त्री दिस। हुनका फूल बाबू नइहर मे छोड़ि देने रहथिन।

अपने आसरम मे वइरागिक जीवन बिता रहल छलाह। फूल बाबू हुनका लोकनि कें कहलखिन आहाँ लोकनि कहिना अलगटप्पू मारइत छी। ई हमरा घर सँ नहि पीतीक ओइठाम मे आएल अछि। हुनके लोकनिक चहिया छैन्ह।

एक दोसर बाबू हँसइत कहलखिन—तऽ आहाँक बारते कोनो दीयर दुलहिन ठीक होइत अछि अइ पर सब बाबू भऽभाऽ कऽ हँसि पड़लाह।

आगाँ मे पुरइनक पात परसल जा चुकल छलइक। पानि भरि-भरि कऽ गिलास राखल जा चुकल छलइक। बाबाजी महाराज आब भात परसैत रहथि। हम देखल जे उज्जर धोआएल खद्दरक कपड़ा पहिरने चिक्कन चुन-मुन नेहरा-मोहरा वला ओइ बाबू लोकनिक सोफा मे भनभिया करँकुल जकाँ लगइत छलइक। बड़ पातर टाँग, नाम पेट, धँसल आँखि आ डाँड़ मे मइल धोती लपेटने रहे। जनक सेहो मइल रहैक। छातीक हड्डी देखाइत छलइक।

हम सोचल जे देस सँ अंगरेज बहादुर, चलि गेलइ तऽ फेर इऐह बाबू भइया लोकनि अफसर बनताह आ तखन अइ बाबाजी महाराजक सेहो उद्धार भऽ जेतनि। हिनका हड्डी पर मासुन चढ़तनि आ चेहरा पर चिक्कनई अएतनि। बूढ़ सुगा भऽ गेलापर पढ़ि-गुन तऽ ई की सकताह मुदा बाँकी आराम सुभीता हिनको भेटतइन। सोराज भेला पर कि हेतइक? इ बात पटना मे एक बेर हम महेन बाबू सँ पुछने रहियनि। ओ कि जबाब देने छलाह भइया ते कि कहिअ? महेन बाबू इएह कहने छलाह जे सोराज भेला पर सभक दिन फिरतइक, सभक भाग चमकतइक। हमरो, तोरो।

पात पर भात परसल गेलैक। पीतरक बाटी मे राहरिक दालि। बिना मिरचाइक आलूक तरकारी छलैक। एक-एक फाँक पियाज भेटल छल। बाबू लोकनि भोजनक समय बजैत-बतियाइत रहलाह। हमर तऽ मोने ठीक नइ

रहे, कोनो तरहें दस कौर मारि लेलहुँ आ हाथ रोकि कऽ बैस गेलहुँ। देखल, केओ पात मे दँड नहि छोड़ने रहथि। जठैत बेर पात कें लपेटि कऽ सब केओ बाहर बहरेलाह आ एक नमहर डाकी मे राखि देलखिन। हाथ मुँह धोवाक हेतु कोनो खास जगह नइ छलैक, पैघ मैदान रहैक।

फूल बाबू आ हम खाकऽ ओही कोठली मे अयलहुँ। फूल बाबू बिना ओछाइनेके खाट पर ओंघरा गेला आ हमरो बैसऽ लेल कहलनि। फूल बाबू कें सुपारीक कतरा आ दछिनी खैनाक शौक रहैन मुदा अइ आश्रम मे आएला पर तऽ ओ इहो छोड़ि देने रहथि। एमहर-ओमहर आँखि मारि कऽ कुटी मे हम देखल तऽ चूहो नजरि नहि आएल, हँ खराम अवश्य रहैन। तखन हमरा फूल बाबूक पटनावला जीवन मोन पड़ल। किसिम-किसिमक गंजी, कमीज, कुरता, पाँच-पाँच, छौ-छौ कोट, तीन तीन जोड़ जूता, चारि-चारि जोड़ धोती, दू तौलिया, दू छोट अंगपोछा, दूध सन धोआ सुन्नर मसहरी, ओछाइन मे गवालवला उज्जर कम्मल, सुन्नर सतरंजी, तोसक, वलीच, तीन गो तोसका। हमर फूल बाबू राजा जकाँ रहैत छलाह, आब फकीर भऽ गेलाह अछि। मोन मे बड़ कचोट भेल। मुदा संगी-संग सभों से हो बड़ऽ लागल।

कनी काल बाद फूल बाबू पुछलनि जे कियाक अएलह अछि। फेर तऽ हम एक-एकटा कऽ सब बात कहि देलियनि। अंत मे पुछलियनि—छोटका मालिक थाना मे रिपोट कऽ देलखिन अछि, हमरा ऊपर चोरीक अपराध लगौलनि अछि। दरोगा तऽ नइ मानतैक। की तऽ घूस लेतै वा बात के आगा बढ़ा देतैक। अइ सँ हमरा छुटकारा कोना हैत?

एतेक बात सुनियो लेला पर फूल बाबूक मुँह सँ एको आखर नहि फुट-लनि। हमरा सब बात के ओ पीबि गेलाह। हम सोचल जे छोटका मालिक हिनकर फूफा लगैत छथिन, इ यदि सिपारिस कऽ देताह तऽ छोटका मालि-

कक मोन ठंढा भ जएतैन। थाना मे जे गाद मालिक रिपोट कऽ देलखीन अछि से शांति खतम भऽ जाएत। फूल बाबू पुर्जी कीनि कऽ हमरा दऽ देताह अथवा कोनो दोसर आदमी के मालिकक ओइ ठाम पठौथीन। कहुना हो, काज तऽ हमर भइए जायत। मुदा फूल बाबू तऽ अगम कुँआ बनि गेलाह, जाइ मे तकलो सँ लोक कें डर लगैत छैक।

हम सोचल जे आइ बाबू सोचि-साचि कऽ कोनो बात कहताह। मोर मे जखन हम जाए लागब तऽ कोनो पुर्जी जरूर देताह। हम बहुत बात सोचने रही। यदि फूल बाबूक इच्छा हेतैन तऽ हम मात पुश्तक अपन डीह छोड़ि कऽ हुनके गुलामी करब। फूल बाबूक मोन हेतैन तऽ रेवनीक गोना जल्दी कराकऽ माएक संग हम पटना चलि जाएब, ओतऽ रिक्सा खींच कऽ वा दीघा घाट पर जहाजक माल ढो कऽ माएक आ अपन जिनगी गुदस्त करब। नइ जौं फूल बाबूक एहन राय हेतैन कि कटिहार, सिलीगुड़ी वा जलपाई गुड़ी जाकऽ जंगल मे मजूरी करी तऽ ओहो करब। एहि तरहक बहुत बात सोचि कऽ हम आसरम पहुँचल रही। हमरा इहो भरोसा रहै कि फूल बाबू जखन गाँधी महतमा के चेला बनि गेलाह अछि तऽ हमरा मालिक के एहि जोर जुलुमक बास्ते ओ दु बात जरूर कहथीन। गाँधी महतमा नइ बड़ा लाट सँ डेराइत छथि नइ छोटा लाट सँ, नइ सरकार सँ आ नइ अमला सँ। गरीबक पच्छ लैत छथीन। फूल बाबूक सोही गाँधी महतमाक चेला भऽ हमरा वास्ते कि एतबो नहि करताह, कि अपना फूफा-फूफी के कने बुझा देथीन? ओइ दिन फेर फूल बाबू हमरा सोझा मे मुँह नइ फोललनि। हम बड़ी काल तक सूतल रहलहुँ। जेठक मास रहैक। आसरम एक बड़का कलमबागक बीच मे रहला सँ ठंढा रहैक। कुटीक बाहर ओसारा मे एक सीसलपाटी पड़ल छलैक, टूट-फूटल सन। ओइ पर हम चित भऽ कऽ जे

पड़लहुँ से तखने निन टूटल जखन गोसैंयाँ लुकझुक करैत रहथि, साँझ होबई बला छलैक।

आँखि मलैत उठलहुँ आ फूल बाबूक कुटीक नजदीक पहुँचलहुँ। भिजिर पड़ल रहैक आ दुनू दरबाजा बन्द रहैक। हम कोठली फाँकिकऽ भीतर नइ गेलहुँ, एमहर ओमहर घूमैत रहलहुँ। एतेक मे फेर घंटी बजलैक। ई की छैक? देखल जे एक चौमुहाँ दलान मे बाबू भैया सोकनि जमा भऽ रहल छथि। हमहू ओम्हरे गेलहुँ।

दरबाजा नम्हर नइ रहैक। मुदा ओकरा दलान नइ कहि मंडप कही तऽ बढ़िया। चौकोर मंडप, डाँड़ भरि ऊँच। ऊपर चढ़बाक लेल चारि ईंट राखि कऽ सोझ सीढ़ी बनल रहैक। खजूरक पातक बनल बड़कीटा सीतल-पाटी ओछाएल रहैक, हाँसुक रूप मे लोक सब बैस गेलाह। सब बाबू भैया रहथि। हमर छोटकी मलिकाइन सन चेहरा-मोहरावाली एक स्त्रीगन सेहो रहथिन। पच्छिम दिस कमलक एक चितकाबर आसनी राखल रहैक। ओइ पर उधर धमिरचला धोती धारी एक बाबू बैस गेलाह। एकर बाद सब एक अवाज मे श्लोक पढ़ऽ लगलाह। हमर हिम्मत नइ भेल जे मंडप मे जाकऽ बैसी। नीचे फराक ठाढ़ रहलहुँ। कनीकालक बाद ओ महिला भजन गाबऽ लगलीह। बाकी बाबू-भैया ओकर गाओल पद के दोहराबए लगलाह।

अधिक किछु नहि बुझलोपर एतेक तऽ हम बुझिए गेलहुँ जे गाँधी महतमाक पूजा पाठक इएह तरीका छैन्ह। हमर फूलबाबू सेहो मगन भऽ कऽ भजन गबैत रहथि। आशा छल जे राति मे भोजनक उपरान्त फूलबाबू किछु बजताह। मुदा नइ बजलाह, तऽ कहमछा कऽ आ कनी नरमी सँ हम-पुछलियैन—सरकार हमर निस्तार कैना हेतै?

अइपर कनीकाल चुप रहिकऽ फूल बाबू बजलाह—हमरा तऽ आब गाँव-

घर स कोनो सम्बन्ध नइ रहल। माए आ बाबूजी आब सेहो हमरा सँ हारि मानि लेलेन अछि। पहिने चिट्ठी लीखिकऽ बात-विचार पूछैत छलाह। अखन हमरा दिल सँ बरोबरि जे उदासी देखलनि तऽ आब ओइतरहक बात चिट्ठी मे नइ लिखैत छथि। पीसीक ओइठाम हम दू बरख सँ नइ गेलहुं अछि। पीसा सँ भेंटकएला हमरा तीन बरख भऽ गेल। बालचन, आब तोहीं कहऽ जे एहना हालत मे हमरा कोनो बातक तोरा मालिक पर कतेक प्रभाव पड़तेन।

अन्हरिया राति रहैक। बांसक कुटी सँ खोंकऽ खखारक आवाज उठैक तऽ पहिल रातिक इत्तुक निर्जनता फाटि जाइत छलैक। आसपासक गाँव सँ कुकुरक भुकनाइ साफ-साफ सुनाइत छलैक। राति अधिक नहि डेढ़ पहर बीतल हेतैक। मुदा आसरम मे रहऽवलाक लेल दिन मे सुतनाइ मना रहैक। नींदक झोंक सँ गरमी दिन मे आसरमक बाबू-भैया कोनो मोरचा लेत छलाह? जनैत छह भैया? कोनो-कोनो सोराजी बाबू जरला नहाकऽ दुपहरिया चितबैत छलाह कोनो बाबू बड़का ओसारा पर टहलि-घूमिकऽ अपन नींन पचबैत छलाह। कोनो कोनो बाबू दू-तीन गोटे मिलिका गीता व रमाएन लऽ बैसैत छलाह। एगो बाबू एहन रहथि कि छोट-छोट शीशी मे सँ दबाइक सरिसबा दाना निकालथि आ गनि-गनि कऽ ओही शीशी मे फेर ओही दाना केँ रखैत जाथि। इहो आलस भगेबाक एक उपाय छलैक।

माने ई कि दिन भरि सूतऽ पर आसरम मे बड़ कठिन पहरा रहै। ओही सँ साँझ-सकाले बाबू भैया लोकनि भोजन कऽ कऽ अपन-अपन ओछैन पर ढेर भऽ जाइत छलाह। भोरे एकदम अन्हरोखे घंटी बजै आ उठनाइ जरूरी भऽ जाइक।

हम सोचल जे अखन मालिक के सुतऽ देबाक चाही, भोर भेलापर बाकी गप्प करब। मुदा फूलबाबू स्वऽ इ कहिकऽ बात खतम कऽ देलैन जे ई तऽ तोहर आ गामक झगड़ा छोक, बहिया-महतो केँ। एकर निपटारा सेहो तोहीं दुनू गोटे, कऽ लेबे। अइ मे हमर कोनो जरूरति नहि। ओना कऽ अपन मालिके के हाथ पैर पकड़। ओ तोरा माफ कऽ देथुन। फूलबाबू सँ हमरा अइ बातक उमीद नइ छल। भरोसा रहए जे ओ हमरा बचाबक कोनो ने कोनो रस्ता जरूर निकालताह।

केहन धोखा मे हम पड़ल रही। हमर सब मोह क्षणभरि मे टूटि गेल। साफ-साफ बुझाए लागल जे बाबू भैया लोकनि ओतबे कालतक हमरा लोकनिक पक्ष लेताह जाबत तक हुनका लोकनिक अपन मतलब रहतैन। देखह ने फूलबाबू एक छोटका पुरजी अपना पीसाक नाँव सँ हमरा द दीतथि तऽ अइमे हुनकर महातम कि बिगरि जैतनि। अन्हार छलैक सुझैत नहि छल। मुदा हमरा साफ साफ बुझऽ मे आएल जे फूल बाबूक माथा भारी भऽ गेलैन अछि आ गेरुआ पर एक दिस घुड़कि गेलैन अछि। भैया! हो भैया! पीसा आ सरबेटाक सम्बन्ध बाप बेटाक सम्बन्ध बूझह। अइ सम्बन्ध मे ओइ छोटका पुरजी कऽ खरोच नइ पड़ि जैतनि। सोराजी भऽ गेल छलाह तैं कि, छलाहता आखिर बाबुए-भैया ने! गरीब-दुखियाक दुःख ई लोकनि की बुझथिन।

सच बूझहुन भाई तखन हमरा मोन मे ई बात बैस गेल जे जेना अंगरेज बहादुर सँ सोराज लेबाक हेतु बाबू भैया लोकनि एक भऽ रहल छथि, हल्ला-गुल्ला आऽ झगड़ा झंझट मचा रहल छथि ओहिना जन बनिहार, कुली-मजूर आ बहिया खबास केँ अपना हकक लेल बाबू भैया सँ लड़ऽ पड़तैक।

फूलबाबू सँ कनिओ भरोसा नइ रहल। कनीकाल अन्हार मे हम

बसल रहलहुँ। फेर बाहर आ कऽ ओसारा आ ओहि टूटल पटिया दिस बढ़लहुँ। निपट अन्हार छलैक। पैर सँ टटोरिकऽ पटिया भेटल आ ओइ पर पड़ि रहलहुँ। ओइ के बाद कखन नीन आबि गेल आ केना भोर भऽ गेलैक से बूझऽ मे नहि आएल।

आँखि मलिकऽ चठलहुँ आ फूल बाबूक कोठली दिस गेलहुं तऽ देखल जे जिंजिर चढ़ल छैक। केवार बन्द रहैक। बाबू नहाए गेल हेताह हमहू पोखरि दिस बढ़लहुं। एतए कनेक आसरमक विषय मे तोरा लोकनि कें कहि दैत छिअइ।

ई आसरम दस बीघा जमीनक हाता मे पसरल छलैक। लाकिन बरहमपुरा, थाना लहेरियासराय जिला दरिभंगा। अहठामक बहुत बड़का जमींदार बाबू शुभंकर भुँइहार खनदान के रहथि। नीक जमींदार मे हुनकर गनती रहैन। अस्सी-नब्बे हजारक मलगुजारी असूल होनि। डेढ़ हजार बीघा धनहर खेत अपना जोत मे रहैन। बीजू आ कलमी आम बाग पचासो बीघा मे छलैन। केरबनी, खढ़ौर सब रहैन। गाय, बरद घोड़ा आ महींसक चरऽ जोगर पचासो बीघा जंगल रहैन। आठ-दस छोट नमहर पोखरि रहनि। गुमश्ता, बराहिल, अमला-फमला, नोकर-चाकर देवान जी मुनशी जी सब रहैन।

बूढ़ा मालिक इलाका भरि मे राजा बाबू कहाइत छलाह। दूटा बेटा रहैन। एक हीराजी, आ दोसर मानिकजी। हीराजीक दोसर नाँव छलैन, किशुन बल्लभ, नारायण ठाकुर मानिक बाबूक नाँव छलैन राधा बल्लभ नारायण ठाकुर।

मानिक जी पढ़ऽ मे बड़ा तेज रहथि। कलकत्ता मे रहि कऽ बी० ए० तक पढ़ने छलाह। ओकरा बाद गाँधी जीक लहरि मे हमरा फूलबाबू जकाँ

मानिक जी सेहो बहि गेलाह। जज-बालिस्टर नइ बनि कऽ अपना जिलाक नेता बनि गेलाह। अपन दरबारी नाँव मानिक जी छोड़िकऽ आे लोकै राधा बाबू कहथैत छलाह। बड़ा पक्का कांग्रेसी छलाह। एहन पक्का कि बाप आ बड़का भाइ सँ झगड़ा कऽ कऽ आसरमक लेल एतेक टा अहाता ओ दफानि नेने छलाह। वैह ओइ आसरमक सर्व-सर्वा रहथि। हुनका पार्टी सोराजी बाबू लोकनिक एक छोट पलटैन रहैन। शुरू-शुरू मे हिनकर शाहखर्ची अइ जिला मे गाँधी महतमाक काज आगा बढ़ाबऽ मे काफी मददि कैलकैक। तकरा बाद बाप आ बड़का भाई इस्टेट सऽ एको पैसा देनाइ रोकि देलखीन। अइ सँ नाराज भए राधा बाबू घरक लोक सब सँ असहयोग कऽ देलनि। असहयोग कि होइत छैक भाई?

गाँधी महतमा ई तरीका निकालने रहथि जे शत्रु यदि बली हो तऽ तोँ लाठी सँ ओकर मुकाबिला नइ कऽ सकैत छहक, ई ओकरा सँ बजनाइ-भुकनाइ बन्द कऽ दे ओकरा कोनो काज मे मददि नहि पहुँचाबह, शत्रु दच्छिन दिस मुँह कऽ कऽ ठाढ़ रहैतऽ तो मुंह फेरि कऽ उत्तर दिस कऽ लऽ। सहयोग क अर्थ होइत छैक, संग देनाइ, संग मे जुटि गेनाइ।

से भैया राधा बाबू अपना घरक लोक सब सँ असहयोग कऽ देने रहथीन। एतेकतक कि हुनकर बालबच्चा तक मानिक मे रहैत-रहैथ। हुनकर स्त्री अपना नइहर मे रहऽ लगलैन। भगवानक परताप सँ ससुर सेहो हुनक बड़का भारी जमीन्दार रहैन। आ भैया, राजा अपना बाल-बच्चाक बिआह रजे-खनदान मे करैत अछि। राधा बाबू कें नगद पचास हजार तिलक चढ़ल रहैन। हाथी, घोड़ा, पालकी, खवास, वसीन-जजात सब दहेज मे भेटल रहैन। राधा बाबू जखन सोराजी बनला तऽ हुनका बाल बच्चा के सम्हारऽ मे ससुरक धन बहुत मददि कैलकैन। जिला भरि मे दु-तीन बाव भैया अपना

अपना स्त्री कें परदा सँ बाहर निकालने छलाह। ओहि मे सँ एक छलाह राधा बाबू। बूढ़ा मालिक जखन अपना पुतोहुक बेपर्दगीक विषय मे सुनलैन तऽ हुनकर दिमाग पथरा गेलैन। आँखि चोन्हिया गेलैन। ओ राधा बाबू कें कड़ा पठौलखीन जे ड्योढ़ीक अन्दर पैर नहि राखए। बादे सँ असहयोग शुरू भेल रहैक, बेटा असहयोगक अंत कऽ देलकैन। राधाबाबूक माए मरलैन तैयो ओ घरक लोक के संग नहि देलखीन। लोक सब कहैत छलैन जे राधा बाबू अकरी नास्तिक भऽ गेलाह अछि। माएके मरला पर ने केश कटौलनि आ ने अशौच मानलैन। आनरमक सब काज पहिने जकाँ करैत रहलाह। जखन हुनकर माए मरल रहैन तखन थाना मधेपुर आ फुलपरासक दिस बड़ जोर बाढ़ि आएल रहैक। आदमी-जन, माल-मवेशी सभक बड़ खराब दशा भऽ गेल छलैक। राधा बाबू चारि टा डेंगी कऽ कऽ ओहि इलाका मे अपना संगीक संग रिलीफक काज कऽ रहल रहथि।

साँझ कऽ मंडप मे फराक आसनी पर जे बाबू बैस कऽ पूजा-पाठ करैत रहथि आ पाछाँ मगन भऽ कऽ भजन गबथि सैह राधा रहथि। पोखरि दिस जएबा काल मे ओही राधा बाबू सँ हमर भेंट भऽ गेल। रुकि कऽ पुछलनि —धानुक छें कि ग्वार। ग्वार छी सरकार—हम कहलिऐन। ओ चारि डेग आगाँ बढ़ि अएलाह। हम गरदनि टेढ़ कऽ कऽ हुनका दिस देखैत रहलहुँ। एकाएक रुकि कऽ राधा बाबू पाछाँ सँ हमरा दिस देखैत रहलाह आ कहलनि —आसरम मे रहबे? तोरा अपना संग रखबौ, किछु पढ़िओ लीखि जएबे। दस-पाँच रुपैया ऊपर सँ दऽ देबौ, घर पठा देल करिहे। हम किछु कहलि-ऐन नहि। एकदम गुम-सुम रहि गेलहुँ। आँगुर सँ आँगुर पकरक चेष्टा करैत रही।

राधा बाबू एकदम लगीच आबि हमरा कन्हा पर अपन हाथ रखलैन

तऽ बड़ नीक लागल। नहा कऽ आएल रहथि; हथेली ठेनाल भऽ गेल छलैन। हम धुरि कऽ उठल छलहुँ। राति भरिक गरमी देहपर पसरैत छल। कन्हा पर हुनकर ठंडा हाथ हमरा बड़ नीक लगैत छल। एक नजरि हुनका दिस देखि कऽ फेर हम अपन पपनी नीचा खसा लेलहुँ।

की बात छौ—बाबू पुछलनि। हम फेर चुपे रहलहुँ। आब आर लग मे आबि कऽ ओ हमर ठुड्डी उठौलनि। लाज आ झिझक सँ भरल हमरा आँखि मे अपन आँखि दैत ओ बजलाह—नहि रहबे आसरम मे?

माथ हिला कऽ जखन हम हँ कहलिऐन तऽ ओ छोड़ि देलन। फेर कहलैन जे हम फूल बाबू सँ बात कऽ लेब।

हम पोखरिक भीड़ पर पहुँचलहुँ। दूपुस्त पुरान पोखरि छलैक। हरियर कचोर पानि। चारू दिस सिमिटक पक्का घाट। भीड़ पर तीन दिस कलमी आमक गाछ, एक दिस शीशोक सुन्दर पाँती देखि कऽ किछु काल तक ओही ठाम मोन गड़ल रहल। भीड़ सँ नीचा उतरि कऽ खेत मे दीसा फिरलहुँ आ पोखरिक एक कोन मे जतऽ पैरक चेन्ह बनल छलैक आबि कऽ शौच कएलहुँ। पक्का घाट पर आबि कऽ हाथ मटिआएलहुँ। आमक पल्लव तोड़ि कऽ दातमनि कएलहुँ' ओकरा चीर कऽ जिभिया बनौलहुँ आ जीह कें साफ कएलहुँ।

कपड़ा हमरा मामूलिए छल। आठ हाथक मैल पुरान धोती छल। देह पर गंजी आ दू हाथक अंगपोछा। धोती फेरि कऽ पहिरऽ लेल राखि लेलहुँ। डराडोरि मे अंगपोछा कें बान्हि डाँड़ मे लपेटि कऽ पोखरि मे नहाय लेल उतरलहुँ। कहबी छै, 'आन गामक पोखरि आ अपना गामक गाछी,' डेराओन होइत छैक। हमरो पानि मे जाइत किछु डर भेल। मुदा हम हेलऽ तऽ जनिते छलहुँ तखन डर कथी के? ई ओह नमहर पोखरि वा झील मे अवश्य डरबाक चाही, जइ मे, गोहि, घोंच, घरियाल, सौंस आ बड़का-बड़का रहु,

सुन्ना आ भाकुर माछ रहैत छैक। ई गाँव धारक कात नइ छैक, से सँ अइ पोखरि मे गोहि घड़ियाल भइए नइ सकैत छैक, से निश्चिन्त भऽ कऽ बड़ी काल तक पानि मे बोहियाइत रहलहुँ। हेलनाइ आ बोहिएनाइ दू फराक बात छैक भैया। हाथ-पैर मारैत जाइ तऽ हेलनाइ भेलइ। एना बेसीकाल अथाह पानि मे फैल जाइत छैक। गरमीक दिन मे अधिक काल तक हरा-थटक मजा लेबाक हेतु लोक थाह पानि मे पड़ल रहैत अछि। सउँसे धर पानि मे रहैत छैक आ माथ ऊपर। एकरे बोहियेनाइ कहैत छैक। बुझलहु भैया।

मोन जखन तिरपित भऽ गेल आ देह हेमाल भऽ गेल तखन बाहर भेलहुँ। जल्दी-जल्दी धोती पहीर कऽ अंगपोछा खिचलहुँ आ ऊपर अएलहुँ।

हमरा तऽ डोइत छल जे आसरम मे रहि जाइ, मुदा माए बहिन के थोड़ दशा मे छोड़ि देनाइ खराब बुझाइत छल। दोसर बात ई रहैक जे छोटका मालिक थाना मे चोरी के रिपोट कऽ देने रहथीन। हमरा बुझाइत छल जे चारि छौ मास जेल मे सजाए भोगऽ पड़त।

नहैला सँ देह तऽ ठंढा भेल मुदा मोन के फिकिर फेर गरमावऽ लागल। भारिए पैर लऽ कऽ हम आसरम घुरलहुँ, आ फूल बाबूक कोठलीक भीतर अएलहुँ। ओ पिनसिल सँ किछु लिखैत छलाह। हमरा हुँकारी भरि कऽ इशारा कएलनि जे ढंग मे थाचिकऽ बैस जो। हम बैस गेलहुँ। लिखनाइ समाप्त कऽ कऽ बजलाह—राधाबाबू हमरा तोरा विषय मे कहैत छलाह। ओ तोरा अपना संग राखऽ चाहैत छथुन। किथाक ने रहि जाइत छे?

हम कहऽलियैन हमर गरदनि तऽ फँसल अछि—जहल हैत कि जुरमाना के जाने। बाबू कहलनि किछु नइ हैतौ, तोँ राधा बाबू के संगे रहि जो। सब बात ठीक कऽ लेल जएतैक।

हमरा बड़ा अजगुत लागल कोना सब बात ठीक कऽ लेल जएतैक। कोना केओ छोटका मालिक पर अंकुश देतैक। फेर मोने मोन हम ई तय कएलहुँ-जे होने हो राधा बाबू फूल बाबू सँ सब बात नइ तऽ किछु बात अवश्ये बुझि लेने हेताह आ तेँ कोनो ब्योंत लगौलाह। नहि तऽ फूल बाबू सँ कि हैतैन? ई तऽ अपने भारी दब्बू छथि।

बातो इएह रहैक भैया! राधा बाबू नामी सोराजी रहथि। हमरा थोइटामक बड़का मालिक सँ राधा बाबू के कोनो सम्बन्ध सेहो छलैन। ओ एक चिट्ठी बड़का मालिकक बेटाक नाँव पठौलखीन आ दोसर चिट्ठी दरोगा-जीक नाँव। दरोगाजी एक बेर एस० पी० आँखि सँ राधे बाबूक बदौलत बाचल छलाह तहिया सँ दरोगाक दिलमे राधा बाबूक लेल बहुत सम्मान भऽ गेल छलैन। कहबाक मतलब ई थीक जे हमर मामला समाप्त भऽ गेल। सजाए-तजाए नहि भेल आ ने जरिवाना भेल। बात जहैं-तहैं दबि गेलैक। छोटका मालिक अइ के बाद गाँव सँ चलि गेलाह।

छोटका मालिकक ई करनी चोरैल नइ रहि सकलनि। हमरा बहिन पर जे ओ हमला कैने रहथीन से बात सहै-सहै सउँसे गाँव मे फैल गेलैक। बाबू-भैया लोकनि भीतरे-भीतर एक दोसरा पर सह चलबैत रहैत छथीन। समाजी शत्रुता बड़ खतरनाक होइत छइक। हमरो मालिक सब मे आपसक दाब पेंच खूब चलइन। एक दोसरक कमजोरीक नफा उठावऽ मे बाबू भइया अपन सब बुद्धि लगा दैत रहथि। कहबी छैक जे सतरंज खेलऽबला के बागाक दस चालि सोचिकऽ राखि देबऽ पड़ैत छैक। बाबू भैया लोकनि अपना मे एक दोसरके मात करबाक हेतु सतरंजे जकाँ शह पर शह सोचैत रहैत छथि।

से जखन छोटकामालिक पर मलिकानक छोटका-बड़काबाबू लोकनि नाक भौं सिकोड़ऽ लगलाह तऽ दुरंत गाँव सँ चलिए जाय मे अपन नीक बुझए-

लैन। रेवती, हमर माए आ हमरा पर जे खीफ रहैन तकरा ओ घुगता कS ओनक कोनो गाँठ मे बान्हि लेलैन आ कलकत्ता दिस चलि गेलाह।

हम राधा बाबूक संगे रहS लगलहुँ। सब सँ पहिला काज ओ जे कएलनि से इ जे हमरा वास्ते ओ असमानी रंगक पैजामा सिया देलैन, खाकी रंगक हाफ कमीज आ उज्जर टोपी। सब खद्दरक जखन हम पहीर कS तैयार भेलहुँ तS कहलैन—केओ पूछौ तS ई नइ कहि अही जे आसरमक हम नोकर छी। पूछलियैन जे कि कहबैक ? तS कहलैन जे कहियही जे काँगरेसक भोलंटियर छी, बुझलें ? हम मथा हिला देलियनि। आब फूल बाबू सँ हमर कोनो लागि-भागि नइ रहल। रधे बाबू हमर मालिक छलाह।

हमर उमेर सतरह पार करैत रहे। मोछक पम्ही आबि रहल छल। देखS मे सुन्दर नहि छलहुँ तS खराबो नइ छलहुँ। कहिए देने छियइ जे हमर बाप दाब बढ़िया काठीक मजगूत लोक छलाह। छाती चाकर, बिल्कुल कपार, विशाल चेहरा हाथ पर लटकल बाला। हमर माए सेहो पिण्डश्याम जरूर छल, मुदा चेहरा मोहरा, ढाँचा-ढौंचा बड़ नीक रहैक। छोटे उमिर के हम रही तखने बाबू मरि गेलाह। घर पर कष्टक पहाड़ खसि पड़ला सँ हमर गिरस्ती चौपट भS गेल छल। दादी आ माए नइ जानि कतेक कठिन सँ पालि-पोसि कS हमरा दुनू भाई बहिन के नमहर कएने छल। नइ जानी कतेक पेट मोर सँ हमर बचपन पटाओल गेल छल।

राधा बाबू आसरमक महंथ रहथि। बहुत पढ़ल-लीखल छलाह। भागलपुर कलकत्ता मे रहिकS अपन पढ़ाइ ओ पूरा कएने छलाह। पूरा कि कएने रहथि पार पहुँचनि किनारा के छोड़ि देने रहथि। थाड़े आर पढ़ितथि तS परफेसर भS जइतथि। धन-दौलत कें कोनो कमी तS रहैन नइ तS विलाइत सेहो जा सकैत छलाह आ बालिस्टर भS सकैत छलाह।

मुदा बीचे मे दिमागि बदलि गेलैन। लोक सब कहैत अछि जे बूढ़ा मालिक राधा बाबू सँ बड़ आशा रखने रहथि। ओ कहथीन जे मालिक जी कि तS कलट्टर बनता वा एस० डी० ओ० अइ सँ छोट हाकिम ओ कि हेताह ? फेर बूढ़ा मालिक ई सपनाइत रहैत छल हेताह जे मानिक जी कलट्टर बनि कS अइ जिला मे अएताह तS हमरा खनदानक कतेक रोब दाब बढ़ि जाएत। जिला भरिक बड़का-बड़का लोक सब मानिक जीक सोझा मे हाथ जोरि कS ठाढ़ हेताह। बड़का-बड़का बाबू लोकनि मानिक जी सँ हाथ मिलएबा मे अपन अपन अहोभाग्य बुझताह। खरोरे खानदानक भारी भारी राजा-राजकुमार आदर आ जतन सँ मानिक जी के भेंट-सौगात पठौथीन। महाराज सेहो मानिक जीक आदर सम्मान करथीन।

ई सब सोचैत-सोचैत राधा बाबूक बाप, बूढ़ा मालिक चौधरी शुभंकर ठाकुर एतेक मगन भइ जाइत छलाह कि कलट्टरक कलट्टरी बिलरिक हुनका वास्ते बपौती-विरासत जकाँ बुझाइत छलैन। कनिक सोचहु भैया कि राधा बाबू एकाएक पढ़ाई छोड़ि कS अपन वृद्ध पिताक आस-भरोस पर कतेक भारी बज्जर खसौलखीन ?

राधा बाबूक ससुर सेहो बड़का भारी जमींदार रहथीन। अपन जमाएक विषय मे ओहो बड़ पैघ आस लगौने छल हेताह से ओ बेचारा सेहो चित्तंग भS कS खसल हेताह। राधा बाबू डेढ़ सालक सजाए काटि आएल रहथि। पटना कम्प जेल मे हुनका राखल गेल रहैन। जखन महात्मा गाँधी के लाट बहादुर इरविन सँ सुलाह भS गेलैन तS देश भरिक सब जेल सँ कैदी सब कें छोड़ि देल गेलैक। फूल बाबू से तखने जेल सँ छूटि कS आएल छलाह। राधा बाबू सेहो ओही समय मे छूटल रहथि।

आसरम मे बाबू-भैया आ नोकर-चाकर मिला कS बीस आदमी रहथि।

महतमा जीक हुकुम नइ रहनि जे गोराजी लोकनि आसरम मे ककरो नोकर चाकर-बनाकऽ राखथि। तइयो आसरम मे हमारा लोकनि चारि आदमी रही से नोकरे रही कहऽके लेल भोलंटियर कहिलए, सेवक कहिलए, मुदा रही हम सब केओ नोकरे। एकगोटाक नाँव छलैक रुपलाल, दोसरक छट्टू, तेसर मंगल आ चारिम हम। रुपललबा, छटुआ, मंगला, बलचनमा। हम चारू भिन्न-भिन्न जातिक रही। रुपललबा धानुक रहे, छटुआ मलाह, मंगला पासी आ हम ग्वार। एगना बखोरक एक मिसर जी रहथि, ओ भानस बनाबक काज करथि।

मिसर जीकें खेनाई-पीनाई दऽ कऽ ऊपर सं बारह रुपैया भेटैन। हमर दरमाहा ठीक नइ रहे। कहियो सात, कहियो आठ आ कहियो दस। राधा बाबू मौजी जीव रहथि। हमरा ऊपर हुनकर सिनेहो बड्ड रहैन। खेनाई पिनाई, कपड़ा-लत्ता बढ़िया अकौं भेटै। अपन खास भोलंटियर बना कऽ ओ हमरा रखने छलाह। दूर मे जहाँ जाथि हमहूँसंग रहियनि। राधा बाबू कें हमर बड ध्यान रहैत छलैन। लोक सब हुनका देवता अकौं माननि। चढ़ावा हुनका जे भेटैन से थोड़-बहुत हमहू पाबि जाइ।

रुपललबा खेनाई छोड़िकऽ आठ रुपैया दरमाहा पाबे। छटुआ से हो आठ। मंगलाक दरमाहा छौ रुपैया रहैक।

रुपललबा आसरमक खेती-बारीक काज देखैक छटुआ लग पासक गाँव सं अन्न बटोरिकऽ लाबे। मंगला आसरमक चपरासी छल। झाड़ूदेनाई, घैल मे पानि भरि कऽ रखनाई, डाक लेनाई आ लऽ जेनाई, दुखित मरीजा पर बाबू भैया लोकनिक पथ पानि केनाई मंगलाक काज छलैक। एनातऽ राधा बाबू हमरा आसरम भरिक लोक सब सँ इएह कहने रहथीन जे हमरा छौ रुपैया महीना भेटत। मुदा देत काल बाबू सब बेर किछु अधिके देथि। एना

मिथैक होइक।

बात ई रहैक भैया जे राधा बाबू राजा खनदानक छलाह। पढ़ाई करबाक समय इस्टेटक रुपैया फूकैत रहथि आ आब पबलिकक। चन्दा आसरम मे खूब अबैक। केओ हुनका सं हिसाब लेबऽ वाला नइ रहनि। जेना इच्छा भेलैन तेना खर्च केलैन। हमरो ओही झोंक मे कहियो सात, कहियो आठ कहियो दस आ एकाध बेरतऽ बारह रुपैया हमरा हाथ मे ओ थम्हा देने छलाह। एकर अतिरिक्त मेला ठेला, हाट-बाजार, पाबनि-तिहार अवसर पर एकन्नी, दुअन्नी, चोअन्नी, अठन्नी दैत रहैत छलाह।

नवका मालिक सँ हमरा खूब पटै। फूल बाबूक दिस सं जे उदासी मोन कें घेरने रहै से आब फाटऽ लागल। आसरमक हवा-पानि, बाजब-भूकब रंग ढंग हमरा नीक लागे। एतए दू चारि बाब-भैया एहनो रहथि जे भीतर सं गरीबक दुःख दर्द बुझथिन। बातचीत मे हुनका मुँह सं मलिकाना गन्ध नइ अबनि। राधा बाबू से हो बहुत नरमी सं बजैत-बतियाइत रहथि। कखनों-कखनो नाक-भौं चढ़ाकऽ ओ अपन रोब अवश्य परगट करथि। मुदा हुनकर क्रोध आ नाराजी आसरमक लोक बास्ते ओहने रहैक जेना कोनो बढ़िया खनदान के ईमनदार मुखिया के होइत छैक।

५

हमरा जातिआ मे लोकक विआह लड़िकारिये मे होइ छैक। तइँ एकरा विआह की कहब, सगाइये कहब से ठीक होएत। छ बरीस के उमेरि मे हमर विआह भऽ गेलै। आर तऽ किछु मोन-तोन नहि अछि, मुदा बरिआती मे बाजा बजबै बला सभक मुंह नहि बिसरल अछि। बड़का गीरहथ सवारी ले पालकी मङनी देलैथ। हमरा लोक कनैलक फूल सँ सजि हमरा ओइ पर बैसा देलक। बरिआती मे दस बारह गोटे सँ गेल। पीरा धोती, हरिअर डोरिआक अंगा। माथ पर जरी बला टोपी। पैर खालिए। हमरा सबटा तऽ मोन नहि अछि मुदा केरा आर लाइ जे खाइ लेल देलक से खूब बढ़िआ जकाँ मोन अछि। पाकल-पाकल पिअर केरा की सनगर रहैक मुरहीक लड्डु कें हमरा बेरावरी मे जाइ कहै छै। बियाहक खातिर कै दिन धरि हमरा माए आ दाइ लें फराक रहऽ परल। किएक तँ हमर सासुर हमरा गाम सँ बारह कोस दूर छल। बरिआती मे हमरा सभ मे जनी-जाइत के तऽ जइये नहि जाइ छैक।

सुनऽ मे आएल अछि जे पच्छिम मर ई रेबाज छैक। एहेन छोट उमेर मे अइ सँ पहिने हम गाम घर सँ बाहर कहूँ ने गेल छलहुँ। हमर कनियाँ हएत तीन चारि बरिसक छल होएत। हम दूनू जनी एतेक ने छोट रही से भोज-भात बाजा-ताजा छोरि कऽ आओर किछु मोन-तोन कहाँ किछु अछि। हँ एहो

मोन अछि जे हम दूनू गोटे एके सवारी मे बैसऽ ओइ गामक मलिकान सभक ओतह बिलोकी माङऽ गेल रही। आइ तक हम तोरा अपना बियाह कऽ नहि कहलिओक मुदा आइ तऽ कहहि परल। सतरह बरखक उमेर हमर भऽ गेल। माय पछिले साल सँ कहैथे जे दुरागमन कऽ ले। से सोचि एही लेल हमर माए अपन बेटीक बिदागरी नहि करबइ छल। ओ सोचइ छल पहिने पुतहु लऽ आनी तखन बेटीक बिदागरी करी।

ई तऽ बीच मे गीरहथ सँ झगड़ा भऽ गेल तइ दुआरे गौना रुकि गेल ने तऽ भऽ गेल रहिते। बियाह आर दूरागमन के बीचक दिन हमरा खेलए के दिन छल; एहि बीच कहिओ सासुर नहि गेलौं। सँ दुरागमन पहिने हमरा सभ मे जेबाक रीति नहि छै। हमरा सभक बियाहक बड़का जाति सभ सँ अलगे रीति छैक। एक ई जे बौना जनउ बेगे हुनका लोकनि मे बियाह नहि होइ छैन। दोसर इ जे बियाह दूरागमनक बीच मे ओ सब सासुर जाइछथि। मतलब ई जे माए के जोर देबऽ सँ हमरा गवना करय लय तैआर होअ परल। छोटकी गीरहथनी माए के बोल भरोस देलखिन। गीरहथ गीरहथनी सँ डेराथि आ हमरा बहीनक मामला सँ तऽ गीरहथ बाबू अपना जनाना के मुंह देखबहि ने चाहथि किएक तऽ देखबऽ जोग नहि रहि गेलाह। बहुत दिन तक चोट्टी पतरी बन्न छल बहुत दिन तऽ मालिक घरो नहि अएला।

गीरहथ बाबू कें नहि रहला सँ गिरहथनी के किछु बीगरै नहि। ओ तऽ अपने सात मनताक एक मनसा छली। जरूरति परला पर हुनकर भाइयो घोड़ापर चढ़ि कऽ पहुँचि जाइ छलैन्ह। हरवाह चरवाह रहैन खेती मे रातिदिन खटैलै बनिहारक कमी नहि रहैन। खानदानी रोबदाब रहैन। सोना के टकरा सनसेकरो बिघा खेत छलैन्ह। बाग बगीचा, गाछी बिरछी, झार झंखार, पोखरि

इनार कथुक कमी नहि । चारि ओरी बरद रहैन । गुजराती महींस । छोटकी मलिकाइन घर गृहस्तीक इन्तिजाम खूब बढ़ियाँ रखै छलीह । ई गुन नहिरैक छलैन । फूल बाबूक बापो बड़ चलाक गीरहथ रहथिन । ऐंध घरक जनाना बर अकिलमन्ती होइ छै । कहियो चौखटि सँ बाहर पैर नहि रखै छलथिन । सद्गुर मैंसूर, मरारी, पुजारी, मुंशी जी, देवानजी, कर्मचारी ककरो सँ ओ बातलऽ नहि करैत छलखिन । की खवासनी सँ कहबीतैथ मेलऽ देवाल खानक ओठ सँ अपने कहितैथ । कोनो काज छोटकी गीरहथनीक रुकल नहि रहितैक । गीरहथ रहौथ कि नहि मलिकोनो अपने घर चलबथि ।

ई स्त्रीगन बड़ चलाकि छल । लड़ाई कऽकऽ मेल सँ जेना होइतइ तेना अपन काज पूरा कऽये लीलइन । सच पूछी भाइ तऽ जँ ओ पुरुख रहीत त डेनबी साहेब सबक कान काटति ।

से हो भैया ! हमरा माए के नैंगानि के कोन अरी सुंघा देलकै । अपन बेइजति बिसरिकऽ हमर माए सोक मय गेल । दू मास आसरम मे रहलाक बाद हम माए सँ भेंट करय गेलहुं तऽ गीरहथनीक गुनगान करैत ओकर रोइयाँ-रोइयाँ लहरऽ लगलै । ओ कहए-एहिमे मलिकाइनक कोनो कसूर नइ छइन । ओतऽ एतऽ रहबो ने करथिन । हम कहलिऐक—मलिकिनिए कोनो कि देवता छथुन जकरा ओइ ठाम हमर निवाह नहि भेल ओकरा ओहिठाम तों रहै छँ तकर माने जे तों अपन थूक चटइ छँ ।

हमरा क्रोध मे देखि माय चुप भय गेल । थोड़े कालक बाद दुरागमनक चर्चा उठल । खर्चा कहाँ सँ आओत ।

माय बाजलि—भगवान कोनो उपाय करबे करथिन की ।

हमरा ई बुझल छल जे ताहि बातक जबाब माय के नहि फुराइ छइक ओहि मे ओ भगवानक नाम लइत अछि । ई ओकर पुरान आदति छइक ।

तइयो हम कहलिऐक—भगवान कहाँ सँ ओ उपाय करथिन । हम चोरी तऽ करब नहि डाका तऽ देब नहि । आगू पाछू तऽ किछो खोज खबरि लेबऽ बला नहि अछि । तखन फेर भगवान की करताह ?

एहि पर माय किछु नहि बाजलि । हमरा भेल एहि बेर माय मानत नहि । बिना पुतहु के देखने एकरा चैन कहाँ । आ आइ नहि कालिह, परसू नहि चारिम दिन, कहिओ तऽ दुरागमन करहि परत । ऐना तऽ नहि होएत जे आइ गरीबी अछि तऽ कालिह रुपया सँ मढ़ल घेल भेटि जाएत । एनातऽ नहि होएत जे आइ लैबाक उपाय नहि अछि आ कालिह कुबेरक भंडार भेटि जैत । गरीब गुरबाक बियाह दुरागमन साजबाज सँ नहि सादगीए सँ होइ छइ ।

इएह सब सोचति सोचति मोन मे संतोष भेल । राधा बाबू हमरा बुझऽ लागल छलाह तऽ सेहो फकीरे मुदा शाही फकीर । बड़का-बड़का महन्थ महात्मा पइघ-पइघ साधु बाबाजी दूध सन उज्जर मखमल सँ ओ झपने जे बैरागी महाराज रहै छथि से सब साहिए फकीर छथि । डाँर मे अंगपोछा सन चारि हाथक कपड़ा बान्हय बला मे एक आध नेता देखाइ दैत छथि से हो फकीर छथि । शाही फकीरक लीला अपार होइ छइ । ई जँ कनिको कोप करताह तऽ भगवान जानथि आर कहैत छी जे ओ अहाँक सातो पुरखा के उद्धार कऽ देताह ।

हमर राधाबाबू सेहो अपन राजकाज छोड़िकऽ सोराजी (कांग्रेसी) बनि गेलाह परंन्तु हुनकर मुट्ठी खूजल छइन एखनो कहियो ओ हमरा गनि कऽ रुपया पैसा नहि देलथि । जहिआ देलहुन तहिया जेबी मे हाथ दइत जे आबिजाइन दऽ देथि । हमई पहिने कहि चुकल छी जे ई गांधी महतमाक जमाना छलैन्ह । जाहि दिन ओ जमाना रहै कांग्रेसी भइया क छाँहो देवता बर्कों डुकाइक । जकहि पैर पड़ि जाइन ओतहि चबूतरा बनि जएतैक । ई जाहि दिस

ताकि देताइ ओहि दिन जैजैकार भऽ जैत।

एहन नेनाक संग हमरो भाग चमकि गेल। आहो भइया। जइन एहन बात रहैक तहन हमरा फिकिरे कथिक? लोच संकोच केहन? मोन खुशी सँ नाचि उठल हम गीरह बान्हि लेलहुँ जे दुरागमन करबे करब।

दोसर दिन माय के पूछलियैक—दिन तिन तकबेने छहिन? ओ हरदि पीसि रहल छलि। लोढ़ी सिलौटक घिसिर घिसिर आवाज होइ छलइ तैंइओ पहिल बेर हमर बात नहि सुनि सकल दोसर बेर मे कनी जोर सँ कहलहुँ तऽ बीच मे माय लोढ़ी रोकि कहलक—तोहर मोन होअ तऽ दिन तिन तकाबऽ मे की लगतइक।

ककरा सँ पुछबही?

डीह टोल जाकऽ बड़ंदक बाबू सँ पुछबनि। नै तऽ अहिना हमरा टकइत रहै छैँ, कतेक दिन तक हमर मोन टोबे।

मायक गप्प सँ ई बूझि पड़ल जे ओ अपना समर्थ पुतोहु कें देखबालेल छटपटाइत अछि।

साधारण जिनगी मे हेर-फेर के नहि चाहत? यदि बारहो महीना जाड़े रहै तऽ ककरो नीक लगतै? आ तहिना जौं भोर-साँझ नहि होइ सदिखन लेठक दुपहरियाक रौदे रहै तऽ केहन लगतैक, मनुखक जिनगी? कहबाक अर्थ ई जे मनुखखक जीनगीक गप्पे कोन समूचा संसार आइ परिवरतने पर चलै छै। परिवरतनक पहिया सदिखन चलिते रहै छै।

हमरा तैयार होमय पड़ल। हमरा द्विरागमन दऽ सुनि माय खूब खुशी भऽ गेल।

आसिनक मास छलै। ओहि बरख भदइ खूब भेल छलै। आठ मन मड़ुआ अपना बटाइ बाला खेत मे सेहो भेल छल। दू अढ़ाए मन धानक आशा सेहो छल। अगहन मे हमर दुरागमन होइतइ हम जनैत छलहुँ। माय के विचार छलै जे एक मासक छुट्टी कऽ ली धनकटनीक दिन मे। माय, रेबनी आर हम तीनू गोटे मलिकाइनक खेत मे धानक कटनी करब। मजूरी मे जे धान भेटत ओहि सँ दू-अढ़ाइ मासक गृहस्तीक खर्चा अवश्य निकलि आएत। हमरा मन मे छल जे धान कटबाक समय मे एहि बेर परदेश नहि जायब। यदि पूछल जाय तऽ खेत मे कार्य करबाक लेल हमर मोन छटपटाइ छल। डाँर मे अंगपोछा लपेटि या लंगोटी बान्हि कऽ खेत मे धान रोपक हेतु उतरी तऽ बुझना जाइ छल जे कि दू बोतल दारुक नशा सवार अछि तथा दुनिया आओर किछु छैक नहि खाली हम छी आर खेत छैक। हमर हाथ अछि आर ई छोट-छोट हरियर-हरियर मनमोहक गाछ अछि। कतेको जोति कऽ तैयार कएल खेत मे हमरा सन-सन आओरो कतेको आदमी अछि जे धानक गाछ रोपि रहल अछि? पानि भरल खेत मे धान रोपय कें समय छुप-छुप छुप-छुपक आवाज अबैछ। ई आवाज एहि कानक हेतु सिनेमावाली सुरैयाक तान सँ ओ मीठ होइछ। हमरा जिला-जवार मे नामी-नामी गवैया छथि जिनकर गीत जखन लोक सुनै अछि मगन भऽ आँखि बन्न कऽ लै अछि। डाइ लोकनिक घरक जनीजाइत जखन अपना मेंही स्वर सँ मलार, बटगबनी आ समदाउन गबै छथिन तखन गाय बरद चरब छोड़ि कऽ इम्हर-उम्हर ताकऽ लगै छै। तहिना धनरोपनीक समय छुप-छपक आवाज सँ बढ़ि कऽ हमरा कोनो दोसर आवाज नीक लगितहि नहि अछि। तहिना धान काटऽ काल हँसुक जे खच-खच शब्द होइछै ओकरा आगू तान-तमूराक सुरो ने नीक लगइये। जों ई खेत ई चास अपनहि रहैत त ई आवाज दोगुना मीठ लगैत।

से हम ई पक्का केलहुँ जे ई अगहन गाँवे मे बिताबी। धनकटनी, गौना सभ भऽ जाएत। घर-गृहस्थीक रस सेहो भेटत।

महुआक रोटी खाय मे केहन बढ़िआँ होइ छइ तहिना देखहु मे। रंग सऽ बैंगनी होइ छइ मुदा स्वाद केहन सोन्हगर, आ मधुर केहन ? बनिहारक त ई लड्डू-पेड़ा हमरा सभ दिस छइक। जकरा गाय महीस छइक ओ दूधक संग खाइये। ओना नून सरिसों तेल आ हरियर मिरचाइक संग रोटी खाइये। साउन-भादव मे तिरहुत मे तरह-तरहक तरकारी होइ छइ। गरीब सँ गरीब आदमी अपना घरक पछुअति मे झिम्नी, रामझिम्नी, ठढ़िया साग, सेनहारी, पोरो, घेरा, करैल, ओल, अरिकोंछ, सेकुना, छम्हाउर, हरदि, आद, मिरचाइ, मोटा, कदीमा, कुम्हर, सजमनि रोपने रहैछ। बाबू-भैयाक पोखरि सं चोरा-चोरा कऽ माछ मारि अबैछ। हमरा सब दिस माछ बड़ पैघ वस्तु अछि। के अभागल ऐहन हैत जे भदवारि मे जलसीम भोग नहि लगाओत।

जलसीम ! बुझवा जोगर भेलह की नइ भैया ! साधू-बैरागी के भरना-बक लेल बाबू-भइया जलसीम कहलखिन अर्थात् पाइन मे फरय वला सीम तहिए सं जलसीम चालू भय गेलैं।

हमरा तिरहुत मे पानिक अकाल नइ होइ छइ। नदी, नाला, डबरा, पोखरि कतऽ नहि भेटत। गाँव-गाँव मे पोखरि, गली-गली मे डबरा, जगह-जगह पर धार, कहीं-कहीं समुद्र सन पोखरि देखबइ। एहन-एहन पोखरि के दैत्यक खूनल पोखरि कहैत छैक। दानव के खूनल एहिसँ पोखरि के अवधारि... कहबैक जे ओकरा खूनय बलाक पता ककरो नहि छैक। परंच हम राधा बाबूक मुहें सुनलिअन जे जहन राजा सबक मिजाजि सनकि जाइ तऽ समाजक लोक सं डएह बेगारी मे लगाकऽ बड़का पोखरि खुनबैक। एहन पोखरिक नाम शिवसागर, गंगासागर, रऽ दैत। एखनो ई नाम सब छैहे। सुनऽ मे आएल जे सगर के साठि हजार बेटा खूनि-खूनि कऽ समुन्द्र तैयार केलकनि। से भैया ! जहाँ कतहु बड़को पोखरि सब तैयार होइत देखाइ छइ से धरती मैयाक हजारो टा बेटा मिलि कऽ खूनने छैक। दोसर पोखरिक नाम राजय काल बाबू लोकनि अपना माय बापक नाम रखैत छथि। एहिना सेठ लोकनि चाउर, चीनी मिलक नाम अपना माइ बापक नाम पर रखैछ। जलसीम सं तरकारीक कार्य चलैछ। मुँइओ मूसहर सेहो खत्ता डबैछ कऽ सेर आध सेर गईचा-पोठी माछ डबरा सं छानि अने अछि। आगि मे भूजि कऽ बिना नूनक माँछ खाय तइओ खराब नहि लागत। गरीब गुरबा सब महगी अकालक समय मे छओ मास माँछे पर गूजर करैत अछि। महंथ बैरागी कहैयक कंठ मे कंठी बान्हैत फिरत ई कोठी बखारी मे धान चाउर भरल होऽ, बारी झारी खेत मे तर-तरकारी फल-फूल लागल होऽ तखने कंठीक इज्जत बाँचल रहत गरीब कंठ मे चारियो दिन ठीक सं नहि बान्हल रहि सकैत अछि।

मतलब ई जे बाहर नोकरी करऽ वाला वर्ष मे छः महीना घरो पर बिता सकैत अछि। देह समांग ठीक रहैक तऽ सब ठीके छै। हम सोचलहुँ खीगनो सब किछु ने किछु करिते रहत खेत मे गोबर दऽ आएत, घरक काज-साज सेहो किछु-किछु करत। माइयो के तखने सुख भेटतैक। दम्मो मारबाक कनिक-मनिक अवकाश भेटत। रेबनी क बिछुड़न माय के अधिक नहि बुझेतैक किएक तऽ पुतोहु लगे मे रहतैक। हम छः मास गाँव पर रहब आओर छः मास परदेश रहब।

आसीन-कातीक, अगहन, पूस आ माघ। एखन पाँच मास बाँकी छल। छः पन्चे तीस। तीस रुपैया भेल। किछु ऊपर सं मालिको देबे करताह। किछु पहिलुका जमा अछि। समटा मिला-जुला कऽ काज चलिए जाएत।

बात एकदम ठीक भऽ गेल। दुरागमन हेब्बे करत। मुदा अगहन मे नहि।

माघ मे। चारि मास खूब बढ़ियाँ सँ गामे रहब। चैत मे ओरहा खाकऽ गाम छोड़ब नहि तऽ इहो भऽ सकैये जे बैसाख मे मड़आ पटौनी कइए कऽ गाम छोड़ब।

अहिना सोचैत-सोचैत आश्रम चलि एलहुँ।

राधा बाबू जेल सँ छुटि आएल रहथि। गाँधी महात्माक आज्ञा सँ खद्दर आओर चरखाक प्रचार करथि फिरैथ। मधुबनी मे बाबू भइया समहक गुड़ऽ चलैक। लग-पास के इलाका मे हजारो चरखा चलऽ लागल। सैकड़ो नवतुरिया जगह-जगह काटल सूतक लच्छीक हिसाब लैत छलाह। तकरा बदला मे काटऽ वाली स्त्रीगण पैसा सेहो पबैत छलीह तथा कपड़ाक बढ़ियाँ इन्तजाम छल। राधाबाबू इलाका सभ मे घूमि-घूमि कऽ काज देखैत छलाह।

जतऽ-जतऽ ओ जाथि हमहूँ जाइ पाछू-पाछू। हमर काज छल, बाबूक कपड़ा साफ केनाइ, कागज-पत्तर सरिया कऽ रखनाई; ककरो ओतऽ पहुँचैथ तऽ ओतऽ सँ भऽ एनाई, कखनो पैदल चलऽ होइथ तऽ पैर-डाँड़ जाँति देनाई आओर चीज समहक सिआन रखनाई। काज कखनो-कखनो भारी भऽ जाइत छल। ई तखन होइत जखन की बाहर सँ कोनो मुखिया आयल रहैत छल। मुखिया के अयलाक पश्चात ओकरा लकऽ इलाका सभ मे घूमऽ पड़ैत छैक। कखनो टम-टम सँ कखनो रेलगाड़ी सँ। एकाध बेर राधाबाबू हवागाड़ीक जोगार सेहो कऽ लेत छलाह।

बहुतो सोराजी बाबू जमा भऽ जाइत छलाह। राधा बाबूक टहलुआ छलौँ तैं सभ-खद्दरधारी बाबू हमरा अपन टहलू बुझैत छलाह। हमरो 'फरमाइश' हुनकर सभक पूरा करैत तंग भऽ जाइत छलहुँ। जे मुखिया जतेक, बड़का बूझ के होइ छलाह हुनका बाबव सँ ओतबे मलिकाना गन्ध अबैत-छलैन्ह। सब राधाबाबू जकाँ संत-महतमा तऽ छलाह नहि। ई हुनकर सभहक अपन-अपन

आदैत रहैन। अपन अपन स्वभाव रहैन, रुचि छलैन्ह। किनको चुनि धोती चाहिए तऽ किनको शरीर के घंटा भरि मालिश हेबाक चाहियैन। भुनऽकाल पैर जतएब कोनो बाबूक जेल जरूरी छलन्हि तऽ किनको साहोरक दतमनि चाहियन्ह। किया पानक पाछु बताह रहैत छथि तऽ किनको बढ़ियाँ सिगरेट चाहियैन।

किनको अँगूर फाँकबाक शौख छलन्हि तऽ किनको माथ पर खादा कुसुम क तेल भुनऽकाल मलेबाक शौख रहैन। दूटा बाबू एहनो रहथि जे अपन चरखा रखने रहथि। पेटीवाला चरखा जकरा यरवदा चक्र कहैत छै। ई चरखा हमरा राधा बाबूक संग मे सेहो छलैन्ह। परञ्च जखन अन्तह घूमऽ लेल निकलैत छलाह तखन चरखा संग मे नहि लैत छलाह। आसरम मे रहैत काल मे राधाबाबू चलबैत छलाह। कखनो-कखनो एहन होइत छल कि बाबू लोकनि अपने बड़का मुखिया संग हवा गाड़ी मे लटकि कऽ चलि जाइत छलाह आओर हुनक चरखा हमरा लऽ जाए पड़ैत छल। एक बेर एना भेलैक कि समस्तीपुर के कोना बाबूक चरखा एही धरफर मे पाछू छुटि गेलैन्ह। भिनसर साँझ विनयक बाद ओ १५ मिनट चरखा चलबैत छलाह, मुदा ओहि दिन संयोग सँ हुनकर चरखा पाछू रहि गेल छलैन। बाबू रूसि कऽ बइस गेलाह जे पानि पीब आ ने खएबे करब। हमरा तऽ भैया बड़ नीक लगैत छल बाबूक एहि नाटक मे। अंत मे नहुना कऽ बाबू के मनौल गेलैन आ समतोला बेदाना लेबाक हेतु तैयार भेलाह। राधाबाबू हमरा डाँटऽ लगलाह। किएक श्रीपति बाबूक चरखा छोड़ि एलहुन्ह?

एहि तरहेँ मुखिया समहक गोष्ठी मे डर सँ हम थर-थर कँपैत रहिहहुँ कि किछु भूल चूक नहि भऽ जाए, बाबू तमसा नहि जाइथ। परञ्च धनैत छियैक भाई साहेब, राधा बाबू अपना क्षति क हेतु हमरा थोड़बे डँटैथि? नहि।

राधा बाबूक स्वभाव कड़ा अवश्य छलैन लेकिन हमरा लेल नहि। ओतऽ हमरा बड़ मानैत छलाह। अवसर मे कहियो कहियो सिनेह सँ हमरा कान नाक मलैथ। कहियो पीठतर दबा दैथ। सुतए काल मे हम जौं हुनका लग बैसल रहितहुँ तऽ ओ अपन टांग हमरा गोदी मे की जाँघ पर राखि दैथ तथा घर गिरहस्थी क गप्प पूछैथ। ओ एकाएकी हमरा घरक सभ बात बुझैत छलाह। हमर दुःख सुखक खियाल रखैत छलाह। ओ नहि चाहैत छलाह जे हम मैल ओ छोट कपड़ा पहिरी। एक बेर आसिन मे घर सँ विदा भऽकऽ जखन आस-रम मे पहुँचलहुँ तऽ धोती आ हमरा किनि देलैन, कमीज बनवा देलैन। चट्टी कीनि देलैन एक दिन राधा बाबू हमरा सँ कहलैन खवास क समान नहि, मनुक्खक समान रहऽ पड़तौक; टहलुआ बना कऽ नहि, संगी बना कऽ तोरा हम राखऽ चाहैत छियौक।

पहिने हम सभ गप मे जी सरकार सरकार कहैत छलिअन्हि मुदा बाबू एक दिन जोर सँ डँटलन्हि। तहिआ सँ खाली जी-जी कहऽ लगलिअन्हि ई तऽ भेलैन्ह राधाबाबूक बात। परञ्च दोसर सोराजी बाबू सभ मे सँ सैकड़े मे नब्बे एहने भेटैथ, जिनका 'जी सरकार' सुनबा मे बढ़ियाँ बुझाइत छन्हि। नहि कहिऔन तऽ गुररि-गुररि कऽ ताकैत रहताह। जिनगी भरि जिनकर कान 'मालिक-मालिक,' 'सरकार-सरकार', 'हुजूर-हुजूर' सुनैत अएलन्हि अछि हुनका लेल अहि बात समक बड़ महातम छन्हि। बिना छौंकल दालिक समान बिना जी हुजूरीक गप हुनका निक नहि लगैत छलन्हि। पच्छिमक मुलुक छैक गुजरात राजपूताना, पंजाब। एक-आध बेर पच्छिम क सोराजी बाबू सँ हमर भेंट भेल हुनका दू-चारि बेर हम सरकार-सरकार, हुजूर-हुजूर कहलिअन्हि तऽ बड़ भड़कला भैया! कहऽलगलाह—केहन नर-जबान छौंड़ा अछि! आ-गप मे हुजूर-हुजूर, सरकार-सरकार करैत अछि।

बेटा, हुजूर आ सरकार सभहक विरुद्ध तऽ हमर झगड़ा कोटी चलि रहल अछि, तखन हमरा मारि दैत अछि। हम बड़ कठिनाई सँ हुनका बुझौलिअन्हि जे हमरा ओतऽ बाबू-भैया लोकनि 'हुजूर-सरकार' क बिना गप्पे नहि सुनैत छथि......ई जानि कऽ पच्छिमक सोराजी बाबूक आँखि दुगुन्ना भए गेलन्हि आओर जीह मुँह सँ निकालि लेलन्हि, एहन गप छै। भल् तोरा के! हम कहलिअन्हि—जी हुजूर, जी हुजूर, हमरा ओतऽ येह परथा छैक। दुखिया सभक गुड़ डेढ़-दू महीना पर होइक। तखन हमर कान बढ़ि जाइत छल, कहिए देने छी। आओर मोजे छल। राधाबाबू कुरता-कमीज, गंजी, बनिआइन नहि पहिरैत छलाह। सिअल कोनो कपड़ा नहि। कखनो तीन गजक, कखनो चारि गजक धोती पहिरैत छलाह। देह पर छोट सन चद्दरि रहैथ छलन्हि। जाड़क दिन मे काश्मीरी लोई ओढ़ैत छलाह। एकाध मल्ला अंडी सेहो रहैत छलन्हि। माने ई की खोंचऽ वाला कपड़ाक गिनती चारि सँ बेसी कहियो नहि भेलन्हि। देशी कपड़ा आ देशी साबुन ताहि पर सँ देशी हाथ। कतऽ चारि चोट मारैत छलखिन कि कपड़ा साफ भऽ जाइत छलैन। साफ खद्दर, सार मैलो जल्दीए होइत छैक आओर साफो जल्दिए होइत छैक। चारि-चारि दिन पर राधाबाबूक कपड़ा हम साफ करैत छलहुँ। सुनलहुँ कि पहिने अपन कपड़ा ओ अपने साफ करैत छलाह परन्तु बाद मे काज बहुत बढ़ि गेलासँ ई जिद हुनका छोड़ऽ पड़लैन्हि। खेनाई ओ ओहने खाइत छलाह जेहन आसरमक बाकी आदमी। महतमा जी क ओतऽ सँ टमाटर आओर पिआउज खेनाई सीख आयल छलाह आसरमक बगीचा मे खूब टमाटर लागल छलैक। पिआउज सेहो ओतऽ उपजैत छलैक। मौसम मे चारि टा पिआउज आ आठ टा टमाटर खाइत छलाह हमर राधा बाबू। पिआउज तऽ हमहुँ खाइत छलहुँ मुदा बनाओल टमाटार खेबाक ओरियान

कैलौं कहियो खा ने सकलौं। पिआउज ततेक ने गहकै जे बुझए मे अबैत जे सरकारी अस्पतालक कम्पोटरक घर होइक। तरकारी मे दऽ कऽ पच्चासो बेर टमाटर हम खेने हैब परन्तु आमक समान पाकल टमाटर चूसनाई हमरा कहियो नहि नीक बुझाएल। आसरम मे माछ-मछरी खेनाई मना छलैक। हमरा मास मे एकाध बेर माछ भेटि जाइत छल। केना भेटैत छल? छट्ठू भाई मलाह छलाह। हुनके चाचीक नैहरक लगहि एक गाम मे पड़ैत छलैक। छट्ठू ओइठे रहैत छल। पुरइनक पात मे लपेट कऽ हमरा लेल दू-चारि कुटिया लबैत छला। हम दोगी मे लऽ जा कऽ जलखैक भोग लगबैत छलहुँ। एक बेर राधाबाबू हमरा सँ कहलन्हि हरौ, तोरा, मुँह सँ तऽ माछक गन्ध अबैत छौक। हम माथा झुका लेलहुँ तऽ बाजल छलाह—कोनो बात नहि, हम वैष्णव छी तऽ अहि सँ की समूचा दुनियाँ कंठीये बान्हि लेत? ई कहि कऽ मुसकुरै लगलाह। पाछू, कहलन्हि माछ खएबाक बाद एकाध टा पान खा लेबाक चाही। अहि सँ माछक महक मरि जाइत छैक।

हम तऽ बुच्च गँवार ठहरलहुँ। हमरा की बुझल की केकर गन्ह केना मरैत छैक। तैयो हमर राधाबाबू बड़ नीक आदमी छलाह। खुलल मिजाजक। कहियो ओ हमरा मना नहि केलन्हि, हम बीड़ी पीबैत छलहुँ, माछ खाइत छलहुँ। कहियो ओ मना नहि केलन्हि।

अगहन मे हुनकर सार अएलखिन। संग मे आदमी छलखिन। धानक चूरा, पकवान, गुड़, अचार, आ भातरीक मुरब्बा। दू पंथेरा सनेस लऽ अनने छलखिन्ह। लोक सभ खूब खेलक। चारि दिन रहलाक उपरान्त वापस भेलाह तऽ ओ हमरो संग मे लेने गेलाह। पता लागल, मालिकिन आबऽ वाली छथि। मालिक के दू गोट बेटा छन्हि, ओहो अएथिन्ह। मोट बोझ ढोअक लेल एक आदमी उमहर सँ सेहो अबतैक आ हमहूँ रहबइ।

एखन तक मालिकिनक हम नामो नहि सुनने छलहुँ, दरसन तऽ केने छलहुँ नहि। अहि सँ हमरा मोन मे इर्खाही पैस गेल। अगर हमरा छोटकी मलिकाइनक समान इहो मालकिन भेलीह तऽ चारिये दिन मे आसरम छोड़िकऽ भागऽ पड़त। नहि, अगर फूलबाबूक मायक समान हेतीह तऽ निरबाह होएत।

अहि प्रकारेँ सोचति-विचारति हम कुटुमक संग भऽ गेलहुँ। लहेरियासराय सँ समस्तीपुर। ओतऽ सँ—पहलेजा। पहलेजा सँ महेन्द्रु। फेर पटना जंक्सन।

आइ तक हम बड़की गाड़ी पर नहि चढ़ल छलहुँ। ताबेतक पटना जंक्सनक ई नबका-मकान नहि बनल छलैक। आब तऽ खैर बहुत बड़का मकान छैक पहिने अहि सँ छोट छलैक। बाहरो मे एतेक बढ़ियाँ सिमटिट बला चिक्कनी सड़क नहि छलैक। परन्तु गाड़ी तऽ बड़के ठहरल। हम पहिने सोचैत छलौं कि बड़का गाड़ीक टिकट (पास) सेहो बड़का होइत होएतैक, तासक समान। परन्तु नहि, टिकट मे किछु अंतर नहि। हँ, टिकट काटऽ मे ओहिना धक्का-मुक्की नहि, जेहन कि हराही (दरभंगा जंक्सन) मे होइत छैक।

गया जाय वाला हम सभ तीन गोटे छलहुँ। कुटुम, हुनक नोकर आर हमर कुटुम ठहरला जमींदारक बेटा। गाड़ी के सभ कोना बेसतिऐन! सिकिण्ड किलासक टिकट लेलहुँ। बाँकी दू टिकट तेसर किलास छलैक।

गया लैनक गाड़ी तेसर पलेटफारम सँ लटकऽ लगैत—छलैक। पहिल तेसर—पलेटफारमक बीच लैन छलैक। पूब दिस जैब तऽ लोकै हवड़ा पहुँचब। पश्चिम दिस जाएब तऽ लखनऊ आओर दिल्ली, बड़का-बड़का इंजन बड़का-बड़का डिब्बा। आबए—जाएक हेतु खूब खुलफैल रास्ता। खूब पैघ फाटक। सभ किछु पैघ। कुलियो पक्की धोती बजैत छल। बीड़ीयो सिग-

रेट बेचए वाला काई छुहे मे बनैत छल। साहबी ठाट-बाट मे कोट-पैण्ट वाला पचासो आदमी। कियो समस्तीपुर जाइत छल तऽ कियो धनबाद। बड़की लैनक गाड़ी के आगा मे छोटकी लैनक मधुबनी, झंझारपुर वाली गाड़ी बकरीक समान लगैत छैक। पटना दिस रहबआ बात देखी अछि। उम्हर जकरा रखना चहैत तकरा हम लाव धरना कहबै। उम्हरका लोक साफ बात बजैत अछि। एहुना गाड़ी मे बाबू सभहक मुँह सँ किछित-दिहिस' निकलैत छैन्ह, तऽ उम्हर हुनका सभहक मुँह सँ 'कियाँविया' सुनबैक। आकाश-पातालक फरक नहि आइल छैक, भइया।

रातिक समय छलैक। गाड़ी पर बैसते हमरा नींद लागि गेल।

गया पहुँचला पर नींद खुजल। ओतऽ सँ दोसर गाड़ी पकड़ि कऽ नवादा पहुँचलहुँ। नवादा सँ आधा कोस पड़ैत छैक मोहनपुर। दूरे सँ कोठा चमकि उठल। कुटुम सभहक लेल टमटम आएल छलैक। ओ—ओही पर चढ़ि गेलाह। हम दुनू गोटा पाँव पैदल।

राधा बाबूक ससुर लाखपती जमीनदार छलथिन्ह। दू पट्टी मे इस्टेट बाँटल गेल छलैक। उपजा आ आमदनीयें बटैत छलैक, जमीन जगह एकके ठाम छलैन। हाथियो छलैन। मटरो छलैन। टमटम सेहो छलैन। बग्गी सेहो छलैन। खरखरिया-पालकी सेहो छलैन। एक्का-बैसक छलैन्ह। कुरसी, आराम कुरसी, कोच, बेंच, टेबुल सभ किछु छलैन। नोकर सभहक लेल कच्ची ईंटाक दू-तीन घर ओहि दिस बनाएल गेल छलैक जाहि दिस गाय-महींसक रहक जगह छलैक। हमरा रहक लेल कुटुमक नोकर (आदमी) ओही कोठरी मे लऽ गेल।

दस नौकरिक नाम छोड़ि। दूनू दिस बन्हल बीस भैंसा। भैंसाकें उम्हर वाला 'पाड़ा' कहैत छैक। ओही सँ इम्हर हर जोतल जाइत छैक परञ्च

राधा बाबूक ससुरक एक्कोटा भैंसा नहि छलैन्ह जेकर पीठ आओर पाँजरक हड्डी झकझक नहि करैत होइक! बीस-बीस टा भैंस, ओकरा खुएबाक कोनो निश्चय नहि। सब कनैत रहैत छलैक। सभहक आँखि मे हम काँची देखलियेक। पैर आओर—देहों मे अठगोरवा, कीड़ा बजबज करैत छलैक। मन बुझि लियऽ भैंसा बहुत बड़का कुकरन केने हैत तँइ जमीदारक ओतऽ भैंसा जनम लेने हैताह—ओतम। नहि मरब, नहि जीयब, हुकहुक करब। हम एक आदमी सँ पुछलियैक—ई कमजोर भैंसा कोन प्रकार हर खिचैत अछि? ओ कहलक—खेतीक समय मे हिनका थोड़-बहुत खायक वास्ते देल जाइत छैन्ह, जखन खेती भऽ गेलो सहन सतराम। पोआर नार, पाली-भूसी के अमला लोक सभ चोरा-चोरा कऽ बेचैत रहैत छल। किराया पर मकान लगाब वला के जतेक ममता अपना मकानक प्रति होइत छन्हि, ओहि सँ कमे ममता जमीनदार के अपना माल-जाल दिस सँ होइत छन्हि। नोकर-चाकर अमला-फमला बहुत मामूली तनखा पबैत छलाह ओहि दिन मे ककरो दरमाहा दू रुपैया महीना, किनको चारि आ किनको सात। दश सँ ऊपर किनकहु नहि।

भाई साहेब, आहाँ पूछब जे एतेक कम दरमाहा मे जमीनदार आ नोकरक दुनियाँ—जहान कोना चलैत छल होइतैक?

जवाब कठिन नहि अछि, बिलकुल सोझ। नोकर सभ दरमाहाक कमी लूट-पाट सँ पूरा करए। रैयत के लूटऽ मे जमीनदारक नोकर चाकर कोनो बातक परवाह नहि करऽ। हरियर बगीचा सँ लऽकऽ सजमनि, कदीमा तक रैयतक एक-एक चीज पर मालिकक एक दम अधिकार होइक। एहि मे सरकार बहादुर अपन पुलिस, पलटन सँ जमीनदारक मदैत करैत छैक। नोकर-चाकर-लूटि-लूटि कऽ निर्वाह करैत अछि। जमीनदारक खजाना सेहो भरैछ तथा अपन घर भरैछ। जमींदारक नोकर के सभ ठाम इएह

हाल होई।

कुटुम दरवाजा पर ठाठ बाटक कमी नहि छलै। हालमे दूटा आराम कुरसी चारिगो मामूली कुरसी, एकटा गोल टेबुल पड़ल अछि। गोटका गद्दीक एकटा भारी भरकम कोच पड़ल छलैक। माथ राखब जगह तेल सँ कारी आओर चीकन भऽ गेल छलैक। कोचक बाँहि पर जहाँ तहाँ चून आओर सुँघनीक दाग पड़ल छलैक। जहाँ बैठ वाला सुँघनीक शौकीन हेताह, पान खाक उपरान्त ऊपर सँ चून खाइत होएताह।

दोसर दिस बैठक मे दूटा बड़का-बड़का तख्तपोश पड़ल छलैक। ओहि मे कतहु-कतहु काँटी उजागल ठहल मुँहबउने छलैक। शतरंजक खाना चाकू सँ खोदि कऽ काँइयो कोनो आदमी बनौने छलैक, ई चेन्ह सेहो एखन तक छलैक। तख्तपोशक नीचा मकड़ा जाल बना कऽ रखने छल, जहर बाए छलैक। देवऽ व ला बेफीक आ अहदी छल। वक्तर हुनतीन दिनका क दूटा पाहुन ठहरल छलाह।

राधाबाबूक सार के हमरा बारे मे बढ़ियाँ जकाँ बुझल छलैन्ह। अपन-आँखि सँ देखि सेहो लेने छलाह। अहि प्रकार हमरा संग मामूली मजदूरक समान बरताव नहि करैत छलाह। खास टहलुआ क समान हमरा भितरिया बूझल गेल।

मलिकिनी दूइए भाई-बहीन छथीन्ह। नाम छलन्हि लवंगलता। भाईक नाम बाबू कामेन्द्र प्रसाद नारायण सिंह छलैन्ह। सरकारी अफसर बाबू के० पी० एन० सिन्हा कहैत छलैन्ह। हमर मलिकाइन दुलारक द्वारे बबुनी कहल जाइत छलीह। हुनकर रहनाई नैहरे होइत छलैन्ह। राधाबाबू भेलाह सोराजी, अपना घर वला सब सँ मनमुटाव चलैत छलैन्ह। बाल-बच्चा सब के ससुरारिये मे छोड़ने छलाह। एतहु कोनो वस्तु क कमी नहि छलैन्ह।

लाख सँ ऊपरक जमीन जायदाद छलैन्ह। पच्चीस-तीस हजार क लहना छलैन्ह। हजारों मोनक उपज छलैन्ह। पुश्त-पुश्तैहन सँ आएल खानदानी इज्जत छलैन।

बाबू कामेन्द्र प्रसाद नारायण सिंह कोलेजक पढ़ाई समाप्त नहि कऽ सकल छलाह। बाप के आसामक जंगल सभ मे हाथी फँसावक शौख छलैन्ह। अही शौखक कारण बेचाराक जान सेहो गेलैन। कहल जाइत छैक, एक बेर छोटका लाट साहेबक कोनो दोस्त विलायत सँ अएलखिन्ह। हुनका हाथीक बारे मे बड़ इच्छा छलैन्ह। केना आसामक जंगल मे हाथी पकड़ल जाइत छैक? कोना ओकरा पालतू बनाएल जाइत छैक? कोना फेर ओ बिकाएक हेतु हरिहर क्षेत्र मे आनल जाइत छैक? ई सभ लाट बहादुरक दोस्त साहेब अपने आश्चर्य सँ बुझऽ चाहैत छलाह। एही सिलसिला मे राय बहादुर जानकी नाथ कुँवर के छोटका लाट साहेब आसाम पठौलखिन डिगबोइक लग भऽ कऽ जंगल मे डेरा खसाएल। हाथी पकरय वला क असावधानी सँ हाथी कएक टा गुट हमरा सभक डेरा पर टूटि परल। साहेब बहादुर एकटा गाछ पर चढ़ि कऽ अपन जान बचएलाह। परंच राय बहादुर एक टा तमसाह, खिसियाह हाथीक शिकारी भय गेलाह। हुनकर लाश घर तक नहि पहुँचि सकलनि।

ओहने १६ वर्ष क बेस मे बाबू कामेन्द्र प्रसाद नारायण सिंह क कान्ह पर स्टेटक भार पड़लन्हि। बाबू के नहि रहला सँ चाचा क नीयत बदलऽ लगलन्हि परन्च मायक चलाकीक कारण सँ हिनका नुकसान नहि उठाबऽ पड़लन्हि। बाबू साहेब क माय बड़ ज्ञानी मनोमात छलखिन्ह। हुनके ज्ञान क परताप कहु कि इ स्टेट तरक्की करैत गेलैक।

अपन नवकी मलिकाइन के अहि सँ पहिने हम नहि देखने छलिअन्हि।

बड़का डील-डौल, चाकर-मुँह, बड़का कपार, पसरल आँखि, औसत दरजाक नाक, पातर ठोढ़, पैल क समान गरदनि। रंग गेहुँआ छलन्हि। हाथ-पैर बड़का-बड़का छलैन्ह। धानी रंगक तीन पड़िया सारी पहिरने छलथिन्ह। बाजऽ सँ पहिने आँखि घुमारिकऽ माथा नवाबक आदत छलन्हि। मोन अछि, हमरा देख कऽ ओ गम्भिरता सँ माथा हिलौने छलीह आओर किछु समयक लेल हमरा दिस देखैत रहि गेल छलीह। पैर छू कऽ हम प्रणाम कएलिअन्हि तऽ मुस्कुरै लगली। दाड़िमक दानाक समान हुनकर दाँत पानक हल्लुक लाली क कारण सँ खूब बढ़ियाँ लगैत छलन्हि। किछु बाजल नहि छलीह। किछु काल हवेली मे बैसऽ कऽ हम बाहर चलि एलहुँ।

मालिकक स्नान छलैक। आइक प्रोग्राम। भोर मे पोखर क भूला नून, हरिअरका मिरचाई दै गेल छलखो। ओकर बाद हम बाबू साहेब क धोती मे साबुन लगबैत रहलहुँ। फेर अपन मालिकक छोटका बच्चा सभ कें संग मे खेलिकऽ चिन्हा परिचय बढ़एलहुँ। बच्चा हुनका तीन छलन्हि। एक बेटी दू बेटा। बेटी नौ वर्षक बच्चा सभ सात आ पाँच सालक, बेटा सभहक मुँह बाप सँ मिलैत छलैक, बेटी क नहि। बड़का घरक बच्चा सभ तनुकार तऽ होइते छैक। घमंड, फरेब आओर झूठ—ई बड़ सुलभता सँ हुनका सभ के अंदर पैस जाइत छन्हि। मचलनाई, हसनाई, चिधुकनाई, रंज भेनाई—ई सभ ओ माये-बापे सीखबैत छथिन्ह। बढ़ियाँ—जे किछु सीखैत छथि ओहि मे सँ बेसी हिस्सा नोकर-चाकर आर गरीब पड़ोसी सभहक देल रहैत छैक।

हमर मालिकक बच्चा सभ हमेशा नानिक गाम मे रहैत आएल छलथिन्ह। नानीक गामक बाप, चाचा क रोआब हुनका सभ कें नहि भेटल छलैन्ह। नानीक गामक नोकर-चाकर हुनका दिस एक विचित्र प्रकारक लापरवाही देखबैत छलैक। परिणाम ई भेलैक कि ओ नोकरक बच्चा सभ सँ हिल-मिल कऽ खेलाइत

छलथिन्ह। अम्मा जी (राधा बाबूक सासु) अपन समय पूजा पाठ आओर कथा पुराण सुनऽ मे बितबैत छलथिन्ह। हवेली क काज के देखनाई-सुननाई बाबू साहेबकऽ माता कऽ भाई करैत छलथिन्ह हमरा मलिकाइन के किताब पढ़ऽक भारी आदत छलैन्ह। किस्सा-कहानीक पोथी सभ खूब पढ़ैत छलथिन्ह बच्चा सभहक देखनाई सुननाई नोकरी करैत छलैक।

हमरा पता लागल की मलिकाइन सेहो आब आश्रमे मे रहती। बच्चा सभ आब एतहि रहि कऽ पढ़थिन्ह। ई बूझि कऽ हमरा बड़ आनन्द भेल।

अहि मे खुशी हेबाक कोन बात छलैक भइया, बुझलहुँ नहि? बात ई छलैक कि आश्रम पुरुष सभ सँ भरल छलैक। एक देवी छलथिन्ह। कहियो रहैत, तऽ कहियो नहि रहैत छलथिन्ह। आओर आब राधाबाबूक परिवार बराबरि आश्रम मे रहतन्हि। स्त्रीगण आर बच्चा सभहकबात सुनऽ लेल भेटत, हुनकर मुँह देखऽ लेल भेटत। आश्रम जहलखानाक समान नहि लगतैक। बुझऽ मे औतैक जे घर छइ।

खाए गेलहु तऽ थारी मे दू तरहक भात देखऽ मे आएल। बाबू सभक वास्ते मेहिका चाउरक गमकैत भात होइत छन्हि। अइठ मे बचला-खुचला पर गमकैत मेहीका चाउरक भात नोकर-चाकरक कर्म मे जाइत छैक। हम देखिते बुझि गेलहुँ की राधाबाबूक सारक अइठ अछि। कहिये देने छी पहिने की ओहि दिन बाबू-भैयाक अइठ हम बड़ मोन सँ खाइत छलहुँ। या एना कहियोक की बढ़ियाँ वस्तु सेखाइत छलहुँ ओ सभ अइंठ होइत छलैक। नोकर सभक वास्ते मोटका चाउरक जे भात नँ छलैक ओहि मे धानक भूसा आ अंकरी छलैक। वाह रे तिरहुत! की मजाल की तिरहुतिया चाउर मे एककोटा कंकड़ कन निकालैक। ई अंकरी-फकरी गंगा क उत्तर दिश जाए क साहस नहि करैत छैक। खैर खेनाइ कोनो खराब

नहि छल । सुदा देखनक सुजिया अहि बातक गवाह छैक की हवेली मे कंजूसीक राज अछि बुँद भरि देल पैयेक आ चाहयेक की बढ़ियाँ सुजिया बनि जाय तऽ ई केना होएत ? अचार अलबत्ते बढ़ियाँ छल । थारी देखऽ मे कठौतक जकाँ छल । हमरा दिशि का बड़का घर सभ मे थारी सभ बड़ बढ़ियाँ आओर बड़ मोट कान्ह बला होइत छैक । एहन नहि की देखला पर परात परए मोन ।

खा लेला पर मलिकाइनक कनखी सँ बाबाजी कनी सन दही देलक । ई हुनकर दया छलन्हि । मालिक सभ के कहनाईक मुताबिक "नोकर, चाकर, टहलू आओर खवास के दही खएबाक हक नहि छैक" फेर अहन कोनीमनी दही भेटल ओहि सँ हमरा बड़ खुशी भेल । खुशी आंह लेल नइ की दही भेटल । खुशीक कारण छलैक की मलिकाइन के हमर ख्याल छलन्हि । मलिकाइनक मोन के कोनो कोन मे जरुर बैस गेल छलहुँ । अहि बात सँ ई साफ भऽ गेलैक कि आगु सेहो मलिकाइन हमर ख्याल रखतीह ।

खेलाक बाद तऽ हाथ धो कऽ जखन हम लोटा राखऽ आँगन गेलहुँ तऽ सरौता सँ सुपारी कतरैत मलिकाइन बजलीह—पुरना स्वीटर छैक ओहिदे पुरान नहि, दूसालक पुरान । तोरा देह मे अँटो त पहिर ले ।

ओ सरौता बला हाथ कें उठा कऽ अंदर टूंकक तरफ इशारा केलन्हि । ओहि पर कपड़ाक मोटरी पड़ल छलैक । अहि मोटरी मे ओ स्वीटर सेहो छलैक । हम जा कऽ ओकरा उठा लेलियक । मलिकाइन आँखि नचा कऽ पहिरक इशारा केलन्हि तऽ हम ओकराऽ पहिर लेलहुँ । बिना बाँहिक ओ स्वीटर हमरा देह मे बैसि गेल । बैसल । मलिकाइन के देहक रहल होइतैक, ई सोचि कऽ हमरा बड़ खुशी भेल ।

एकटा कुर्ता सेहो लिया देबो ओ बजलीह । उपकारक बोझ सँ हमर

गरदनि झुकि गेल । मोन मे कहलहुँ जुग-जुग जिबैथि हमर ई मलिकाइन । सिनेह सँ भरल नजरिक ऐहन जादू होई छैक भइया । बाल बच्चा बलाक मोन बड़ नरम होइ छै । हमर छोटका मलिकाइनक कसाई सन हृदय पघीलन्हि । यदि ओ अहाँ के अनिरती देतीह तऽ ओहू मे करैले सन स्वाद लागत ।

पलथा मारिकऽ बैस कऽ पानक डिब्बा खोलिकऽ बड़ कएदा सँ पान लगौती, दू बीड़ा मलिकाइन पहिने अपना मुँह मे धऽ लेतीह तखन पाहुन या ककरो अनका देतीन्ह । भाई बहिन हुनक ओतऽ रहितथिन्ह तऽ पहिने हुनके दीतऽथीन्ह । आखरी मे काते सँ एक टा छोटका पातक बीड़ा लगा कऽ हमरा दीतथि चानीक डीब्बा सँ बनारसी सुरती निकालितथि आओर अपना मुंह मे चुटकी भरि दऽ लीतथि । ओहि मे क्यो दोसर हिस्सेदार नहि छलन्हि । बाबू कासेन्द्र बाबूक ससुरारि छपराक देहात मे छलैन । ससुर नेता छलखिन्ह । सेहो के गाँधीजीक आश्रम मे बालि कऽ पढ़ैये-लीखयैत छलाह । आगु चलिकऽ हुनका लीडरानी बनबाक छलन्हि हुनकर एक फोटो कासेन्द्रबाबू के रहऽ बला घर मे छलैन्ह । सुखाएल चेहरा, धसल आँखि तथा पिचकल गाल ओकरा मे एकटा चरखा पड़ल छलैन्ह नाम रहैन्ह कनक किशोरी ।

राधाबाबू आओर कासेन्द्र बाबूक शील स्वभाव मे बड़ अंतर देखऽ मे आएल छल हमरा । एक कें फकीरी बढ़ियाँ लगैत छलन्हि तऽ दोसर कें अमीरी । हमर मालकीनी सेहो भाईक समान छलीह । राधाबाबूक फकीरी हुनका पसंद नहि छलैन्ह । आश्रमक जीवन सेहो हुनका पसन्द नहि छलैन्ह । एहन्ह कए साल कात एक दोसर सँ अलग रहल छलाह । आब किछु दिन सऽ संग रहऽक मोन भेलन्हि ।

सम्बन्ध के एक भाईक संग हमर ई नवकी मलिकाइन बरहमपुरा आबि

गेलीह । हम तऽ खेर संगे छलहुँ । राधाबाबूक परिवार के आबि गेला सँ हमर खुशीक ठिकाना नहि छल । खुशी ऐहि छल कि आश्रम हमर हरदम सुखाएल-सुखाएल मन लगैत छल । कहक लेल आश्रम हरियरी बहुत छलैक बाग-बगीचाक की कहू ! परञ्च खाली हरियरी सँ की यदि मोन उदास रहल ! आओर मोनक उदासी के भगाबक वास्ते मुसकुराइत मुँह सभहक आवश्यकता पड़ैत छैक । जरूरत पड़ैत छैक किलकारी भरैत बच्चा सभ के । मायक सिनेह, भौजीक हँसी-ठहाक आनन्द, केहनो विपत्ति मे मोन खुशी करऽ बला संगी साथीक आनन्द जाहि घर मे नहि छइ ओ तऽ मात्र काठ-बाँस क पिजड़ा कहल जा सकैय ओकरा घर किछु मे कियो कहैत । जे ओकरा घर कहबो करतै तऽ ओहन घरक कोन काज ।

आसरम एकदम उदास छलो ओइ ठाम कोनो आनन्द नइ छल । हमरा थोड़बे दिन मे मोन अरुच्छ भऽ गेल । राधा बाबू के संगे छलों एखन केना चलि ऐब तैं कहुना दिन कटैत छलों । आसरमक भीतर आरो एकटा टटो छोट छिन घर छलै । अगोरा पर अफरी लागल छलै आ कात मे एकटा भरपतक टाट छलै । अंगनाक बीच मे एकटा बड़ पैघ गाछ छलै । सब मिला कऽ तीनटा छोट छोट कोठरी छलै । कहुना एकटा छोट-छिन परिवारक गुजर करऽ बला घर छलै । बाल-बच्चाक संग हमरो मोन कनी मनी लगैत छल । मलिकाइन के ऐहो घर खूब पसिन्न नइ छलैन तैयो की करतीह कहुना खुशी छली । ओ घर मे किछु चकमकी आइन देलखिन । एकटा खिड़की लगबा देलखिन । बैल राखऽ लै एकटा बेस पैघ बैठकी बनवा लेलैन । पाइख़ाना, नहेबाक नीक इन्तजाम भऽ गेलै । अनेक दिन तऽ राधा बाबू क्वार्टर (क्वाटर) मे रहै छलाह, ई घरक झमेला आ आरमक चिन्ता सँ कोन मतलब छलैन । आब मुदा नून-तेल लकड़ीक चिन्ता लागि गेलैन ।

आश्रम मे चाह पीनाई मना छलैक, परञ्च मलिकाइन नहि मानैत छलथिन्ह । सभ दिन तऽ नहि, कहियो-कहियो बड़ प्रेम सँ चाह बनबैत छलथिन्ह । दूध आओर चीनी ओहि मे खूब दैत छलखिन्ह । पटना मे फूल बाबूक संग रहैत काल मे चाह बनाबऽ हम जानि गेल छलहुँ । ओहो चाह मे दूध चीनी खूब दैत छलथिन्ह । महेन बाबूक अंतऽ जे चाह बनैत छलैक ओ हमरा कहियो पसंद नहि भेल । बेसी मोठ भेला पर महेन बाबू चाह के ठोढ़ सँ लगबैत देरी छोड़ि दैत छलखिन्ह । कहैत छलखिन्ह -- की शरबत बनौलहुँ है । छी...! जनैत छीऐ भैया, चाह पीब बाला असल पियक्कड़ केहन पसंद करैत अछि ! पानि के खूब इन्होर कऽ लीअऽ आ तकर बाद केटली मे चाहक पत्ती दऽ कऽ कनी काल ओहिना छोड़ि दिऔ । फेर कप वा गिलास मे छानि ली ओहि मे छोटकी चम्मच सँ डेढ़-दू चम्मच दूध आर ओतबे चीनी दिऔक । मिलएबाक पश्चात् गुल्लरिक रंग सन चाह लागत । बड़का-बड़का दिमाग बला बाबू सभ अही केदाक चाह पसंद करैत छथि । एतऽ हमर मलिकाइन जे चाह बनबैत छथि ओ तऽ भैया सोलहो आना शर्बत बूझू । पूसक भोर-साँझ कऽ जहन ठंढा हवा चलै छैक की धीया पुता के सर्दी लगि भऽ जाइ छैक तऽ चाह अवश्य बनबैत छलीह । हुनका पानोक बड़ शौख रहैन ।

आश्रम के बाहर, बस्ती (बरहमपुरा) के दिश स्कूल छलैक । अपर प्राइमरी स्कूल । राधा बाबूक बाप ई खोलबेने रहथीन्ह ओहिमे चारिटा मास्टर छलखिन्ह । पढ़ऽ बला धीया-पुताक कमी नहि छलैक । लग-पासक गाँव सभा कऽ करीब सबेर टा विद्यार्थी छलैक । खास अही गामक बीस टा विद्यार्थी बल होएतैक । स्कूलक मकान खपरैलक रहै, तीनटा कोठली रहैक । भीत मजगूत आओर मोट । टूटा बिना बाहिक कुर्सी ; एकटा स्टूल, एकटा छोटकी चोकी । सामने खूब पैघ फुलवारी ओकरें बीचो-

बीच स्कूल आबक मेहराबवाला रास्ता। सेनाक लाल-पीयर फूल ओतऽ एतेक अधिक फुलाएल छलैक की किछु नहि पूछू। स्कूल ऊँच जमीन पर छलैक, हमरा आश्रम सँ स्कूले टा नहि फुलबाड़ीयो देखाइत छलैक। मालिक अपना बच्चा सभ के नाम अही स्कूल मे लीखा देलखिन्ह, बेटीयोक। कन्या सभ तीनिये चारि अबैत छलैक। तोरा सँ की नुकाएल छौक भैया, हमरा सभ दिश जनाना पढ़ल-लिखल नहि होइत छैक। आब दरभंगा-मधुबनी सन शहर मे मास्टरनी देखाई दैत अछि। देहाती मे कतहु, कतहु कन्या समहक स्कूल देखबहक......मगर, भैया अहि सँ की होइत छैक, जहने कन्यो सभ लड़के जकाँ पढ़ल-लिखल होअ लगतैक तखने अहि देशक उद्धार हेतैक। एखन त बाबू भैया लड़की के अपना काजे भरि पढ़ा दैत छथिन्ह। पढ़ैत सुग्गा गाहक के अपन दिश खिचैत अछि। पढ़ल कन्या नीक वर कें अपना दिश आकर्षित करैत अछि। अहि सँ बादक कार्य हल्लुक भऽ जाइत छैक। विवाह भेले की पढ़ब-लीखब खतम। बापो आँखि बन्द कऽ लैत छथि आओर ससुरो। कतहु-कतहु एना नहि होइत होएतैक। खैर, राधा कांग्रेसी छलाह। हुनका नजरि मे लड़की-लड़का दूनू बराबरे छलन्हि। बच्चा पढ़ैत नहि तऽ की करतै? एक दिन मलिकाइन सँ ओ कहलखिन्ह अहाँ पढ़ल-लीखल रहितहुँ तऽ हम अहि सँ दुगुना काज कऽकऽ देखबितहुँ, मलिकाइन अहि पर आँखि नचा कऽ बजलीह मैयो बाबू ई काज अहीं के भोग हुअए! हमर बनपढ़ ठीके छी......लंगोटी लगाक आओर जटा बढ़ा कऽ, बाज अएलहुँ अहाँक अहि चरखा सँ! अहाँ के तऽ माउग भऽ क जन्म लेबाक चाहैत छल। बड़ तामस होइए हमरा अहि विधाता पर—

मालिक हँसए लगलाह। थोड़ेक कालक बाद बजलाह, बुझबैक की! जकरा खानदान मे हाथीक कारोबार होइत छैक—

अहि पर मलकिनी हाथ चमकाकऽ बजलीह रहऽ दीय, एनहु कऽ अहाँक बाप-पितामह दऽ अहिना कही तऽ अहाँ के केहन लागत? के मना करैए? बेटी अहाँ के, स्कूल अहाँ के। जतेक मोन होए ततेक पढ़ा देबैक, भऽ गेल ने?

राधाबाबू-चुप भए गेला।

आब ओ हमरो सँ पढ़ऽलए कहए लगलाह। कहैत त पहिनो रहैथ मुदा एमहर जोर देबए लगलाह। मलिकाइन ई नहि चाहैत रहैथ जे हम अक्षर बाँची गिनती-पहाड़ा रटी। एक बेर हुनकर ननदि भेँट करऽ अएलन्हि तऽ ओ हमरा बड़ पुछलकन्हि। हम ओतहि अड़ा मे बैसल तेसर पहर कनेक आराम करैत छलहुँ। मलिकाइन हमर प्रशंसा कएलाक पश्चात् कहलखिन्ह अहाँक भाई साहेब बलचनमाक दिमाग खराब कऽ देलखीन्ह? बेवकूफ पतलखरी लऽ कऽ बैसैत अछि। आओर सतँसे पहाड़ा लीखि लैत अछि। एहिपर ननदि कहलखिन्ह—हम भैया कें मना कऽ देबैन। नोकर-चाकर जतेक नासमझ रहए ततेक बढ़ियाँ रहत भौजी! हमर अजिया ससुरक कहब छलन्हि जे छोट जाति बला के एको आखरक ज्ञान दैत छथिन्ह तऽ हुनकर अपने तेज घटैत छन्हि आओर जे कयो शूद्र के समूचा पोथी पढ़बैत छथिन्ह हुनकर पिता सभ स्वर्ग छोड़िकऽ नरके मे रहक हेतु लाचार भए जाइत छथिन्ह।

मलिकाइन अहि बात कें दुनियाँदारीक पहलु छुआ कऽ बजलीह—खैर ई तऽ ऊपर के चीज भेलो असलं तऽ मुसीबत ई अहि जे नोकर-चाकर पढ़ि लिखि-कऽ अहाँक हंडी माजऽ नहि बैसत। आओर तखन एकरा पढ़ेला लिखेला ई फायदा?

अच्छा!—हम अपना मोने-मोन बजलहुँ तऽ ई बात छैक? तेँ भरिसक अहाँ हमरा पतलखरी नहि कीनि दैत छी? देखलेबै—भइतमानि हम कोना नहि पढ़ैत छी.........

हमरा बड़ अफसोच अछि, जे मलिकाइनक नियत एहन खराब छन्हि आओर ओ कहियो भोजन खराब नहि दैत छलीह। तऽ भैया ई चोला जतेक जल्दी बदलि जाइक छै ततेक जल्दी आदमीक विचार नहि बदलैक छै।

राधाबाबू कतेक ने कतेक बुझेलखिन्ह समझेलखिन्ह तखन जा कऽ ओ खद्दर पहिरक हेतु तैयार भेलीह। जे कपड़ा ओ पहिरथि ओ मेही सुतक बनल रहैक। छपुआ सारी, छींटक ब्लाउज। ब्लाउज बुझलिऐक की नहि? अरे वैह आँगी। नव फैशन के चोलीए बुझु। तीतली सन हुनकर गेहु सुरति पर हरियर छींटक ब्लाउज लाल फूल या भुरा छापल वाला सारी हुनका ऊपर बड़ बढ़ियाँ लगैत छलन्हि। ओ धनीक बापक बेटी छलीह। मोट-सोंट साड़ी हुनका कोना नीक लगितन्हि? भेहरी खद्दरो जे ओ पहिरथि से बूझू जे घरक लोकक हेतु ओ एकटा भारी काज करैथ। राधाबाबू टहरला पैच लोकर हुनकर आँगन वाली भला कोना ने खादी पहिरतथिन्ह। धीया-पुताक हेतु ओ एक दिन लड़ऽ लगलीह। एकरा सभ के हम कोनो हालत मे नहि मोटका कपड़ा पहिरऽ देबै। पैच भऽ कऽ चाहे जे ओढ़ु पहिरए, एकरे सँ किएक जोलहा सभहक दौंचा धरत?

भरल सभा मे अंग्रेज सरकार के ललकारऽ वला हमर राधाबाबूक अपना घरवालीक तमशाएल मुँह देखिकऽ बड़ा खराब तरह सँ घबराथि। बाबूक बाहर के खूब चलती रहैत, घर के एक्को पाई ने गुदानल जाइथ। एतऽ मलिकिनेक कहला होइत छलन्हि, मालिक हरदम नहले रहैत छलाहैन। हुनका अपना मे जे चलैत होइन्ह, हमरा पर तमशाएल नहि छलाह! मलिकाइन के तऽ हमरा किताब पकड़लि देखि अजगुत लगैन्ह। परञ्च ओ हमरा दोसर बात मे कहियो नहि टोकथि। मालिक त खैर हरदम भोलारहैथ।

दुरागमनक दिन नजदीक आबि गेल। राधाबाबू पचन्नास रुपया हमरा नगद देलन्हि। लहेरियासराय के एकटा बनियाँ सँ एकटा सारी जनानी आ ओर दूटा मरदानी धोती दीया देलन्हि। हम खुशी भऽ गेलहुँ। खुशी सँ हमर मुँह फुजले रहि गेल। आखिर मे मालिक-मलिकाइन के पैर छुबिकऽ धिया-पुता के दुलार कऽ क तीन दीन पुस दिनलापर हम अपना घरक लेल चललहुँ।

६

धनकटनी अईं-तहीं शुरु भऽ गेल छलैक। परञ्च आधा फसिल कटि चुकल छलैक। रौंगी धान सब धान सँ पहिले तैयार होइत छैक।

पाकल पीयर फसिल सभ सँ समुचा बाध एना बुझाइक छल जेना सोनहुला माटि सँ लेपल बड़का मैदान होइक। आड़िक चौचीर पाँती सभ धानक शीश सँ झाँपल पड़ल छलैक। बीचा-बीच मे रखवार सभहक खोपड़ी सभ दूरा पाल वाली नावक सन लगैत छलैक। सभ खेत पर अनपुर्ना (अन्नपूर्णा) भवानीक आसिरवाद (आशीर्वाद) पाकल फसिलक शकल मे परसल छलैक। लोक सभहक खुशीक नहि ओर छल नहि छोर। सभहक मुँह पर मुस्की, सभहक आँखि मे सफलताक झलक। जिनकर अपन फसल छलैन्ह ओ सेहो खुशी छलाह, जिनकर नहि छलन्हि ओहो खुशी छलाह। गिरहथ (गृहस्थ), बनिहार, जन-जनो, कमार-भिखमंगा सभहक मुँह पर आशक देह छलैक। फसिल भेलैक अछि त मलरी सेहो भेटत, बनिहारी सेहो। भिखमंगा सभ कें भीख सेहो भेटतैक, ब्राह्मण देवता कें दान सेहो भेटतैन्ह। आओर गिरहस्त सभ के की कहनाई? मुंडन छेदन आओर सुत्रत सँ लऽ कऽ श्राध आओर चलीवा तक सभ काज अही फसलक भरोस सँ चलैत छैक। बढ़ियाँ फसिल देखि कऽ महाजन के सेहो कर्जा देबऽ मे उत्साह होइत छैक। पुजारी मंदिर मे सभ के भोन सँ घंटी बजबैत अछि आओर भोन सँ आरती

उतारैत छथि। फसिल बढ़ियाँ देखऽ मे आयल तऽ निहोरा-गुहारा मे सेहो सुभीता होइत छैक। काली माई के छागर (बकरा) क जोड़ी, बरहम बाबा के फुल-अक्षत, पितर सभ के गयाक पिंड, बाबा कुसेसरनाथ के घी-दूध ई सभ बहुँ सभ तखने करब जखन की खेती बढ़ियाँ होएत। समय-समय पर पानि नहि बरसए आओर बाढ़ि नहि आबए तखन तऽ ठीक नहि खेती भेल चौपट्ट आओर खेती भेल चौपट्ट तऽ लोक सभ के गाल चुकुट्टि जाएत, आँखि सभ धसि कए अनगढ़ दिया बनि जाएत।

अहि कमला मैयाक किरपा छलैन्ह, जहाँ देखू ओतहि लक्ष्मी महरानी धानक रंग-बिरंगक शीश (बालितम) सभ पसरल छल। हाट बाजार मे अही सँ अनाजक भाव बहुत नीचा उतरि आएल छलैक। दू रुपैया मोन धान आओर तीन रुपैया मोन चाउर छलैक। मडूई रुपैया आओर महुआ डेढ़ रुपैया मोन छलैक।

हम पहिने पक्का कए लेने छलहुँ कि भरि पुस धन कटनी करब। धान काटक बनिहारो सँ एहेक अन्न भए जाएत की चारि महीनाक कटान चलत। मगर माय कातिक मे बीमार पड़ि गेल, पैतीस साँझ ओ किछु नहि खेने छल। बहुत कमजोर भए गेल चलैक। गाँवक बैदजी बुखार के आओर बढ़ा देने छलखिन्ह। ओ तऽ खैर भेल कि संयोग सँ फुलबाबू आबि गेलाह आओर छोटकी मलिकाइनक मेहरबानी भेल। एक बोतल अलबर टोनो (एकबर्ड टानिक) ओ सभ मंगबा देने छलाह, थोड़ बहुत पथ-पानिक सेहो इन्तजाम कए देने छलाह।.........

रेबनी सँ हम पुछलियैक—तोरा एतबो नहि फुरेलौक कि भैया के एकटो (एकटा) पोसकाड लिखबाकऽ पठा दितैं !

माय मना कए देने छलैं—ओ बाजल।

हमरा रेबनीक अकिल पर दया लागल। अहि मे भला अम्मा के पुछऽक की बात छलैक ? चारि अच्छर केकरो सँ लिखबालेत आओर टीसन पर डोल-डाँगल रहैत छैक ओहि मे खसाऽ अबैत पोसटकाट। ई तऽ ससुरारि मे अपन नैहरक नाम हँसाउत, हे भगमान !

परन्च कसूर रेबनीक नहि रहै। पाछू बुझलियैक जे ओकरा कियो लिखऽबला नहि रहैक। छोटका मालिक सँ ओ लिखेबो करितै तऽ कोना। बड़की बाबुक छोटका माय पढ़ाई छोड़िकऽ घर बैसल छलाह हुनका सँ लिखबा सकैत छल परन्च रेबनीक हिम्मत ओतऽ जेबाक नहि भेलैक। ओ लड़का किछु बदनाम छल आओर ओकर सभहक घर गाँव सँ कनिक हटिकऽ रहैक, बाँसक बड़का-बड़का बीटक अड़ मे रहैक। उम्हर जाए मे रेबनीए नहि गामक कोनो बेटी-पुतहु डेराइत छल। बाँसक ओ छोटका जंगल लुच्चा सभक लेल बागक बराबर छल। कतेको तरहक खिस्सा ओहि झुरमुट क चिएपूते सँ सुनैत अएलहुं अछि। नीके भेल जे रेबनी उम्हर चिट्ठी लिखाबय लेल नहि गेल।

माय एखनहु तक कमजोर छल, तैयो ओ धनकटनी मे हमर हाथ बंटाबए चाहैत छलि। हम बुझेलियैक—मरिएजबे, बेटा-बेटी कि पुतहू किओ काज नहि अएतौक। अपन भला तऽ दुनियाँक भला ! बड़ कठीन सँ ओ मानलक फूची भरि गायक दूध रोज ओ पीबय लागलि।

हम दूनू भाई बहिनी मोजिकऽ खेत मे जाकऽ धान काटी। रातक राखल नीज भोरे अन्हारे मे हाथ मुंह धोक खाइत छलहुँ। हम जाबे तक हुक्का चीलम पीबैत छलहुँ ताबे रेबनी बर्तन बासन माँजिक चुल्हा चुल्हा निपी लैत छल। फेर द्वार मे हाँदू खोलिकऽ हम दूनू गोटे खेत दिस बिदाह होइतहुँ। दोसर दिन कोन खेतक फसिल कटतै से पछुलके साँझ कऽ गिरहथ कहि दैत

छलखिन्ह। मरद-औरत, जुवान-बूढ़ सभ ठीक समय पर खेत पहुँच जाइत छथि। एक कतार मे भऽ कऽ बनिहार धान काटब शुरू कऽ दैत अछि। निचला खेत महक धान पाँच-पाँच छः-छः हाथ नाम होइत छैक आओर खाली शीश छाँपि लेल जाइ छैक। हमरा दिश निचला खेत कम छल। एहऽ तऽ भैया हम जड़ि सँ कटैत छी। काटैत समय खप-खप, खुप-खुपक आवाज कान मे बड़ मिठ लगैत रहै छै।

पहर डेढ़ पहर तक हम सभ चीज बिसरि-बिसरि कऽ धान कटैत रही। हँसी-खुशीक आवाज, गीतक आवाज आओर खेत लेत घूमि कऽ लाई-झुरही बलाक आवाज, सारंगी बलाक विलाप......केना दुपहरक बाद तेसर पहर अबैत छैक पता नहि चलैत छल। माग खेक अबैत छल तऽ घड़ी भरिक लेल हाथ के आराम भेटैत छलैक। आरि पर नहि खेतहि मे बैस कऽ हम खाइ। धानक खेत मे काटल फसिलक खुट्टी मुलायम होइत छैक। जहाँ रमहक मुलुक मे गहूम, जौ, ज्वार, बाजरा होइत छैक, ओकर खुट्टी कड़ा रहैत छैक। ओहि पर एना मुलल की बैसल नहि जा सकैत छैक। बड़का बड़का मालिक अपने खेत मे नहि अबैत छथि। बराहिल, गुमस्ता आ की दोसरे नोकर-चाकर धन कटनीक देख-भाल करैछ। मझिला मालिक आ गिरस्त सभ अपने अबैत छथि। छोट-छोट गृहस्थ आओर मामूली खेतिहर बड़ा चलाकी सँ बनिहार सँ काज लैत छथि। खेत मजदूर के अपनहुँ तऽ खेत होइत छैक जकर फसिल ओ अपने कटैछ। हमरो चारि कट्ठा खेत छल ताहि मे धान छल। अपन फसिल हम अपनहि काटि लेलहुँ।

बत्तीस बोझ धानक मजूरी दू बोझ धान होइछ। खास जन के मालिक सभ किछु बेसी कऽ दैत छथिन। ओहि बरख हम बीस बाइस दिन फाजिल कटने रही। ओहि मे छ मन धान भेल रहय। ओ तीन मासक गुजर के

हेतु बहुत छल। यदि माय दुखित नहि परैत तऽ दू तीन मन आओर धान होइत। अपना जमीन मे छ मन धान भेल छल। दू तीन कट्ठा खेत मे रब्बीक फसल सेहो रहय, जौ बूट खेसारी।

खरिहान मालिक के बड़कीटा रहैन साधारण गीरहथक खरिहान साधारणे होइत छैक। तेसर पहरक बाद धानक बोझ खेत सँ खरिहान मे आबऽ लगैछ। पहर भरि तऽ खाली आनहि मे लागि जाइछ। खरिहान कहिओ खेतक लग रहैक तऽ कहिओ दूर। फसिलक बोझ एक पर एक रखैत जाउ तऽ टाल बनि जाएत। टाल पर खेप दिस ताकब तऽ गरदनि टूटि जाएत। हमरा बस्ती मे एहन गिरहस्थ चारिए टा छलाह जनिकर उपज हजार मन सँ बेसी होइत छलन्हि—बड़का मालिक, मझिला मालिक, छोटका मालिक आओर बल्ली बाबू। मझिला मालिकक उपज ढाई हजार मोनक, बल्ली बाबू डेढ़ हजार मोनक। बाकी हजार मोन बला छलाह। ई भेल सिर्फ धानक उपजक बात, रब्बी आओर भदई क उपज ओहि सँ फराक छल। से-डेढ़ सै मोन ओहो भऽ जाइत छलैक।

खरिहान मे दाउनीक काज माघ-फागुन तक चलैत रहैत छलैक। फागुन मे रब्बीक फसल तैयार होअए लगैत छलैक। सरिसो, तीसी, खेसाड़ी, बूट ......चैत मे जौ, गहूम, मसुरी आदि।

हम अपन धान झाड़ि-पीट कऽ तैयार केलहुँ। बनिहार सभहक संग कहाँ खेत आओर कहाँ खरिहान, कहाँ बरद आओर कहाँ हर-फार? मनियार कक ओतऽ सँ बड़की उखड़ि लए अनलहुँ आओर ओकरे डाँड़ पर सभ धान हम झाड़ि लेलऊँ बहोंक दिस तऽ एना नहि होइत अछि ने? उखरि कें ठाढ़ा दैत छिएक, शीशबला धानक डाँट सभ कें ओहि पर जोर-जोर सँ पटकैत छीएक; शीश सँ झड़ि-झड़ि कें धानक दाना सभ नीचा खसैत

जाइत छैक। फाड़ल छोट सभ के कात कऽ रखैत जाउ आओर बाकी फाड़ैत जाउ। परंच ओहि प्रकार सँ सो मीन थान नहि फाड़ल जाइत छैक, ई तऽ दू चारि मीन थान वलाक ढंग छैक।

मिला-जुला कऽ देखू तऽ छः महीनाक खर्चा घर मे छल। चारि परानी खाइयो वाला तऽ रहल होएत। कोन, दस दिन तऽ रहि गेल छल गौना के।

माए जल्दी बढ़ियाँ भए गेल। तेल-मुँदि कऽ ओ घर के चिक्कन बना देलक। कात कँ सात हाथक चार चढ़वा लेलहुँ हम। ओकरो मुँह आँगने दिश छलैक। आँगनक बाहर घरक सामने दुभि छलैक, ओकरा छील-छालि कऽ साफ कए लेलहुँ।

ओर-सिंदूर आओर सगुन क चीज सभ लऽकऽ चुन्नी हमरा सासुर गेल आओर गौनाक लेल हुनका सभ के तैयार कए आएल। ई एक प्रकारक रसम-रिवाज छल।

हमरा सासु के मरना पाँच-सात बरख भेल होएतैन। ससुरक दिस सँ द्विरागमन इशारा पबके शाल भेटि चुकल छल। माघ सुदि पंचमीक दिन निश्चित भेल। चुन्नीक माय ओकर घरवाली, भाउज आओर भावुक अवरजाह बढ़ि गेलै। किओ......क हेतु बेसन पीसऽ बैसलि, तऽ किओ नीपल-पोतल घरक टाट मे घोरा हाथीक मूरत खिचैत अछि। देल मे सिन्दूर घोरि कऽ ओहि सँ कतेको आगह गाछ-लाथिक चित्र खींचल गेल। आओर हम ई सब देखि कऽ हँसी। धनवन्ती काकी (चुन्नीक माय) हमरा देखि कऽ हँसैत कहलनि—तोरा किएक पतिस अएतोक बोआ! दरिभंगा पटना घूमल छह, हम सब तऽ आहिल चपाट ठहरलहुँ। हम कि जानऽ गेलिऐक जे फूल पत्ती कोना बनौल जाइ छैक। अपना घर वाली के पटना लऽ जइहऽ, ओ सीखि लेतह...धनवन्ती काकी जखन हँसथि तऽ घर आँगन हुनकर ठहाका सँ गूंजि उठै। ओहि काल हमर लाज शरम हुनका ठहाकाक नीचा दबि जाए। चुन्नीक घरवाली मुसकी मारय। चुन्नी हमरा सँ चारिए मासक जेठ रहए। ओकर घरवाली बात-बात मे हमरा संगे शरारत करय। पछिला फगुआ मे एक लोटा रंग नवे गंजी पर ढारि देलक आ बड़ी काल तक हीही करैत रहल परंच हमहीं की छोड़ि देलिऐन? थोरेक कालक बाद अबीर लऽ अयलहुँ भानीजी मसाला पीसैत छलीह जल्दी सँ हुनका दबा देलहुँ आओर गालपर आधा पाव अबीर रगरि देलिऐन। थोड़ेक काल तक माय माय करैत रहली! बुझि गेली जे बालचन्द के संग बदमासी करय मे की फल भेटै छै।

कोशी क किनार दिस ओकर नइहर रहैक। पिडश्याम रंग क मुंह रहै आँखि नाक बढ़ियाँ रहए, चेहराक काट-छाँट खूब बढ़ियाँ होइ तऽ कि जनाना खूबसूरत कहाओत, नहि कहएतै? ओहि पर कऽ तन्दुरुस्ती बढ़िया रहतै तऽ ओकर सुरति की कहब! कोरा मे ओकरा एकटा अढ़ाई साल क बेटी रहैक। मनियार ककाक मनोरथ ई रहैन जे पोताक मुंह देखकऽ मरी। रोज बेचारे नहाकऽ पीपर के जड़ि मे लोटा भरि अछिञ्जल चढ़ाबथि। परञ्च ई तऽ अपना बशक गप तऽ छलैक नहि?

दुरागमन सँ दू दिन पहिने ममा आबि गेला। तैयारी समटा भऽ चुकल रहैक। घर-आँगनक जिम्मेवारी माए पर रहैक। नगदीक इन्तजाम हम कए लेने रही। हँ, एक खंड सारी आओर मंगवावऽ पड़ल।

हमरा मोन नहि अछि जे अकरा सँ कहियो विवाह भेल रहए ओकर शकल-सुरत केहन होएतैक।

बाढ़ि बला धार मे हेलैत काल जेना क्यो थाकि कऽ आँखि मुनि लैत अछि आओर थोड़क काल देह के ओहिना छोड़ि दैत अछि ओही तरहें हम

अपना जिन्दा के धार मे छोड़ि दी की चट द निकल आबि जाय......!

मामा, मुन्नी आ हम........तीन गोटे सँ दुरागमन करऽ गेलहुँ। पैदले जाए पड़ल, ओहि दिन मे रेल नहि रहैक। बहेरी सँ दू कोस आओर दक्षिण-पश्चिम, गाँव के नाम रहैक शीतलपट्टी। बस्ती कोनो पैघ नहि रहैक, एकदम मामूली। चारि छः घर राजपूत, पच्चीस-तीस घर ग्वार, पच्चास एक घर जुलहा। गाँव सँ कोस भरि पश्चिम जीबछ नदी क पटान रहैक, भदबारिक दिन मे ओही बाटे कमलाक पानि सँ फाजिल डूबि जाइ छैक। ओहि सँ खराबो नहि गिरहस्त के लाभे छैक। राजपूत बिचला दर्जाक कास्तकार छैक बाँकी छोट-छोट खेतिहार। जमीनदारी शुम्भा ड्योढ़ी राजपूत जमींदारक रहैक। बनिहार होइक या खेतिहर, साधारण गिरहस्थ रहै चाहे कास्तकार—शितलपट्टी बलाक जिन्दगी ओतेक कठोर नहि रहैक जतेक कि हमरा गाँव बलाक। ओकर दोसर वजह ई छइक जे ओतऽ के जोलहा खेतीक अलावा आओर समय अपन तानी भरनी आ करघाक सहारा गुजारैत अछि। ओहिटोल मे दस टा करघा चलैत छलैक। दरभंगा, समस्तीपुर सँ सूत लऽ कऽ चादर अँगोछा, माहमद, लुंगी, चरखना आदि तैयार कऽकऽ पास-पड़ोसक हाट सभ पर मे बेच अबैत अछि। बीसो जुवान जुलाहा ढाका आर कलकत्ता रहिकऽ अपन गाँवक खुशहाल के बढ़ा रहल छल। सत पुछू तऽ ओ जुलहा सभ ओहि बस्तीक ढाँचा बदलि देने छलैक।

ओतऽ हम एक दिन आओर एक राति भरि रहलहुँ। हमर आतिथ्य सभ ओतऽ एक साधु के पोसि रखने छल। ओ अपर (दर्जा चारि) पास कऽकऽ पहिने काँग्रेसक भोलंटियर (सेवक) आओर बाद मे रमता जोगी बनि गेल छल। आब उमर तीसक लगभग रहल होएतैक। यादव

महासभाक प्रचार सेहो करैत छल। सितलपट्टी मे ओकर पोसी रहैत छलैक निपुत्री हैबाक कारणेँ माइनजनकेँ अपन डीह-डाबर सौंप गेल छलैक। वएह घर बाबा जगदासक आसरम बनि गेलैक जिनकर नाम पहिने कारीराउत छलैन्ह। ओ हमरा तीनू गोटे कें ओहि मॉङकऽ भाग दिया देलैन्ह। हमरा किछुओ नहि बुझल अछि कि ओहि राति ससुरारिक स्त्रीगण सभ हमरा सँ की की रिवाज करबौलक!

भोरे मे गोनाक लगन छलैक। महफा आओर चारि कहार बेह सभ ठीक कऽ रखने छलाह। स्त्रीगण सभ कान-काल मोहरि करऽ लागल गोना-बालीक त मानू कंठे फूटि गेल छलैक। पीयर साड़ी आर लाल चोली पीठ दिस नूआ पर हाथक लाल-लाल थप्पा पड़ल छलैक। सरबा मे महाबरक नाम पर आलक रंग अपन गाढ़ लालीक शोभा दऽ रहल छलैक। आँचर मे धान-दूभि पानक पात आओर सौंस सुपारी आओर हरदि बान्हल छलैक। हाथ मेंहदीक चेन्ह देखाई पड़ैत छलैक।

रिवाजक तौर पर थोड़ेक दूर तक महफा मे हमरो रहऽ पड़ल। गाँमक बाहर मे उतरि गेलहुँ। दूआदमीक बोझ चारि गोटे केना ढो सकैत? आओर लाजक मारें ओकर गर्दनि सेहो टूटि जइतैक! अरे हँसैत छी! नब-नवेलीक शील-संकोच सँ तोरो तऽ पाला पड़ले होएतऽ, आ की नाइ पड़लऽ? झूठ नहि बाजू भैया!

कनियो के अपन आए नहि छलैक, पितिऔत भाए संग मे गेल छलैक। दही, पकवान, केरा आओर समधिनक जेल साड़ी लहठी...एक आदमी सीक सभ पर ई सभ नेने छलैक, पटई क सहारा सँ। बीच मे दूबेर ओहार उठा क महफा मे हुलकी, एक बेर नजरि मिलते मुस्कुराए पड़ल आओर दोसर बेर नीन मे मग्न छल बेचारी। पहिने-पहिने येह हम ओकर झलक

पेलहुं। अरे देखने तऽ रातियो कऽ देबैक परञ्च सार सभ की पिया देने छलैक, बुधि-बुधि सभ बिसरि गेल छलहुं। एखन मगर होश मे छलहुँ। आहा! बुचुआक माएक ओ मुंह आई तक नहि बिसरि सकलहुँ भैया! ओहो की बिसरक वस्तु छैक? गोल-मुँह, बदामी आँखि, छोटकी नाक, पात सन कपार, कारीछेहर केश, पातर ठोढ़, कानक सन ठुड्डी, सुरेब गर्दनि—बड़ सुन्दर लागल ओ। पहिले दर्शन मे ओ अहि मोन मे धँसि गेल, सत कहइ छी भैया। सीथ मे सिंदूरक चनगर रेखा, कपार पर चकमक खुदिया बाना सभ सँ सिंगार कएल छलैक। गर्दनि मे सुन्दर हंसुली छलैक। बाँहि पर बाजूबन्द, कलजा मे लाह चूड़ी। पैर मे गिलटक काड़ा। दहिना हाथक आङुर मे पीतरिक अँगूठी······माए नहि छलैक तँ की, बाप संसार मे कोनो कसरि नहि रखलकैक। मामूली खेती करऽ वाला छल बेचारा। हमही कोन नवाबक नाती छलहुं? सत पूछू तऽ हमरा सँ हमर ससुरक हालत कैऽ गुना बढ़ियाँ छलैक।

आइक दिन अहिना छोट होइत छैक। हम पहिनहि सँ थाकल-टेहिएल छलहुंँ, ओहि दिन तँ आओर चूर-चूर भऽ गेल छलहुं। कहार तऽ मानू दौड़ते चलैत छैक।

नव-नबेली बहु-बेटी अगर पालकी मे रहलैक तऽ पैर तऽ ओकरा सभ के पैर मे पाँखि लागि जाइत छैक। हम आओर चुन्नी कहार सभ के मना कए दिऐक—एतेक तेज नहि चल मामा तोरा सभहक संग कखन तक दौड़ सकताह?

एही पर अधेर बयसक एक टा कहरिया नमसाय कऽ बाजल—हम तऽ पहिनहि सँ इ जनैत रही तँ चौठी भरिचढ़ा अपनहुँ हैं·········हैं।···आब काछुक चालि चलू हम सभ? मामा डपटि कऽ कहलखिन्ह—बदमाश कहीं

कै! छोट जातिवलाक अकिलो छोटे होइत छैक। चल, जतेक तेजी सँ चलबाक छउ,·········छोड़ि दइक बालचन्द, दौड़थु ससुरे।

कहार—गे से जे सभसँ कम उमरि के रहै ओ काफी मस्त आदमी आओर खुश मिजाज रहए। कनेक रुखाई सँ बाजल गारि देब अहाँ?

बाँकी कहार हमरा दिश घुरि-घुरि कऽ ओकरा तामस पर आओर शान चढ़ा देलकै।

मामाक चेहरा पर पैर सँ लऽकऽ माथ तक बुढ़ोती आबि गेल रहैन्ह। केश बढ़ियाँ जकाँ उज्जर भए गेल रहैन्ह। एखन ओ तरहत्थी पर तामकुस मलैत छलाह। स्वार सभ कें एक तऽ क्रोध अबैत नहि छै जँ आबि जाइत छैक त प्रलय भऽ जाइत छैक भैया! से, मामा भभकि उठलाह; आगू बढ़ि बजलाह—तऽ की कऽ लेबेऽ हमर?

पहिने तऽ कहार सभ ओहि जवान के रोकि देलकै। चुन्नी एमहर मामा कें बुझेलक। बीच-बचा करैत हम बजलहुँ—अहि मे तमशाएक कोन बात छलैक? कहुना हम चलब तैयो साँझ तक घर चलिए जाएब······।

एतेक कहि कहार सभ दिश हम नजरि घुमेलहुँ। मामा दिश देखिकऽ हम बजलहुँ ई बेचारे कहाँ तेज चलैत छथि? अपन—अगर चालि जँ ई चलि कऽ देखाबथि तऽ अलहा—उदलक घोड़ा सेहो हिनकर सभहक मुकाबला नहि करतन्हि!

दूनू दिशक क्रोध ठंडा भऽ गेल। हम गाछक अढ़ मे मामा सँ कातेँ लऽ जाक बुझा देलिएक ओहि नव-जवान कहार के। तू सभ अपन चालि चलि सकैत छइ परञ्च डेढ़-डेढ़, दू-दू कोसपर हमरा सँ भेंट कऽ लेल करबऽ, बस?

अहि पर ओ खुशी भऽ कऽ कहलक—हँ मालिक, कनहा पर भारी बोझ रहए तऽ फुरतीए फुरती चाही। ओहन हालतमे कनीको सुस्ती कोढ़-करेज

के' खखोरि-खखोरि कऽ खा जाइत छैक ।

केहन बात कहलक ओ ? छौ ने लाख रुपयाक बात ? आधा रस्ता पार करएक पश्चात् हम घड़ी भरिक लेल खाएक हेतु बैसलहुँ । सड़क के कातहि मे इनार रहैक । कलमी आमक बड़का बगीचा । पीपर के भारी गाछ । देवीक मंडील । स्कूलक खपरैल मकान । इंजनक सीटी सुनाई पड़ल ।

हम तीनू गोटे चूरा भिजबइत छलहुँ की फेर सीटी सुनाई पड़ल । अहि बेर मामा पात सँ हाथ उठाक पुछलन्हि कोन टीशन छैक बालचन ?

सकरी—हम कहलिअन्हि । चुन्नी सेहो अपन मुँह खोललक—जहाँ बैसल छऽ ममा ओ कोन गाँव छैक, से जनैछहक ? अपन बतायक हेतु ममा मुँह बाबि देलन्हि । चुन्नी उठि कऽ दही परसलक । मोटरी मे नून तकैत बाजल—ई बहोरा छैक ममा, कतेको बेर एमहर हम आएल छी; हम बड़का मालिकक कुट-मैती मे एही गाँव आएल रही । आओर पमोलीओ मे । एतक सरसुती (सरस्वती) लोक आओर नेहराक चउधरी लोक मुलुक भरि मे नामी छथि ।

हम पहिला कर घोटैत कहलिएक—हमहूँ एमहर सँ गेलहुँ हैं चुन्नी भाइ ! तू कखन एमहर अएलैंह ? ओ डपटलक तऽ हम कहलिऐक—बाबा कुसेसरनाथक दरसन करऽ जे जाइत अछि ओ एमहर सँ जाइत अछि ? आब चुन्नी कैं मानऽ पड़लैक—हँ, एम्हरे सँ कुसेस्सरधामक रास्ता गेलैक अछि ।

हम चारू गोटे चूड़ा-दही खएलहुँ । कहार सभ सुखाएले चूड़ा फँकलक । हम मामाक अधीन छलहुँ, आओर ओ एकरा लेल कखनो तैयार नहि भेलाह कि थोड़े दही कहारो सब के देल जाइक ।

सवार के सेहो ओतहि खुआएल गेलैक । हम नजरि बचा कऽ ओ थोड़ेक समयक वास्ते पालकी सँ निकलल सेहो । एमहर हम हुक्का गुड़-गुड़ाबति रहलहुँ । मामा हुनका संग लऽ लेने छलाह । खैनी हुनका एतेक पसंद नहि

छलैन्ह जतेक हुक्का पसंद छलैन्ह । कहैत छलखिन्ह—बाभन सभ केः संगति सँ तमाकुल खएबाक लति पड़ल; आर-सरिकऽ मुँह गन्हाबैत छैक ।

रहउरा सँ डोली उठल त एकदम पंडौल चलि गेल । कोनो, डेढ़े कोस तऽ पड़ैत छलैक । मामा सेहो टनमना गेल छलाह । राजक सड़कक नगीच सड़कक कारे-कारे बड़का-बड़का गाछ छलैक, मामा ओतहि कूद सँ बैस गेलाह, तऽ हमरो बैसऽ पड़ल, नहितऽ हम कनी आगू बढ़ि कऽ हाटक गाछी मे बैसकऽ सुस्तैबला छलहुँ ।

चुन्नी गेल, मामाक वास्ते ओतहि पानि लऽआएल । अहि बेर तमाकुलक संवर छलैक । तरहत्थी पर तम्बाकू चून ठोकल गेल । थोड़ेक समय मे चुनौटी तैयार भेल । चुन्नी आओर मामा ओकरा अपना-अपना ठोढ़क तर मे दबएलन्हि आओर चलि पड़लाह । हम बीड़ीक भक्त छहरलहुँ, एकटा फूँकिकऽ आधा टुकड़ा दोसरक सेहो खतमकऽ चुकलहुँ, तखन उठि कऽ विदा भेलहुँ । रास्ता मे एक-दु-बेर ओहि जवान के तेहो हम बीड़ी देने छलिएक, बिलकुल स्वार्थ सेहो कोन काजक भैया ? सस्ता-महँग आओर खुलल तंगी तऽ जिनगी भरि चलतैक । जीनाइ छैक संग्राम बन्धा, जीनाइ छैक संग्राम । सुनने छी ने कहियो ?

एक ठाम सड़क विचित्र तरह सँ खराप छलैक । ओतऽ सबारी कें डोली सँ उतरि जाए पड़लैक । डिस्टिक बोर्डक पुल की जानि कहिया सँ टूटल पड़ल छलैक । ओहि सालक भदबारि मे ओहिठाम सड़क पर कईएक खाधि बनि गेल छलैक मगर अखन तक मरम्मति नहि भेल छलैक । ओतऽ अधिते हम के सवारी छोड़ऽ पड़ैत छैक । हम मोन मे विचारि लेलहुँ कि राधा बाबू सँ कहबन्हि बोर्डक चेयरमैन हुनकर दोस्त छन्हि········

राम-राम कऽक आगू बढ़लहुँ । रहमाक लग एकठाम आमक-मज्जर

एहन सुगन्ध आबल की मिजाज मस्त भऽ गेल। माघ बीस दिन बीत चुकल छलैक। आम कें मजरक समय आबि गेल छलैक। कहैत छैक, आमक बौर चूसि-चूसि कऽ कोइली अपन तान कें तेज बनबैत अछि। गन्हक ओ झौंक लगला सँ मामा तऽ अपन लाठी टेकिकऽ ठाढ़ भए गेलाह। चुन्नी बाजल यार गाछ। मानू छितियाकऽ बौराएल अछि, एहन मस्त सुगन्ध तऽ यार कतहु नहि भेटल छल आई तक।

लगक आड़ि पर एक आदमी ठाढ़ छल। एक हाथ मे दू टा कुसियार दोसर मे, टटके खोटल मटरक सागक मूड़ी। ओ गुन-गुनाइत छल :

सखि हे मजरल आमक बाग।
कुहू-कुहू चिकरए कोइलिया,
झींगुर गाबए फाग।
कन्त हमर परदेश बसइ छथि,
बिसरि राग अनुराग।
खिधि भेल बाग, सील भेल बेरी,
फूटि गेला ई भाग।
सखि हे मजरल आमक बाग······

हम सभ गीत सुनि लेबए चाहैत छलहुँ। मगर चुन्नी सँ नहि रहल गेलैक, ओ बीच्चे मे टोकि देलकैक—खूब मजर छैक, कोन आम अछि बाबू ? करपुरियाक दू गाछ छैक, ओ अहिबेर बौराएल छैक—उत्तर भेटलैक।

तखने तऽ—हम आओर चुन्नी संगहि बाजि उठलहुँ। मामा कम्मे जोर सँ कहलखिन्ह—करपुरिया आम खाए मे अहिना गमकैत छैक। बाबू, ककर कलम छैक ?

शकल—सूरत तऽ नहि, परञ्च कपारक लाल-ठोप आओर छाती परक साफ डोरा कहैत छलैक कि ओ बराहमन अछि। ई सभ सोकी-साफ सब्द कें चिबा-चिबाकऽ बजैत छथि। ओ कहलक—बाबू छत्रमणि ठाकुरक।

मामा दोहरा देलखिन्ह—छतरमइन ठाकुर। बड़ अकबाली आदमी होएताह।

हँ—ओ बाजल—अपने तऽ ठाकुर परतापी छलाह मुदा बेटा दुनू अबूरयान निकललेन्ह···

हम कहलिऐन्ह—छोड़थां कह मामा, डोली बहुत आगू निकलि गेल। थाकऽ लगतैक तऽ अहि आमक आँठी लऽ जायब, चलू।

आँठी किएक, दू चारिगोट आमे भेट जाएत—बराहमन देवता बजलाह—जरूर अबिहऽ; असाढ़ मे···तू सभ कोन आश्रम छह ?

जदुवंशी—चलैत चलैत चुन्नीक मुँह सँ निकललैक। ओमहर माए आओर रेबनी आओर टोल-पड़ोसक मर्द-मेहराऊ सब हमर बाट तकैत छल। दालि-भात, तरकारी, बड़ी, अचार, नेबो आओर आँड़ाक चटनी ''सभ किछु तैयार छलैक। दुलहिनक लेल खीर बनल छलैक।

डोली पर गुलाबी रंग साड़ी लपटल छलैक। छौंड़ा सभ दूरे सँ देखि लेलकैक। गाँम सँ बाहर पोखरिक मौड़ पर रेबनी आओर चुन्नीक आउर सभ सेहो ठाढ़ भेल छलैक।

हमरा लाज लागल। मामा सँ बजलहुँ—आँहा चलू मामा, हम दिसा-फराकत सँ निबहिकऽ एखने अएलहुँ···

चुन्नी मुस्कराकऽ नजरि मारलक। खग जानए खगक भाखा। हम ओकरा इशारा सँ डाँटि देजिएक, लजाएल के आओर लजाकऽ की फएदा। मगर एहनो लोक होइत छथि जनिका भिजल पर पानि छींटऽ मे बड़ मोन

लगैत छुन्हि। मामा आगू बढ़लाह त चुन्नी के कान मे हम कहलिएक—बड़ लाल लगैत अछि यार, किएक तू हमरा पाछू हाथ धोकऽ पड़ल छें ?

एहन मौका पर सभ कें इएह हाल होइत छैक। चुन्नी हँसिकऽ कहलक- हिस आओर अपन दहिना हाथ सँ हमरा बायाँ गाल पर एक चमेटा लगा देलक·········ओही गाँवक चलि गेल। मगर एहि, रिवाजक मुताबिक दुलहा आओर दुलहिन दूनू के एकहि डोली पर चढ़ि कऽ आँगन मे उपस्थित होएबाक चाही।

मालिक हवेली सँ दच्छिन कलम छलैक, ओहि सँ दच्छिन रास्ता। पच्छिमक दिस हमर घर छल। कलमक लग हमरा डोली पर चढ़ि कऽ आइ परल, ओ घुंघट चढ़ौने छल। ओकर हथेली पर अपन आँगुर सँ गोदि कऽ हम खिसिआयक कोशिश कयलहुं परंच ओ तऽ कनेको नहि लजबगायल, कहुआ गेल छल।

सभ स्त्रीरक जनानी गीत गाबए लागल। ढोल आओर मेही, शंख सन भोंपुक आवाज सभ मिलि कऽ अजीब रंग अनैत रहए।

आँगनक मुंह पर पालकी राखल गेलैक। तेल-बाती जरा कऽ काछुक खपरि मे राखि कऽ दीप बना लेने रहए। परिछन कें ओ चीज हमरा एखन तक मोन अछि। हमरा दूनूक माथ पर धान छीटि कऽ मुंह, बाँहि, छाती टेहुन सँ दही छुआ क चुमाओन कऽल गेल, बस !

देरी तक जनी जाइत जागल रहए। हमरो छुट्टी भेट गेल रहए। किछु खाऽ कऽ हमहूँ सभ सूति रहल रही, मामा भरिसक देरी तक जागल रहथि। कहारक लेल अपन चुन्नी अपन बथान दय देलकैक। ओ ओतहि अपन आसन जमेलक। ऊपर चार तऽ रहबे करैक। पाहुन दूनू नबका मरैया मे ठहराएल गेला। टिकिया, हुक्का आओर पीबाक तम्बाकूक इन्तजाम

रहबे करै। आब-मगतक भार चुन्नीक छोटका भाए पर रहै! गारजियनक काज मनियार कका करैत छलाह। एहन लगैत छल जेना की सौंसे बिरादरी हमरे काज मे जुटल अछि। जुवान भाई मेहमान के मोन बहटऽबैत छलाह—यार, तू दुलहाक बेटा छह! ओहर नामी हमरा पड़ोसक रहथि···मुसहड़ हमर पड़ोसी रहए······

मेहमान तऽ बउके भऽ गेला, संगे जे आदमी आयल रहैन्ह ओ बजलाह है तऽ आहाँ सभहक देहो सँ डोमाक गन्ध अबैत अछि···

हुनकर समहक ई नलिते रहैन्ह आओर इमहर हम खजूरक पटिया पर सूति रहलहुँ।

जनैछी, कतेक राति बितला पर रेबनी हमरा झकझोरि कए हमर निन्न तोरि देलक। शराबी जकाँ गुर्रा कऽ हम ओकर कब्जा पकड़ि कए कहलियैक—की छौ ? भीतर चलु भैया ! बाँहि पकड़ि कऽ रेबनी उठबैत बाजल—जल्दी चलु, उठू माय बजबैत अछि।

भीन्न कोंकि आएल तऽ हम फेर सूति रहलहुं। रेबनी हारि कऽ घुरि चलि गेल। थोड़ेक काल बाद माए आएल आओर पीठ पर दुलार सँ एक थापड़ धीरे सँ मारलक आओर बाजल उठ बाली, उठ, भीतर चल।

विदुआ काटि कऽ, कान मे काठी भोंकि कऽ माय हमरा पढ़ाइये देलक आकाश मे चन्द्रमा नहि छलखिन्ह। आई पंचमी छैक की नहि ? पाँचे घड़ी इजोरीया रहतैक।

कतेक राति बितल होएतैक ? माय सँ पुछलियैक आओर हाफी केलहुं। माय हमरा आगू धकेलैत बाजल—दुपहर राति बीति गेलैक बेटा। हमरा पछिलकाक राति सँ निन्न नहि आएल, पलक पर पसेरी पड़ल अछि तहिना बुझाए ; चल सूति रह। हमहुं सूति रहब······

घर में अकेल देलक माए। पोआरक सेज पर बोरी ओछाओल रहैक। कनियाँ एक दिन दबकल रहय आओर सुतऽक बहाना केने छल। फाटक कें धकेलि कऽ अन्दर सँ घर के बन्द कऽ देलिऐक।

दीप आगा में जरैत छलैक, बत्ती काफी तेज छलैक। किरासनक भभक सँ दिमाग भारी भऽ गेल। रानीजी सँ एतबो नहि भेलइन्ह जे बत्ती कम कऽ दितऽथिन्ह!

फेर बेचारी पर दया लागि गेल—फंसा कऽ लेल गेल चिड़ै ने तऽ अछि। दोसरक घर मे की छुबए, की नहि छुबए! ककरा सँ की कहैक किमहर कि देखैक! महीना दू महीना तऽ बेचारी कें अपन बथान पहचानइ मे लागि जएतैक···

अपने दीप आला सँ उतारि लेलहुँ आओर ओकर मुँह खोलइत। बत्ती पर आँगुर देते धुप! मिझा गेलइक साली, धत्त तेरी!

जे सुतऽक नाटक रचने छल ओकरा सँ नहि रहल भेलइक। खिल-खिला कऽ हँसऽ लागल······

ढिबरी छोड़ि कऽ हम ओछाउनक दिश गेलहुँ, ठिकिया कऽ ओकरा बाँहि मे कसि लेलहुँ तऽ हमर मुँह ओकरा कनपट्टी पर पड़ल। हड़बड़ी मे फुसफुसा कऽ हम बजलहुँ—उपाय तऽ तू इ बढ़ियाँ निकाललएँ मुदा पतेक जोर सँ हँसब ठीक नहि छलइक, माए आओर रेबनी की कहैत हएतैक अपना मोन मे?

हमरा अन्हार मे अनुभव भेल कि बेचारी लजा कऽ काठ भऽ गेल अछि। चुम्मा लइत हम कहलिऐक—खैर, कोनो बात नहि। कनी दियासलाई कहाँ छैक बता?

ओ उठल। सिरहाना सँ माचीस निकालि कऽ चुपचाप जरौलक, ढिबरीक बाती सँ तीली कें छुआ कऽ फेर ओकरा मिझा कऽ दोसर ठाम फेंक देलकैक···रोशनी के कम कऽक ढिबरी कें आला पर रखइत छलइक तखन देखलिऐक, मुँह भारी भऽ गेल छलइक। माँटि सँ रगड़िकऽ जखन अपन आँगुर हम साफ कए लेलहुँ तखन उठिकऽ ओकरा अपना लग बैसेलहुँ।

फिकिर कथीक!—हम बजलहुँ—अपना घर मे बेस दू परानी तऽ छइथ, बाकी हम छी आओर आब तू अएलें हैं। तोहर खिलखिलाहटि सुनि कऽ माए बड़ा खुश भेल होएतौक, आई ओकरा मोन सँ चिंताक सिल उतरि गेल होएतैक। देखिहैं, बुढ़िया के आई सँ बढ़ियाँ नींद अएतैक। रहल रेबनी से ओ बड़ सुधा छैक। ओ तोहर अहि ढीठपनक कनहु फिकिर नहि करतौक।

आब ओकरा मुँहक साधिकक सुरखी वापस भए गेल छलैक। बात-बातक फरक छैक भैया, एक बात आदमी कें कना देत छैक आओर दोसर बात ओकरा हँसा दैत छैक। सोलक-सत्रहक बैस, मेहराक्क जाति आओर ससुरारिक पहिला राति—लाज आओर डर के भला की पूछनाई!

हम कहलिएक—घरक नाम तऽ बता। फेर लजा गेल। दोबारा पूछलिएक तऽ नहूँ सँ बाजल—सुगनी।

सुगा तऽ तू छँहे—ठुड्डी उठा कऽ ओकर मुँह कें अपना दिश कएकऽ हम बजलहुँ—बड़ सुन्दर नाम छौक। हमहुँ अही नाम सँ तोरा कहबौक।

इनकारक तौर पर ओ माथा हिलौलक।

किएक?—हम पुछलिऐक।

कपड़ा कें एक खूँट कें अँगूठा मे लपटैत बाजल—ई हमर नइहर नहि अछि, एतऽ ओहि नाम सँ बजाएब तऽ सभ हमरा खँखाउत।

तऽ असगरे मे सुगनी कहिकऽ बजएबौक, छौउ ने मंजूर?

अहि बेर ओ मुस्कुराइत ठोढ़ आओर नचबैत नजरि सँ मंजूरक कएलक।

अहि बीच कएबेर हाफी लए चुकल छल। हम कहलिएक—सुति रहऽ आओर, हँ......ई रहलहु तोहर मुँह......बजाउन......

पाँच रुपया जेब सँ निकालि कए ओकरा हाथ पर हम धए देलिएक। जे रिवाज नैहर मे नहि पूरा भेलैक, ओ—आखिर पैतए पूरा भेलैक। ओहिराति बाबा जोगदास भांग पिया कए मति गति हमर हरिलेने छलाह। अहि लेल ई रुपया माए हमरा देने छल।

बाप सुगनी के रजाई देने छलहक, हम बेह ओढ़ि कए सुति रहलहुं। बेचारी के अउंघीयो लगैत छलैक आओर बात-बात मे लजा जाइत छल से काल। हम ओकरा सुति रहए देलिऐक। हमर सारी जीवनक ई पहिल मौका छल। ओ हमरा बहुत लजकोटरि आओर शान्त बुझाए पड़ल। बिना माए के पाँच-सात साल बेचारी नहि जानी कोना कटने छल!

७

द्विरागमनक बाद हम निश्चय कएलहुं कि गाँव नहि छोरब आओर दूर-दराज जाऽ क नोकरीओ नहि करब। अहाँ कहब, नव कनियाँक मोह लगैत अछि। हँ, भैया, से तऽ छलैक। झूठ किए कहू जनानी हमरा बड़ गुनमन्ती भेटल।

जहिआ सं ओ आएल, केना समय बीतऽ लागल, किछु पते नहि चलय। अगिला बैसाख मे हम रेबनी कें बिदा कऽ देलिऐक, माय के दुःख जरूर भेलैक मगर रास्तो तऽ दोसर नहि छलैक। आदमी हमरा बहीन के सेहो बढ़ियाँ भेटल छलैक। ओ पटना मे एक होटल मे काज करैत छलैक पूरान आओर बढ़ियाँ नोकरी छलैक। खाऽ पीब कऽ पाँच रु० महीना बेसीए होइक, रेबनी बहुत कानल छल, माय सेहो। बन्नी काकी बुझेलथिन—जखने बेटी भऽ कऽ जनमलह तखने आब अनका कर्मक संगक नसीब जोरेलह। कौदिन नैहर रहबऽ?

सुगनी माए के एकेक आराम पहुँचाबऽलगलैक जे पूछी नहि। घरक काम कोनो टा ओ बुढ़िया केनहि करऽ देत छलैक। दुपहर मे खाए के पश्चात् आओर रातिकऽ सुतए काल सुगनी मजबी मे तेल लऽकऽ माए के पैर लग बैस जाइ छल, आओर जांतऽ लगैत छलैक। इनार, पर जा कऽ नहा रैत छलैक। घाउड़-गोबर खेत मे देबाक रहितै तऽ अपने दऽअबितै। माए

के काज छलैक मलिकाइनक ओहिठाम जाएब गिरहस्थीक छोट-छोट काजकऽ देब। दुकान सँ सौदा लऽ आनब, खेत सँ साग छिम्मी तोड़ि आनब, हमरा मजदूरी करैत काल खाएक पहुँचेब।

ओहो सुगनी के बड़ दुलार करए लगलीह। पाई—रुपैया अपने नहि राखए। मलिकाइनक ओहिठाम कानो बढ़ियो वस्तु हाथ लगइ तऽ असगरे नहि खाए। कनियाँ समय पर खाए, समय पर सूतए। माय के एकर बड़ ध्यान रहैत छलइक।

अपने खेत मे हम सभ काज करऽ जाई छलहुँ। पहिने किछु दिन तक माय सुगनी कें खेत मे नहि जाए दैत छलइक। परञ्च पाछु ओ मानि गेल। गरीब के ओहिठाम भइया नखरा-बाजी घूँघट पर प्रथा नहि चलइत छइक। पुतोहु होअए या बेटी, खेत मे काज करऽ जाइऐ पड़तै; माल चरावए पड़तै। सिंगार पटार मे बरबाद करऽक हेतु समय गरीब घरक स्त्री कें कहाँ भेटतइक भइया? एहि जातिवला चाहे केहनो गरीब होइ, मुदा हुनका घरक स्त्री रोजी-धंधाक काज मे पुरुषक हाथ नहि बटा सकइत छथि। हुनका ओहिठामक स्त्रीगणक बेकाज बइसल रहैत छइक। जतेक एहि खानदान होएतइक, ततेक बेसी बेकाज पड़लइक। हमर स्त्रीगण सभ मेहनत मजदूरीक दाना खाइत अछि। की हम झूँसि कहैत छी भइया?

रेवनी सासुर रहए लागल तऽ अपन तीनू बकरी बेच लेलक, दस रुपइया भेटलइक। चरवाह नहि अछि तऽ आन माल-मवेशीक खातीर नाक पर रहैत अछि। बकरी सब साफी आओर परेशान कए दैत छैक। मझिला मालिकक मारि सुनऽ पड़ल छल एक बेर आब के रेवनी रहए जे ओकरा पर नजरि रखैत? दू बकरी रहए, से भुइयाँ महराज कें बलि चढ़ा देलन्हि। मानल रहैन्ह।

ओहि साल रबीक फसिल खूब बढ़ियाँ भेल। आमो खूब बढ़ियाँ

फड़ल छल। बच्ची बाबू कतेको बगीचाक मालिक छलाह। हुनकर एकटा छोट गाछीक रखवारीक काज हमरा भेट गेल। जिनकऽ माय अंगरैत छल। पच्चीस तीस टा गाछ रहैक, ओहि मे आम्मत गाछ दुइये-तीनटा रहैक बाँकी सभ गाछ क आम बड़ मिठ, रसदार, गुदगर खूब। हं खूब खेलहुं, बेचबो खूब कएलहुँ। तेसर हिस्सा भेटैत छल। पाँच हजार सँ कम आम हमरा हिस्सा मे नहि पड़ल हाएत, लगभग एक मास रातिकए गाछिए मे सुतलहुँ, लग-पास गाछिये गाछी रहए जाहि मे हमरे जकाँ पच्चीसो रखवार राति-दिन ओगरैत छलो। सद्गुनीयोक मोन कहियो कहियो डबि जाइत छलैक परञ्च छल तऽ आखीर कमाउ जनानी, दिन भरि काज करैति आओर रातिकए खूब तानिकए सुति रहए। एक राति हम रामखेलावन के अपना बदला गाछी मे राखि देलिएक, आओर अपने घर आबि कए सुतलहुँ।

हम दुनु परानी मीलि अपना खेत मे मरुआ अढ़ाइ तीन मोन अन्दाज उपजएलहुँ।

धानरोपक समय आबि गेल रहै। हम दू जनक काज करऽ लगलहुँ। मतलब जतेक दू तीन जन करितैक ओतेक हम असगरे करैत छलहुँ। आठ सेर धान बोनि भेटैत छल एक साँझक भोजन सेहो घर पर अबैत छल। चालीस दिन मे अस्सी आदमीक काज कएलहुँ। माए मना करैत रहै दुःखीत परबेह! किएक एतेक खटैत छें बेटा?

जबाब मे हम कनेक हँसि देत छलहुँ आओर बीड़ी धूकैत अंगना सँ बहरा जइतहुँ।

भादव, आसिन, कातिक आओर आधा अगहन साढ़े तीन मास पहिने ओतऽ कोनो कार्य नहि छलैक। अइ दिन मे किओ पूब भर चलि अबैछ, सिलीगुड़ी, दिनाजपूर, तथा ढाका दिस। किओ कलकत्ता दिस चलि जाइत

तऽ किओ घरे पर अबैत अछि एहन लोक मोथीक पटिआ बुनैछ, सन-साबे की मूलकडोरी बँटैत अछि आने तऽ मांछ मारय बला टापी, गाँज वगैरह तैआर करैछ।

लेकिन हम कतहु नहि जाइत छलहुँ बीरी पीबैत छलहुँ तथा बाघ गोंटी खेलाइत छलहुँ। ईमानदार तथा मजबूत काठी छलहुँ, एहि सं मास पाछू पाँच-सात जनक योनि हमरा भेट जाइत छल। हमरा तऽ इ सोरहो छलैक जे बलचनमा खूब मन सं काज करैत अछि। एक जनक सवा जन अछि ओ। कतेक लोक कहइन दीन—गधा अछि, अक्किलक छुति नहि छैक। ओहि जन्म तेलीक बरद छल होएत! अच्छा भाइ, हम बरद रही, गधा रही। परंच तोरासनक बेइमान तऽ नहि ने छी, काम चोर तऽ नहिने छी, कोढ़ी तऽ नहि ने छी······असल बात ई छै मँयाजे काज करैत काल हम केहनो काज कऽ राखि दैत छलिऐक। जाइ तरहे अपन कार्य करैत छलहुँ तहिना दोसरक।

दोसर दिस सं जँ खराब अन्न देलजाइत छल तऽ हम फेरि दैत छलिऐक। मारि तऽ हमरा सं एकदमे नहि सहल जाइत। लूल-फ्तूरक जी हजूरी हमरा हेतु जहर माहूर अछि।

परंच कहओ-कहिओ झुकहु परैत। आब ओ जमाना नहि जे खाली ईमानदारी सं काज निकलि जाइत। चालाक आर चाँइ सभक चालबाजी सं बंचक हेतु चलाक रहब जरूरी भऽ जाइ छैक भैया।

भात, रोटी आ' एक मुट्ठी बदाम फाँकि कऽ कोनो तरहें गुजर करैत छलहुँ। माइयो खुशी छल, सुगनी सेहो खुसिये छलै आ' हम तऽ खुशी छलोहें एहि तरहें गिरहस्तीक तीन बरीख बीति गेल। बीच मे एक बेर बड़ बाढ़ि ऐल छलै मुदा हमरा ओकनिक खेत नहि दहैब, उपजो ततबा पहिने होई छल ततबा भेबे कएल। मुदा एक बेर बड़ जोर भूकम्प भेलै। ओहि बेर महतमा

गांधी सेहो एलाह, राधा बाबू सोसलिस्ट भऽ गेलाह। हम तखन ई सब किछु नइ बुझिऐ। ई भूइकम्प जे भेलइ से एखनो ओहिना मोन अइ आ' ओकर मोन पड़िते रोइयाँ ठाढ़ भऽ जाइये। माघक मास छलइ। करीब २ बजेक समय। बड़ आसमर्द हुअ लगलइ। हमरा घरक चार हिलऽ लागल। हम पुआर लग बइसल रही हमरे लग चुन्नी ओंडठल छल। हम दूनू गोटे गप्प-सप्प करइत रही। हम तऽ किछु नइ बुझलिऐ मुदा चुन्नी बाप-बाप चिचिआय लागल। इमहर सं मनियार कका चिचिआइत अंगना दिस भागऽ लगलाह।

हम चुन्नी सँ पुछलियै की बात छइ? ओ हमरा मुँह दूसइत कहलक, देखइ नइ छिहिन घर केना हिलइ छइ! जल्दी सं घर सं निकलि जो सहुँ बड़ बुरिबक छें। ई सुनितहि हमर हं ओ हाथ हेरा गेल। चुन्नी अपना घर दिस भागि गेल आ हम अपना घर दिस।

सुगनी भीतर सुतल छल, माए ओकरा जा कऽ बाहर निकालि नेने छलइक। पन्द्रह-बीस मिनट तक घर ओहि प्रकार डोलइत रहलइक। हाथी पर चढ़ने छी कहियो? नहि? अरे, रेलगाड़ी पर तऽ खूब चढ़ने छेंने? सोनपुर सँ जे रेलगाड़ी पहलेजा घाट तक जाइत छइक ओ कोन प्रकार डोलइत हिलइत चलइत छइक? बस, सैह बुझि लियऽ। ओहि सं किछु अधिके भैया।

माय आओर सुगनीक दिल सं नीफिकिर भऽ कऽ हम फेर मनियार काकाक मकानक दिस दौगलहुँ। हुनकर दू घर भीत बाला छलन्हि, दू ठाम भीत मे हल्लुक दरार पड़ि गेल छलैन्ह। बरेरी थोड़ेक अलग भय गेल छलन्हि। भीत के माथे पर सँ। बस, मनियार काकाक एतबे नोकसान भेल छलइन।

खैर, भगवान मालिक छथिन्ह सबहक। हमरा मुँह सं निकलल—कि ओमहर सँ रामखेलावनक छोटका भाई सुखवा दौड़ल आयल। हाँफति-हाँफति ओ बाजल बाबू भाई, मझिला मालिकक इनार पानि फेंक रहल छैक, बबुआ

पानि। आओर मालिक सभ कें कएटा मकान खसि पड़ल रहैन्हि, मरिसक किथी दबियो गेलन्हि······

हम आ चुन्नी दौरलहुँ मालिकक हवेली दिस पहिला बेर पहिने बड़का दिस गेलहुँ एतऽ हाहाकार मचल छल। डिप्टी साहबक नवकी घर वाली ओसर महलक नीचा मे सुतल रहथि। ओही वर्ष हुनकर दुरागमन भेल रहन्हि। निम्न टूटलन्हि तऽ जयमंगलाक मामा कें पैरक आहट सुनि कऽ घरे मे रहि गेलीह। ईंटक पुरान दिवाल रहैक भरभराऽ खसलइ से ओकरा नीचा मे पीचा कऽ मरि गेलैक। लोक कहुना ईंटा बाहर हटा कऽ ओकर अचेत देह के बाहर निकाललक। तुलसी चौड़ा लग उत्तर सिरहना मे सुता देल गेलइक। जयमंगला आओर ओकर माय भोकारि पाड़ि कऽ चिचियाय लागल। सब कें ठकमुरिया लागि गेलइ।

महपुराक खान बहादुर कें मकान सेहो खसि पड़ल रहन्हि। बल्ली बाबूक भोटिया घोड़ा दबि कऽ मरि गेल रहैक। गोसाईं पोखरिक उत्तर थोड़ेक दूर हटि कऽ जे मैदान रहैक ओहि मे खाधि भए गेलैक ओहि मे तीरी अमारक बाड़ी धँसि कऽ मरि गेल रहैक।

हमरा जवार मे बहुत हर्ज भेलइक। दश कोस पश्चिम, सीतामढ़ीक दिस तऽ एक तरहें प्रलये मचि गेल। सैकड़ो जान माल नुकसान भेल, पक्काक मकानक बस्ती पर पहाड़ पड़ि गेलइक। सरकारी बंगला, पोस्ट आफिस थाना, कचहरी, जहल, अस्पताल, इस्कूल (स्कूल) बेकार भऽ गेलइक। सड़क फाटि गेलइक, सरकारक मानू नाड़िए टूटि गेलइक। जे जहाँ रहए से सभ ओतहि कैद भए गेल। देवी-देवताक मंदिल (मन्दिर) तक साबित नहि बचलइक भैया। आओर की कहू। एमहर सीतामढ़ी ओमहर मुंगेर तक बेसी धक्का पड़लइक।

राजू सरकारो समहरि गेल। सभ दौड़लाह। राजिन्दर बाबूक छिड़ाई भेलन्हि। जवाहरलाल तक भोलन्टियर बनि कऽ सीतामढ़ी आबि गेलाह। बम्बईक सेठ खैराती होटल आबि कऽ खोलि देलकैक। कांग्रेस चन्दाक लेल अपील निकाललक तऽ करीब तीस चालिस हजार रुपैया जमा भए गेलइक।

पानि पीबऽ वाला पानीक स्वाद, सैकड़ो जगह खराप भए गेल रहैक। अजीबे गन्ह अबैत रहैक। पहिने छोट डोड़ सँ नाली नाके जवाब देत छल। जंगली खाधि मे भरि चौमासा घास-फूस, लत्ती-पत्ती नहि जानि की की सड़ैत छल, ओकरा लग सँ आयब तऽ नाक मूंन्दि लेबए पड़त। जूट आओर सनक पौधा कें पानि मे राखि देत छै। किछु दिनक बाद निकालति छिऐक तऽ ओतहु बड़ विकट गन्ध उठैत छैक···भूचाल (भूकम्प) जहि इनार कें खराब कऽ देने छलइक ओकरो पानि किछु ओहने गन्हाइत छलइक। हाय-हाय मचि गेलइक। सभ सँ जरूरी काज इनार सुखौनाई भए गेलइक।

कांग्रेस जे रिलीफ फण्ड खोललकैक ओकरा तरफ सँ इनार खुनएबाक लेल लाखोक रकम बाँटल गेलइक। हमरा इलाका मे रकम बाँटबाक काज फूल बाबू के हाथ सँ भेलन्हि। एमहर के गाँमक लेल हुनके अफसर बना कऽ पठाल गेल छलन्हि। रामपुर भारी आओर नामवर गाम ठहरल। बाल-बच्चा, स्त्रीगण पुरुख, धनिकगरीब, कुल मिला कऽ दू हजार आदमी बसैत छलैक। परंच भूकम्प सँ अहि बस्तीक एको इनार खराब नहि भेल छलैक। कुल बीस इनार छलैक। सुनलहुँ जे कि रिपोट मांगल गेल छलैक, छोटका मालिक आओर बल्ली बाबू, मुन्सी बिपिनबिहारीलाल दास सँ राय बात कऽक जिला कांग्रेस कमेटी के लिख देने छलखिन्ह। चारि इनार खराब भए गेलइ आओर बीस एक परिवार एहनो छल रहल होएतैक जेकरा थोड़ बहुत मदैत भेटक चाही।

किएक अपने खसि पड़लैक मकान सभ कें फेर ठाढ़ करक ताकत बेचारा सभ के नइ छैक······

फूल बाबू मधुबनी सँ टमटम पर अएलाह, सोझे जाकऽ अपन फूकाक घर उतरलाह। कहि देने छी, हमर छोटका मालिक हुनकर फूका अपेत छथिन्ह।

एक्के दिन ओ हमरा बस्ती मे रहल छलाह, हम जानि-बुझिकऽ हुनका सं नहि भेटल। मालिक सभक थीतए आओर बभनटोली मे एक चक्कर लगोएने छलाह ओ, संग मे ई ओवरसियर रहैन्ह।

जनैत छी, ओहि दिन फूल बाबू हमरा बस्ती मे किए कए आएल छलाह?

रिलीफ फन्ड दिश सँ भगवान जानी कतेक रकम अहि गाँमक लेल हुनका भेटल छलैन्ह परञ्च किछु दिनक बाद मुन्शी बीन बैठा सँ जे हमरा पता लागल बेह आहाँ के बुझा दैत छी। अहि सँ अहाँ के एतेक अन्दाज अवश्य होयत कि लाखोक ओ रकम लोक सभ मे कोन प्रकार बाँटल गेल होएतैक। लीअ सुनि लिअ भैया :—

१—बबुअन पाठकक नाम पर ६०। क रकम लिखल छलैक २०) भेटलैक।

२—दामो ठाकुर	,,	४०)	,,	२०)	,,	,,
३—मोसम्मात जानकी	,,	३०)	,,	१५)	,,	,,
४—तारानन्द झा	,,	३०)	,,	१५)	,,	,,
५—खोखाई मिसर	,,	२५)	,,	१०)	,,	,,
६—चतुरानन चौधरी	,,	४०)	,,	२०)	,,	,,
७—पचकौड़ी झा	,,	२५)	,,	१०)	,,	,,

क रकम लिखल छलैक ३) मिललैक

८—कैवल्लभ मल्लिक	,,	२५)	,,	१०)	,,	,,
९—धंमौल झा	,,	२७)	,,	१०)	,,	,,
१० —बचवे मिसर	,,	२५)	,,	१०)	,,	,,
११—मनियार गोप	,,	२५)	,,	८)	,,	,,
१२—छकौड़ी गोप	,,	२५)	,,	८)	,,	,,
१३—कपिलेसर मण्डर	,,	२५)	,,	८)	,,	,,
१४—तीरी अमात	,,	२०)	,,	६)	,,	,,
१५—कलर केवट	,,	२०)	,,	६)	,,	,,
१६—मोसोमात कुरवी	,,	१५)	,,	३)	,,	,,
१७—बुद्ध चमारक नाम पर		१५)	,,	,,	,,	,,
१८—शेख अब्दुल	,,	२५)	,,	८)	,,	,,
१९—करीम बक्श	,,	१५)	,,	३)	,,	,,
२०—मसमात हमीदा	,,	१५)	,,	३)	,,	,,

बुझलहुँ भैया, बीस आदमीक नाम सवा पाँच सौ रुपयाक खैरात लिखल गेलैक परञ्च लोक सभ के भेटलैक सिरिफ दू सौ छ रुपया। इनार-सुधारक नाम पर एक हजार रुपैया भेटलैक। एक-एक के अलग-अलग बजा कए फूली बाबू आओर दास जी रुपया बंटलन्हि। लोक सभ अकासी आमदनी बूझि कए दसखत कए देलखिन्ह, अँगूठाक छाप दए देल कैक। जेकर जेहन मुँह, जेकर जेहन आवाज, ओकरा ओहिना रकम भेटलैक। हमर मनियार काका चुपचाप लेने छलाह, चुन्नी खैराती रकम लेबक खिलाफ अपन राय प्रगट कए चुकल छल। मालिक हमरा नाए के सेहो पाँच रुपया देबए चाहैत छलाह। पूछऽआएल त हम डाँटि देलिएक। मोसम्मात चुन्नी कुगल दामतिक विधवा स्त्री छलैक, ओकरो खैरात भेटल छलैक। पूछला पर

बाजल बबुआ वाली, मुइकम ई की भेलैक, बड़का लोकक वास्ते आमदनीक एक टा आओर रास्ता निकलि गेलैक···

हसुआ छल हाथ मे; घास काटऽ जा रहल छलहुँ। नगीच आबि कए हमरा कानक दिस मुँह कए कऽ फुसफुसाएलऽ ई सभ जुलुम करैत छथि बेटा, दैत छथिन्ह दू ओर कागज पर चढ़बैत छथिन्ह दस। इमान-धरम हिनका सभ के छूबि गेलैन्ह, तेल जरैत तेलीक आओर कटैत मशालचीक। छोटका मालिकक सरबेटा आएल छल अफसर बनिकए ओ रात बाँटए। छुआए नहि हुअए, हजार पाँच सौ ओ जहर मारि लेने होएतैक···पता लगबिहैं बेटा हमरा नाम के रुपया चढ़ल अछि।

चाची कहलैंकि भेटल बतैक? हसुके हाथ सँ छाती ठोकि कए कुन्ती बाजल—हाय गोसंइयाँ लीने तऽ भेटल अछि।

हमरा तावे तक कोनो खास बात रिलिफक बारे मे कहीं पता लागि सकल छल। मुड़ी हिलबैत हम ओहि अनाथक दिस आँखि फाड़ि-फाड़िक देखए लगलहुँ। छन भरिक बाद बजलहुँ— जाए दीऔक चाची, की होअइत आब पता लगा कए? राकसक पेट मे जे गेल से गेल।

फूल बाबू के एहि बात सँ हमरा आओर घृणा भऽ गेल। कांग्रेसक विषय मे सोचऽ लगलहुँ जे स्वराज भेलाक पश्चात् बाबू-भैया सब अपना मे दही-माछ बंटताह, जे सब एखन मालिक बनल छथि सेह सब ने मिसरिया माल चरौताह। हमरा सबहक हिस्सा मे तऽ सिट्ठी परतैक।

राधा बाबू पर श्रद्धा बढ़ि गेल किएक तऽ ओ सोसलिस्ट भय गेलाह। बरहमपुरा मे जाइतऽ चारि दिन हम हुनका संगे रहो एहि बीच रहि आएल छलहुँ। ओतेक पैघ लीडर सँ बातचीत भला हम की करितहुँ, परञ्च देखलहुँ जे आब ओ धोती-कमीज पहिरए लगलाह अछि, दाढ़ी सेहो दिन पर बनबऽ

लगलथि अछि। सुनलिऐक जे आसरम छोड़िक शहरे मे डेरा जमओताह। स्वराज किछु समझदार छल, आब बएह राधा बाबूक संग रहैछ। ओकरहि सँ पता चलल जे कांग्रेसक अन्दरे हीनका सभक गुट छैन। एहि दल मे बूढ़ लीडर नहि छैक, सभ युवके छैक। गाँधी महात्मा सँ कोन बात मे सोसलिस्ट मेल नहि रखैछ? अंग्रेजराज मे कांग्रेसे चाहैछ ने सोसलिस्टे। परंच गाँधी महात्मा कल कारखानाक विरुद्ध छथि। ओ एकरो खिलाफ छथि जे सेठ जमीनदार, राजामहराजा सँ जमीन-जायदाद, धन-संपत्ति के छीन कऽ अन्य लोक मे बाँटि देल जाइ। बूँद भरि लहू नहि ओ बहबऽ चाहै छथ। मारि खाएब ठीक मारब नहि ठीक अछि। दबिकऽ-झुकिकऽ जेना होए तेना अपन बात बनाबी। सचाइ पर रहब तथा अपना मांग पर तऽ एक दिन जालिमक मोन अवश्य पिघल तैक···गाँधी महतमा नुकसान ककरो नहि चाहैत छलाह ने गरीबे के ने धनीकहिक। ओ अंग्रेज सँ सेहो कराइ बातो नहि करथिन। हुनकर कहब छलैन जे एक दिन अंग्रेजक मति फिरि जओतैक, तखन ओ अपनहि ई देश छोड़ि चल जएताह, हुनका अधिक परेशान नहि करिअउन।

एहि, पर भैया सोसलिस्टक की कहब? हुनकर कहब ई रहैन जे दू चारिटा साधु महतमा के कलपला सँ अंग्रेजक हृदय कथमपि नहि पघलतैक। सभ सँ जनता जखन भेद भाव छोड़िकऽ ठाढ़ होएतैक तखने अंग्रेज हटत। पांच जनता आपसी भेद भाव कोना छोड़त कोना कऽ एक होएत? लोक के जखन विश्वास भऽ जएतैक जे जमींदार महाजनक फाजिल धन ओकरहि भेटतैक तखन रोटीक प्रश्न तऽ रहिनइ जएतैक। बालबच्चाक पढ़ाइ-लिखाइ······ पढ़ाबक फिकिर···खान पान तथा रहन सहनक ठौर ठिकाना···दवाइदारु पथ पानिक इंतिजाम···एहि सभक हेतु सबटा हल्लुक भऽ जएतैक, दरभंगाक महराज होथि या पटनाक लाट साहेब—मुफ्त मे अन्न किनको नहि

भेटतैन...सभ काज करब आओर सभ दाम पाओत...एहन अपछु, बुढ़ बेकार सभक जिम्मेवारी सरकार के उठबए परतैक, पाइक बल पर किओ ककरो खरिदुआ गुलाम नहि बनतैक—सोसलिस्ट भाई, जकर हर-फार तकर धरती ! जकर हुनर जकर हाथ तकर कल-कारख ना !

रुपलाल कहलक—ई बालचन्द कमाय वाला छाएत...एकर चसले जे होव !

सोसलिस्टक विषय मे ओहि दिन जे किछु हम बुझलिऐक एखन ओतबहि सँ हमर हृदय उछलऽ लागल ! कहू ने भैया केहन बढ़ियाँ गप छलै। फूल बाबू पटना मे एक बेर नून बनाबऽ काल खूब पिटाएल रहथि, तैओ गाँधी महतमाक पंथक गप हमरा बूझऽ मे नहि आएल। एहि तरहे अहूँ पिटाइते बेदम भऽ जाएब, परञ्च एको बात बुझऽ मे नहि आएत।

राधा बाबूक एहन सन, बात विचार मे जे फेर फार भेलैन अछि ओहि सँ श्री हुनकर स्त्रीओ खुशी बुझि पड़ैत छलीह। घर आबऽ लगलहुँ तऽ बाबू कहलनि—की करैत छेँ गाँव मे बैसि क ?

बामा हाथ सँ ओ हमरा दहिना कान केँ नहू नहू मलऽ लगलाह। हम लजाकऽ ठाढ़ भऽ गेलहुँ। छन भरिक बाद ओ कहला—दू मासक पश्चात हम महपुरा आयबाक खबरि देबौक तऽ जरुर भेंट करिहेँ। हमारा सँ हम हँ कहि चलि अयलहुँ।

ओही मास गाँधी महतमाक अबाइ रहनि। हम चुन्नी तथा रामखेलावन हुनकर दरशन करऽ मधुबनी पहुँचलहुँ। भारी मेला छल पचास हजार लोक आयल रहथि महतमा के देखऽ। फूल-फल, केरा, अररनेबा (पपीता), हाथक काटल सूत, सुगन्धित धानक गाछ, सजमनि, भंटा······चढ़ाबक हेतु नइ कहि कोन-कोन किसीमक चीज वस्तु लोक लायल रहऽ। खद्दर भंडारक

लगक मैदान मे ऊँच जगह बनाएल गेल रहैक, ओही पर गांधीजी बैसल रहथि। हम सीसोक गाछ पर चढ़लहुँ तखने हुनका भरि आँखि देखलहुँ। रमखेलौना गाछ पर नहि चढ़ए जनैत छल तैं ओ उचकि-उचकि कऽ हुनका देखनि आओर अपनहि पर तमसाए। परञ्च एहि मे हमर कोन कसूर छल पलथा मारि कऽ बैसल छलाह महतमा हुनकर बोली हमरा कान तक नहि पहुँचैत छल। दहिना हाथ उठा-उठाकऽ अवश्ये किछु बेर-बेर बुझबैत छलखिन, से साफ देखाइ दैत रहै।

घर अबैत अबैत राति भऽ गेल रहै। माय खाऽकऽ सूति रहल छल, सुगनी हमर बाट तकैत छल। एहिना होइ छल। लाखो समझाबी बुझाबी पर ओ एहि बात हेतु राजी कहाँ रहय जे खाय पीबाक हेतु हमर बाट नहि ताकै जरकाला तऽ घंटोंहे भात ठिठुरिक चाउर भऽ गेल रहै।

खाऽपीकऽ निचेन भेलहुँ तऽ सुगनी के सेहो गाँधी महतमाक विषय मे बुझौलिऐक। ओहु ने ठहरल। ओरी भरि यदि कोनो नव विषय बुझाए तऽ ओहि मे सँ खोंटि कऽ बेचारीक कान मे जरुर खोंटि कऽ ध देबाक चाहिऐक, की विचार अछि बाहाँ केँ ?

पछिला बैसाख मे छोटकी मलिकाइनक बेटा केँ उपनयन भेल रहैन। खूब भोज भात खूब रमन चमन। हम और कझार दुनू गोटे मिलि कऽ आमक एकटा गाछ कटलहुँ ओहि मे दू तीनटा डारि छलैक फारि कऽ हम ढेरी लगा देलहुँ बीस पचीस मन सँ कम नहि छल होएतै। मालिकक घराना रहैक। काज परोजनक दिन छलइ। मालिक असगर मे हमरा सँ माफी मांगि लेलनि। ओहि वर्ष हमरा बहीनक संग ओहन व्यवहार कएलनि ओहि सँ हमर मोन फाटि देने रहथि। कोन मुँह सँ अपराधी हमरा सँ क्षमा मँगलक छा तऽ दंग रहि गेलहुँ। मलिकाइन पर हमरा ओतेक क्रोध नहि आएल जतेक

एहि पतित पर······उपनैनक दिन हमरा गुलाबी रंग सँ रंगल दूटा धोती हमरा मलिकाइनक हाथ सँ प्राप्त भेल। माय केँ बारह हाथक साड़ी भेटलैक सोलह टा तऽ छागरे मरल रहैक। चारिटा खस्सी पीटल गेल रहै। चारि दिन तक ओ हवेली मसुआइने महकइत रहै। भगवतीक पिंडक सामने देवाल पर खूनक फुहाराक चिह्न तँ एखनो तक देखबहक। हमर निरहुतिया ब्राह्मण के जे उपाय रहैन्ह तऽ बेटाक उपनयन खूब धून-धाम सँ करैं छथि। ढोल डाक, रसनचौकी, नटुआ, रंडीक नाच, कीर्तन, थियटर, भेँड़ाक लड़ाइ अकौं पंडित सभहक साश्तरार्थ (शास्त्रार्थ) "की नहि होइत छैक? सभ होइत छइक भैया। सभ सम्बन्धी बजाओल जाइत छथिन्ह, सम्बन्धक स्त्री सभ के सेहो लिआउन होइत छइक। गामक बिस कहियो-कहियो पड़ोसी गाम सभहक बिरादरी के भँगाओल जाइत छैक। छोटका जातिवालाक कसं मे हुनकर बड़ऽ आओर बाँचल खुचल या अधिये पड़इत छन्हि। एसो वएह भेलैक अन्नि भैया।

फूल बाबू आब भाड़ी लिडर भऽ गेल छलाह, साइकिल सँ अएलाह, मँड़वा पर थोड़ेक काल बैस कऽ जनेउक (उपनयनक) रसम रिवाज देखैत रहलाह आओर उठलाह तऽ घेर-घेर कऽ मलिकाइन असखेँ करएलखिन्ह।

फेर ओ लगले चलि गेलाह। हुनकर माय के लिआवन भेल छलन्हि। ओ पाँच छः दिन रहल छलखिन्ह।

किछु आओर खेत हम बँटाई पर लेने छलहुँ। फुदन मिसरक विधवा जानकी अपन खपसाक जमीनक एक भाग हमरा बँटाई पर दऽ देलन्हि। ई चारि कट्ठा जमीन छलैक। जहिया सँ मिसर मरलाह तहिये सँ छकौरी चाचा अहि खेत केँ उपजबैत आयल छलाह। सूखल होइक चाहे महीनो भरि मेघ बरसैक, ई जमीन कहियो धोखा नहि दैत छलैक। कट्ठा मोन धान होइते

छलैक, समय साल अगर बढ़िया भेलैक त फेर पूछु नै, तखन तँ आड गोन सँ कम उपजिते नहि छलैक। मगर दू-तीन बरख सँ ई छकौड़ी चाचा सँ सम्हरि नहि रहल छलैन्ह। दू जवान लड़का बंगाल मे नौकरी पर छलन्हि। काज चलबक जोग रुपया पठबैत रहैत छलन्हि। अपन उमर सत्तर पार कए गेल छलन्हि बेचारे कए बेर रास्ता छेंकि कऽ हमरा कहलन्हि तऽ हम तैयार भए गेलहुँ बात ई छलैक कि हमर बाप गाढ़ समय पर छकौड़ी के काज आयल छलखिन्ह। गाय बाँधल छलैक। सावनक मास, रातुक समय। करैत आबि कए बेचारी के डसि गेलैक। जहर नस-नससे पसरऽ लगलैक, गाय रहि-रहि उठैत छलइक। छकौड़ी ताड़ी पीकए ओहि दिन बेहोश पड़ल छल। स्त्री बाल-बच्चा लऽ कए नहर गेल छलैक, माएक सराध मे······ भोर होइते-होइते अभागल जीवक प्रान छूटि गेलैक। छकौड़ी के गोवधक परासचित लगलैक। बैह पण्डित बबुअन का पचास-रुपया लेलखिन्ह तखन जाए कए पतिया लिखल गेलैक। सिमरिया घाट (गंगा) जाए पड़लैक, मथ टीक केश कटबऽ पड़लैक, बालु-गोबर खाए पड़लैक, दान-दच्छिना करबए पड़लैक, घर लौट कए सतनरायण भगवानक कथा सुनलैन्ह। बिरादरी क आओर समाज के तखन जाए कऽ छकौड़ीक छुअल पान-परसाद गरहाज (ग्राह्य) भेलैक। आओर भैया, हमर बाप एहन समय पर सँ टाका नहि देने होयतैक तऽ छकौड़ी चाचा रामपुर छोड़ि-छाड़ि कऽ भागि गेल रहितथि। बाबू हमर टाका सँ दू साल पर आएल छलाह। छकौड़ी आबि कऽ हुनका पैर पर खसि पड़लैन्ह आओर कनैत बजलन्हि—लालचन, जे चाहऽ से लिखवा लिहऽ। नहि नै करीहऽ नहि तऽ कपार फोड़ि लेब आओर मरि जाएब, तोरे सामने। चलिकऽ अहि पाप सँ हमर उद्धार कए दैह।... बाबू चुपचाप भीतर अएलखिन्ह, सैय टा रुपैया लए कऽ ओकरा हाथ पर

देखलखिन्ह—दादीक मुँह सँ ई सभ हम सुनने छी। से छओड़ी आब ओही उपकारक बदला चुका कऽ अपन माथा के हल्लुक कए लेलन्हि। ओना ई कर्जा ओ हमरा बाबू के जीबिते जी चुकता कए देने छलखिन्ह।

पाँच कट्ठा खेत वाली ठाकुरक हमरा पास ओहिना आबि गेल छल। बटाइयो लोक ओही खेतिहरके देबए पसन्द करैत अछि जे मेहनती आओर ईमानदार होइक। ठाकुर गाँम मे आ... छल पाछू छ ओ महीना नहि रहैत छथि। घर वाली नइहर गेल छलैन्ह, ओतऽ हैजा फैललैक तऽ ओकरे लपेट मे आबि गेलैक बेचारी। दस सालक एक बेटा छलैन्ह ओकरा कतऽ-कतऽ लेत फिरतथिन्ह ? हारिकऽ ओकरा ममिहाल मे छोड़ि एलखिन्ह। जमीन जाल मानू लिए छलैन्ह। इएह पाँच कट्ठा मिट्ठा खेत, घर-आँगन-बाड़ी, बँस-बारि, कलकतिया के छ-सात गाछ, बस। लोक कहैत छन्हि, ठाकुर दारुओ पीबैत छलाह। हम कहियो नहि देखलिअन्हि, हँ भांग ओ जरूर पीबैत छलाह। एकबेर की दिन मे दू-दू बेर।

हमरा पर खूब खुशी छलाह। पाछू चलिकए अपन घर-आँगनक रख-बारीक भार हमरे देलखिन्ह। बाहर सँ अबितथि तऽ हमरा लेल कमीज-कुर्ता या बनियानि जरूर लबितथि। एक बेर हम कहलिअन्हि—ई की देत छी मालिक, धोती दीअ।

पहिरल के छुबि कऽ बजलाह—गाढ़ रंगक ई तऽ हमरा पसन्द आयत नहि तक फेर सादा निकालि कए राखब, तऽ लीहऽ कालिह।

अगिला दिन फस्ट किलासक एक धोती ठाकुर देलन्हि तऽ हमर बाँहि फुलि गेल, मोने-मोन बजलहुँ—एँ एहन बढ़िआँ धोती पहिर कऽ द निकलबैं ?

ओ हमरा छूट दए देने छलाह—चाहे जेतेक बाँस काटिलिऔक मुदा अपने मतलब के दोसरक लेल नहि, आओर ने बेचए बलाक लेल ! हमहूँ साल

भरि मे मुस्किल सँ चारि-पाँच सँ बेसी बाँस कटैत रहल होएबैक।

उपजक अपन हिस्सा ओ नगदे लेनाइ पसन्द करैत छलाह।

राधाबाबूक खबरि लए कऽ एक दिन महपुरा सँ एक बूढ़ पासी आएल तऽ हम ओतए गेलहुँ। ओहि बस्तीक डाक्टर रहमान इलाका भरि मे मशहूर छलाह। राधाबाबू हुनके ओतए ठहरल छलाह।

जमींदार खान बहादुर साबुल्ला खाँ छलाह। रैयत हिंदू-मुसलमान सभ जातिक छलैक। आठ-दस मौजेक मालगुजारी अबैत छलैक। ओ खुद ढाई तीन सौ बीघा रखने छलाह, बाकी हजारो बीघा जमीन मनखप लागल छलैन्ह। मनखप बुझलिएक भैया ? नहि ? अरे भाई, उपजक सोलहम-बीसम या दसम हिस्सा मालिक वसूल करैत छथिन्ह।

महपुरा के छोट औकातक तीन सैय खेतिहर खान बहादुरक हजार बीघा जमीन पुस्त-दर पुस्त सँ हुंडा जोतैत आएल छलाह। आब काँग्रेसी अमल (शासन) आबए बला छलैक। तरह-तरहक अफवाह फैलैत छलै। खान बहादुर पहिने सँ चौकन्ना भए गेल छलाह। ओ अइ कोशिश मे लगलथि कि एकक ओतक खेत दोसरक नाम सँ बन्दोबस्त होइत चलि जाइ। गुपचुप चारि छ बन्दोबस्त भइयो गेल छलैक।

खेतिहर सभ मे कुनमुनाहट आएलैक। हुनके दिस सँ डा० रहमान जिलाक काँग्रेसी लीडर सभ के पास पहुँचलाह। मुदा महतमा जीक चेला लोक उनटे रहमान साहेब कें शांति आर संतोषक शर्बत पिया कऽ चुप बैस रहलाह। एम्हर खान बहादुर नहि बैसल रहलाह, भीतरे-भीतर जमींदारी दाँव-पेंच हुनकर चढ़ि गेलन्हि। गरीब-किसानक ई जमीन अपना-अपना नाम चुप-चाप लिखा लै छलाह ? बड़का-मझिला किसान जे अकसर हमरा दिश के बाभन भूमिहार, शेख आओर सूँड़ी महाजन होइत छलाह—सेह इहए

चाहैत छलखिन्ह गरीब सभहक मुट्ठी दू मुट्ठी भात कें। डाक्टर रहमान कहाँ तक बेलल रहितथि, गरीब लोक हुनका बेना बेलऽदितैन्ह राधा बाबूक संग हुनकर पटना कम्प जहलक होयत छलेन्ह। पहुँचलाह सीधे हुनका पास! आहि दिन सोशलिस्ट सभ मे बड़ गर्मी छलैक मैया। ओ जे किछु कहैत छलखिन्ह ओकरा करक कोशिश हुनका दिस सँ होइत छलेन्ह। मजदूरक हड़ताल होइक चाहे किसान सभहक आन्दोलन—सोशलिस्ट भाई ओहि मे आगू बढ़ि कऽ हिस्सा लैत छलाह। से, राधा बाबू डाक्टर रहमानक बात मोन लगाकऽ सुनलखिन्ह आ खान बहादुरक खिलाफ लड़ाई शुरु करक रास्ता बता देलखिन्ह। किसान सभहक संगठन अखबारे मे जमींदारक जाली कागजक प्रचार, कम सँ कम पच्चास मोतीँटियर सभहक बहाली; बीस-पच्चीस मोन अनाज आओर बेस टा रुपैया, इलाका भरिक किसानक एक भारी मीटिंग···

डाक्टर रहमान महदूरा घूमि अएलाह आओर किसान सभ के सभ किछु बुझा देलखिन्ह। लोक लगले राजी भए गेलैक! ओहि जालिम जमींदारक मुकाबला असगरे तऽ कियो कए नहि सकैत छलैक? ओकरा पीठ पर थानाक दरोगा साहेब छलखिन्ह, दरभंगाक कलक्टर साहेब छलखिन्ह, इलाका भरि के जमींदार, पण्डित आओर मौलवी साम—खान बहादुरक पक्ष मे छलखिन्ह। पच्छिमक दस लठैत जवान, नेपालक पाँच खुखरी बहादुर······ एक ताकतवर छल—खान बहादुर। असगरे कें ओकरा सँ भिड़तैक? परञ्च बेस टा लाठी एक ठाम भऽ जाइक तऽ ओकर एक भारी बोझ बनि जाइत छैक। अपन-अपन घरदीक हिफाजतक लेल किसान एक होअए लगलाह। पहिने हुनका दिस सँ रहमान साहेब जमींदार के कए बेर बुझा चुकल छलखिन्ह, आब कोनो रास्ता नहि छलैक। रैयत सभ तय कऽ लेलकैक कि लाश खसए तऽ खसए, मगर अपन खेत दोसरक दखल मे नहि जाए देबैक।

किसान क दिस सँ बहुत अधिक तैयारी भऽ चुकल रहैत ओ इलाका भरि मे नोटिस बँटि गेल रहैक। राधाबाबू मिटिंग सँ दुइ दिन पहिनहि आबि डटलाह।

हमरा देखितहि बजलाह—एहि बेर हमरो जहलक खिचड़ि खाय परत।

एतेक कहि राधा बाबू मुस्कुरलाह आओर नजरि मारि कऽ एक टा मुँहगर आदमी दिस हमर ध्यान खिचलनि। फेर कहलखिन—ई रहल बलचनमा रहमान साहेब एकर नाम लीखि लिओक स्वयंसेवक मे।

खादी क उज्जर पैजामा, चरिखाना कमीज। मोंछ रहैक परंच दाढ़ी साफ। केश औंठिया रहैक। ओहि समय हुनका हाथ मे खनेवाक रहै, पैखाना जाइ छलाह होएत। खूब हँसिकऽ आस-पास मे सोरमचा कऽ कहलनि, की लीखि दिओक नाम?

कहि तऽ देलहुँ एक बेर—चश्मा खोजैत राधाबाबू हाथ मे लैत बजलाह, लाव पोखरि दिस सँ भऽ आउ तखन। धोतीक कोँछ सँ ओ चश्मा साफ कएलनि, ओकरा नाक पर बैसबैत बजलाह—तीन दिन तक तोरा हम अपनहि संगे रखबौक, फेर छुट्टी। जो आश्रम देखि आ।

तऽ की एतहु आश्रम छैक? हम चौंकिकऽ एम्हर-ओम्हर देखऽ लगलहुँ। पास पड़ोस मे साफ सुथरा मकान रहैक। छोट-छोट। रास्ता पर दुइ तीन जगह मुर्गा देखाइ देलक, दू एक मुर्गीओ छलैक। कनीक हटिकऽ मीलक ओहि कात कारी कुतिया पीयर हड्डी चिबबैत छल। बथान पर नादि मे चारि टा मस्त बरद मुँह लगौने भूसा सानी खाइ छल। दोसर दिस गोला रंगक घोड़ी बान्हल छल। भूसीक ढेरी दू एक टा हर। बैसक मे दुइ गोट कुर्सी। एक टा साधारण अलमीरा बन्द। तख्ता पर दबाइक गोली भरल किछु शीशी, रबरक नाली (आला) आओर उज्जर डिब्बा खूटी मे टाँगल छलैक

भैया आखिर डाक्टरक बैठकखाना छलैक कीने? अपन-अपन औजार ककराघर नहि रहै छैक?

जे हमरा घर सं बजाय अनने छल, बएह लऽ अनलक अछि आसरम दिस। गाँवक एकदम बाहर, बगीचाक लग।

दूरे सँ देखलिऐक जे बाँसक छोर पर झंडा फहराइत रहैक। लग जाकऽ नजरि ऊपर कऽ कऽ देखलहुं तऽ लालझंडा पर दुइ हथिआरक चिन्ह देखाइ परै लागल— एकटा निशान छलै हँसू आओर दोसर हथौरीक...हँसुआक मूठ पेट पर हथौरीक माथा।

आश्रम की छलै, फूस घासक टेम्परेरी झोपड़ी रहैक! खाकी जंधिया आओर लाल हाफ कमीज पहिरने दुइ टा नवजवान बैसल रहै। ईंटक चुल्हा माँटिक हाँड़ी मानेस बनैत छलै खुद-बुद खद्-बद खुदबुद, खदबद। बूढ़ ब्राह्मण बापक बिना बेटी जकाँ आमक सुखाएल डारि, फाटल सुखाएल बाँसक लग जरैत रहै ओकर धुआँ सेहो ओहने कड़ा रहैक।

स्वयंसेवक भइया सं बरी कालतक बात करैत छलहुं। हुनका संगे हम जल्दिए हिलि मिली गेलहुं। ओ रोजी रोटीक लड़ाई मे बहादुर छलाह। सोसलिस्ट पार्टी हुनका दरभंगा पठओने रहइन। हमरे जेंका ओहो सब गरीब माय-बापक पूत छलैक। एकटा ब्राह्मण दोसर गोआर। अवस्थो सबैक हमर ओहिसं कम ओकर सभक नहि छलै। ओकरा मे ओतऽ जाति-पाँतिक भेद-भाव नहि छलै। एकक नाम दिनेश छलै दोसर के सुरजा। दिनेश हमरा चूरा फाँकऽ क हेतु देलक आ कहलक—भूख लागल होएतौक कामरेड! धऽ ले ताबे तक पेट मे किछु।

कामरेड—ई शब्द तऽ हम कहियो सुननहुं नहि छलिऐक। आजक खातिर ओहि दिन ओकर मतलब हम बुझि नहि सकलहुं, परंच दू दिनक बाद

पता चलल जे कामरेडक मतलब छइक लड़ाइक साथी। एके मोर्चाक दू फौजी जवान एक दोसर के कामरेड कहिक शोर करैछ। अपना हकक हेतु लड़ऽ बला हमरा गरीबक लेल कामरेड सं बेसी कोनो लबज (लफ्ज) नहि अछि।

थोड़ेक कालक बाद हम राधा बाबू लग घूरि चलि अएलहुं। हुनकर धोती कमीज के साबुन लगाकऽ खींच देलिऐन। बाहर कपड़ा पसारिते रही कि इम्हर भोजन हाजिर भऽ गेल। बरहमपुरा आश्रम मे केवेको मास रहि चुकल रही, मुसलमानक संगताइ मे परहेज तऽ नहि रहै मुदा डर रहै जे कोनो बेरादरी देखि लेलक आओर ई खबरि गाँव घर मे पहुँचि जाएत, आओर एकटा बखेरा बेकारे उठि जाएत। तैं थारी उठाकऽ बैठकखानाक अन्दर बला कोठली मे चलि गेलहुं, ओतहि खएलहुं खेसारीक दालि आओर भात रहैक, तरकारी छलैक रामझिमनी (तोरइ) क। भइया मुसलमानक ओहि ठाम जेहन मानस होइ छइक तेहन कतहु ने!

माय के खबरि देबक हेतु छुट्टी मंगलहुं तऽ बाबू कहलथि :—हँ? हम जनैत छी जे तू ककरा खबरि करऽ लेल छुट्टी मंगै छे। हम लजा गेलहुं आओर आँखि नीचा कऽकऽ बिदा भऽ गेलहुं अपना गाँव दिस।

●

८

मीटिंग मे चारि सौ के करीब लोक आएल रहथि। आभनक सभ बला मैदान मे सभा भइये नहि सकै छए, बगीचो मे नहि। खान बहादुरक मनेजर ओतऽ एहन सभा पर अपना कटैत सभके जमा कऽ देलकैक। आब की छलऽ की आब मीटिंग नहि होएतैक। नहि, भेलइ! आओर शानदार मिटिंग भेलैक।

अधेड़ उमरक एकटा आदमी लोक के ललकारि कें कहलकैक—ओ अछि हमर खेत, पाँच कट्ठाक टुकरा छैक। औहि मे मरुआक गाछ लहलहा रहल छैक...आउ भइया, ओतहि मिटिंग होयत। आउ मरुआक काटिकऽ ओतहि बैसबाक जगह बना लइव छी...बिजलीक फुर्ती सँ ओ आगू बढ़ल। देखिते-देखिते पचीस-तीस टा हाँसूओ आबि गेल आओर लोक गाछ काटए लगलैक। किसान मे भारी जोश उमरि गेलै। आध घंटाक अन्दर समूचा खेत साफ भऽ गेलै। बीचोबीच तख्तपोश धऽकऽ लीडरक लेल जगह बनाएल गेलै आओर मिटिंग के कार्य शुरू भऽ गेल।

भैआ ओ कोन आदमी रहै जे अपन हरियरे फसिल बरबाद कऽकऽ मिटिंग हेतु जगह बनौलक?

ओकर नाम लतीफ छलै। मेहनती, गरीब आओर ईमानदार। कुल डेढ़ बीघा जमीन जो जोतै। पैघ-पैघ नेताक त्याग तपस्याक खिस्सा तऽ सुनने होएबह, परंच महपुराक गरीब किसान के एहि त्याग के भला कोन चर्चा देबहक? हरिअर फसिल कटबाक समय हमर तऽ आँखि छल-छला गेल भैया! हम तऽ सपनो मे एहि तरीकाक गप नहि सोचि सके छलहुँ।

लीडर पाँच गोटे आएल रहथि। पटना सँ स्वामी जी, गया सँ शर्माजी, मुजफ्फरपुर सँ मिसिरजी, कतहु के एक टा आओर बाबू छलाह, समस्तीपुरक गंगा बाबू आओर राधा बाबू! स्वामीजी छोट कद के कनीक पिंडश्याम रंगक आदमी छलाह। कपड़ा गेरुआ रंगक रंगल। बाजऽ काल एना बुझाइन मानू खापड़ मे मकइक लावा फूटि रहल हो।

भोजन फल, दूध बस। हुनका लेल पाँच सेर दूध पाकल केरा एक घेर आओर पथिआ भरि संतोला-नेबू आएल रहैक। खाइतो खूब रहथि मोंगिंदर बुझिलिअ। खाय बैसला तऽ एके बेर पतेक संतोला खाऽ गेलाह जे सामने मे सीठी और छीलकाक ढेरी भरि छाती लागि गेल। मुदा, मीटिंग मे स्वामी जी चिचिएला सेहो खूब। मय खान बहादुर, मय दरोगा जी, मय एस० डी० ओ०, मय कलट्टर जी सभ के ललकारलखिन्ह। महाराज बहादुर के एहन रगड़लकैन्ह, की बताउ। सरकार के सेहो खूब छीछालेदर केलखीन्ह स्वामीजी। पटना सँ दूटा अफसर रिपोर्ट लेबए आएल छलैक, जो स्वामीजी के लेक्चरक एक-एक अच्छर लिखैत छलाह—खान बहादुरक ड्योढ़ी सँ हुनकालेल टेबुल आएल छलैन्ह। हुनके लेल किएक, दू कुर्सी आओर एक टूल (स्टूल) आओर सेहो मंगवाओल गेल छलैक। कुरसी सभ पर एस० डी० ओ० आओर डिप्टी मजिस्ट्रेट बैसल छलाह, टूल पर खलीफ़ीक दरोगा जी।

स्वामी जी किसान सभ सँ कहलखिन्ह—"बाहरी लीडर सभ के भरोसे नहि रहू, अपन नेता अपने खुद बनू। मंगनी आओर उधार के बाहरी नेता

बहुत देखलहुँ, मगर किछु भेलइ-तेलई नहि। मानलहुँ कि नेता पढ़ल-लिखल होइत छथि आओर अहाँ अपढ़-अनजान छी, परञ्च गहुम-चाउर, दूध-घी, तिलहन-दूर सभ किछु अपने उपजबैत छी, लीडर लोक तऽ अहाँक कमाईक हलुआ खाए कऽ लेक्चर देबऽ आबैत छथि आओर अपन दिमाग व पेटक बदहजमी मेटबैत छथि। अहाँ अपन अकिल सँ एतेक तऽ जनिते छीएक कि लेक्चर चाहे लाख देल जाइक, हुनका सँ ने एक दाना चाउर उपजाओल होइत छन्हि, ने गहुँम आओर ने घीवे दूध। लेक्चर सुनि कऽ भूख-प्यास नहि मिटैत छैक। अहाँ सभ लीडर सभ सँ लाख गुना बढ़ियाँ छी। अहाँ सभ किछु उपजबैत छी तऽ अपन लीडर सेहो अपने ओहिठाम पैदा करू। जे अहाँक आदमी होएत वैह अहाँक तकलीफ के बूझत, जाके पैर न फटी बिवाई से की जाने पीर पराई।.........कांग्रेस अहाँक दुःख दर्द की बूझत? ओ खादी पहिर कऽ आओर गर मे माला पहिर कऽ जमींदार सभ के जहल पठए- बाक नाटक करैत अछि। पाछु जहल सँ निकलल वैह जमींदार कांग्रेसी अहाँ सभ के शांति आओर संतोषक पाठ सिखबैत फिरैत छथि......खबर्दार! भाई, एहन लीडर सभके फेर मे कहियो नहि पड़ब.........अहाँ असगरे नहि छी, करोड़ोंक तादाद अछि अहाँक। अहाँ जखन ठाढ़ भए जाएब आओर एक कंठ भए हुंकार—करबैक तऽ जालिम जमींदार सभ के कलेजा दहलै लगतैक। ओ छथिए कतेक, दालि मे नून के बराबर। ओ अपन बल नहि, सरकारी अफसरक बल पर जुलुम करैत छथि। अहाँ सिर्फ तीन काज करू— संगठित भए कऽ एक भए जाउ, प्राण जाय तऽ जाय मगर जमीन नहि छोड़ू, आओर अदालति—कचहरीक इर्द गिर्द कहियो नहि जाउ.........किसान सभा अहाँक मदैत करत, बाहरक किसान लीडर अहाँक बीच अबैत जाइत रहताह। किसान भाई, आब अहाँ जागि गेल होएब। खान बहादुर होअए चाहे महराज बहादुर कियो अहाँक हक नहि छीन पाओत। अहाँ अपन ताकत के चिन्हू, बाबू सभ मिलि कए' इन्किलाब—"

जिन्दाबाद!—लोक सभ मिलि कऽ अवाज लगलकैक। सभ के मुँह पर तेज वर्तमान छलैक, आँखि चमकि रहल छलैक। खासी देर तक बाजल छलाह, किसान सभ दम साधि कऽ सुनलन्हि।

खानबहादुरक मनेजर लोक सभ के बीच चारि छः बदमाश सभ के बैसा देने छलैक। शुरू-शुरू मे ओ सभ 'महत्मा गाँधी की जय,' 'भारत माता की जय' आओर 'स्वामी जी बैस जाउ' वगैरह किछु आवाज लगलकैक तऽ किसान सभ के बड़ तामस भेलन्हि, बाँहि पकड़ि-पकड़ि कऽ ओ सभ गुन्डा सभ के बैसा देलन्हि। लोक सभ के नराजी आओर कड़ा रुख देखि कऽ फेर हुनकर हिम्मते नहि भेलन्हि।

स्वामीजीक बाद शर्माजी उठलाह, गया वला। लम्बा कद, पिरसियाम सूरत। बेतरतीब केश। देह पर कमीज, कुर्ता या गंजी किछु नहि छलन्हि। अढ़ाई तीन गज कपड़ा, डाँड़ सँ लपटल गेल छलन्हि। ओ कहलखिन्ह—

रहिमन चाक कुम्हार के माँगे दिया न देय
छिद्र मे डंडा डालि के जो चाहे गढ़ि लेय

"किसान भाई, मंगला सँ किछु नहि भेटत। अपने ताकत सँ अहाँ अपन हक पाबि सकैत छी। अहाँक ताकत की अछि? एके अछि अहाँक ताकत, संगठन। घर मे कनैत-कनैत अजगरे हाय हाय करैत करैत हजारो साल बीति गेल। सरकार के अहाँक रत्तियो भरि परवाह नहि छैक। ओ अहाँ सभ सँ नहि, चोर डाकू सभ सँ घबराइत अछि। हुनका पक्का मकान (जहल) मे हिफाजत सँ रखैत छैन्ह। खेनाई पीनाईक, पहिरब-ओढ़ब, दवाई दारूक हुनका लेल सभ इन्तजाम सरकार करैत छैक। मगर गहुँम बासमती उपजा कऽ

दोसर सभ के लुटबऽ बाला अपने खुद मरैत छथि। सरकार के आहाँक कनिओ फिक नहि छैक। ओ मानू खुद इशारा करैत छैक किसान सभ, चोरी कर आओर डाका दे तखने लीडर खुश होयतीह''......

शर्माजी फुफकैत कहलखिन्ह—''जमीन्दार बड़ प्रपंची, बड़ जालिम होइत छैक। अव्वल (अव्वल) तऽ पहिने तोरा अन्दर अपने मे फूट करबाक कोशिश करैत होयतौह, नहि, तू सभ अपन जमीन पर डटल रहि गेलें तऽ ओ पैसा बला कें तंग करतैक। अफसर सभ सँ मिलि कऽ ओ तोरा सभ कें कहला मोताबिक कोशिश करतौक···सम्मन, नोटिस, वारंट सजाय सभ भऽ सकैत छैक आर खबरदार, अपना खेत सँ नहि हटब। भुलाबा मे नहि पड़ब आओर कचहरी जा कऽ गलती नहि करब। पुलिस आओर हाकिम सभ सँ साफ कहि देबैक कि अही खेत सभ कें जइहल बना दियौक, हम पड़ल रहब, भागब नहि। ओहि जइहल मे तऽ जेबाक अछि तऽ सभके लऽ जयियौक···बाल बच्चा, जवान वृद्ध, मर्द औरत, गाय-बरद, भेड़-बकड़ी, कुक्कुर-बिलाड़ि, चूल्हा-चक्की,···हमर सभ वस्तु सभे जायत। तखने हम जइहल जा सकैत छी नहि तऽ टस-सँ-मस नहि होयब···जे करबाक हो, सएह करू। आओर अगर पुलिस बला खामखा पकड़ऽ चाहए तऽ वृद्ध, बच्चा मर्द औरत एक दोसर के बहिंया जकड़ि पकड़ि कऽ पड़ि जाय पड़त। सैंयो आदमी के लऽ जेबाक हेतु हजारो सिपाही आओर पचीसो लारी (बस, ट्रक) चाही···फेर देखबैक के अहाँ सभ कें केना कतए लऽ जाइत अछि। आर आहाँ हमर ई बात मानि ली आओर डटल रहक निश्चय कऽ ली त फेर आहाँक खेत पर सँ आहाँ कें हटबए बाला ताकत अहि दुनियाँ मे नहि छैक। जमींदार, सरकार, पुलिस गुन्डा···सभ थाकि कऽ बैठ जायत।''

एकर बाद नारा लगलैक—कमाए बला खायत···एकरा चलते जे किछु

होइक। इन्किलाब···जिन्दाबाद। जमीन केकर···जोतए बोअए ओकर। अंग्रेजी राज्य···नाश हो। जमींदारी प्रथा···नाश हो। किसान सभा जिन्दाबाद। लाल झंडा···जिन्दाबाद। इन्किलाब···जिन्दाबाद।

फेर बाँकी लीडर बजलाह। अन्त मे डाक्टर रहमान महपुरा जमींदार खानबहादुर सनुल्ला खाँ के अगाह करैत कहलखिन्ह कि ओ अपन जालिमाना चालि सँ बाज नहि अयोताह तऽ इलाकाक एक एक किसान आगू बढ़तैक आओर हुनकर होस ठीक कए देतैन्ह···दरोगा आओर एस० डी० ओ० सँ सेहो डाक्टर रहमान साहब कहलखिन्ह—एको बुन्द सुनित (खून) खसतैक तऽ ओकर जिम्मेवारी अहाँ पर होयत। किसान के धमकाबए सँ पहिने आहाँ खान बहादुरक लठैत सभ कें रोकिऔक जे खुलेआम गारि बकैत घूमैत अछि।

राधा बाबू रहमान साहब सँ पहिने जिला के अफसर सभ कें फटकारि चुकल छलखिन्ह। तीन घंटा तक सभा चलइत रहलैक। खतम होअए सँ पहिने एक नौजवान गीत गओलक—

> दुर्दिनमा केलक हरान रे, फिकिरिया मारलक जान।
> करजा करिकेँ खेती केलूँ भरि गेलई सभ धान—रे फिकि०
> बरद बेचि रजवा के देलूँ, छोड़ए नहि बइमान
> जमींदार के जुलुम रोकऽ, चेतऽ भाई किसान—रे फिकि०

गाँव के गरमा कऽ लीडर लोक अगिले दिन चलि गेलाह।

हमरो बस्तीक पन्द्रह-बीस किसान सभा देखऽ आयल छलाह। किसान सभाक गर्मी रामपुरक लोक सभ मे सेहो किछु आबय लगलैक। मुन्सीजीक बेटा थोड़-बहुत अंग्रेजी पढ़ि लिखि कऽ बेकार बैसल छलइक। ओहो लीडर सभक भाषण सुनि आयल छल। आओर राधा बाबू सँ किछु बात सेहो ओ कएने छल।

महपुराक किसान सब भितरे-भितर निश्चय कएने छल जी जे अपना नाम सँ खेत लिखा लेने अछि ओ खेत सभ के आवाद करए तऽ करय दियौक, परंच फसल हमही काटब। परंच जमींदारक तरफ सँ कोनो किसानक खेत आबाद नहि कएल गेलैक। लोग बुझि गेलैक जे फसले पर धावा मारऽ चाहैत छथि।

हमरा बस्ती के मालिक के सेहो कान ठाढ़ भए गेलैन्ह। एक-दू-क एतहुँ हेर-फेर शुरु भेलैक। सर्वे के समय मालिक के परदादा आओर बड़ी बाबूक दादा किसान सभ के ओतेक हजारी बीघा जमीन के बकाश्त के तौर पर दर्ज करा देने छलखिन्ह। बुझऽ वाला किसान दस पाँच छलाह जनिका काश्तकारी हक सर्वे मे कायम रहल छलैन्ह। आम किसानक लगान देत आयल छलखिन्ह परञ्च रसीद लेबाक जरूरत ओ कहियो ने बुझलखिन्ह। बात टरैत छलैक त कहितथिन्ह—मालिक बेईमानी थोड़े करताह।

पाँच-एक सै बीघा जमीन छोट जात बला के संग छहनो छलैक जेकर दर मानहुंडा छलैक। फी बीघा धान दू मोन, रबी खरीफ एक मोन। रसीद एकरो नहि भेटैत छलइक। अलावा एकर किसान हजारो बीघा बँटाई सेहो जोतैत आएल छलाह।

मालिक सब सूद दर सूद मे बेचारा किसान सबहक खूब लूटैत छल खन्ह। अनाजक ओ रुपैया जमराजक समान असूलैत छलखिन्ह। मगर आब किसान महपुराक दिश नजरि लगौने छल आओर मालिक सभ के नजरि सेहो उम्हरे छलन्हि।

अगिला अगहन मे फसलक जे छीना-झपटी भेलैक ओहिमे एक किसानक लाश खसल छलैक। गँड़ास जे मारने छलैक ओ खान-बहादुरक कोचवानहि छलन्हि। पुलिस टुकुर-टुकुर ताकैत रहलैक आओर हत्यारा लापता भए गेलैक। उल्टे दफा १४४ के तोड़क नाम पर दू-तीन दर्जन किसान सभ

के गिरफ्तारी भेलैक। हुनका सभ पर कए प्रकार के मुकदमा चलाओल गेलैन्ह। फसल परंच किसान क घर पहुँच गेल छलैक।

धान काटक दिन छलैक, अही सँ हम मलोसि कए रहि गेलहुँ। नहि तऽ चारि छः दिन महपुरा रहि कऽ किसान के संग दितिऐक। आओर संयोग देखू भैया कि ओही माघ मे सुगनी के बच्ची पैदा भेलैक।

चमाइन आओर नाइन के इनाम-तिनाम देबए मे, छट्ठी आओर पड़ोसिन सभ के तेल सिंदूर देबए मे पन्द्रह-एक रुपैया लागल होएत। बेसी खर्च करक हमर ओकाति कहाँ छल?

बच्चीक जन्म लेला सँ माय कनिक उदास भय गेलैक परंच मनियार काका कहलखिन्ह—हमर बिरादरी बराहमन क, भूँइहार, रजपूतक नहि अछि कि लड़की क माँग मे सिंदूर पड़नाई मुश्किल भए जाएत। कथिक सोच, कथिक फिकिर? एक रेबनी गेल तऽ दोसर रेबनी आबि गेल!

ई कहैत चाचा आँगन अएलाह। सुगनी सौर मे बैसल छल चिलका के लेने। खखास सुनिते ओ घोघ के कनिक सरकाऽ लेलक। बुढ़ऽ आगु आबि कए कहलाह—दुर्गा भवानीक दरसन करए अयलहुँ अछि।

माय ओसारा पर धान उसनैत छल। चट सँ ओ सुगनीक नगीच उठि अएलैक आओर बच्ची के अपना हाथ मे लए कऽ मनियर कका के सामने कए देलकैन्ह, अपन मुँह फेरने रहल किएक तऽ बाबू हमर जनम मे मनियार कका सँ लाजभरि छोट छलखिन्ह।

बच्ची क कपार पर अठन्नी साटि देलखिन्ह कका आओर कहलखिन्ह—चेहरा-मुहरा बिलकुल बालोक सन छैक।

माएक सामने ओकरा हम भरि आँखि कहियो नहि देखलिऐक। लाज लगैत छल। परंच असगर मे देरी तक ओकरा देखैत रहितिऐक। केहन

बढ़ियाँ लगैत छल। तखा गुलाबो कमलक समान लगैत छल, ओकरा हम अपना ठोढ़ सँ, नाक सँ, पपनी सँ कपार सँ हलुके दबाएल करैत छलिऐक—ओहि सँ भारी संतोष होइत छल। छाती मे वा कि कपार मे कहियो कानन धसि कऽ लगैत छी अहाँ? हँ, तऽ बस बुझिऔक ओही प्रकारक तरावट—ओहि सँ किछु बेसीए कहियोक बच्ची के छूबए सँ भेटैत छैक। संतान कोनो मामूली चीज नहि होइत छैक भैया!

किओ बता देने होएतैक, एक बेर एँबारा गाबए बला पैंवरिया आएल, दू आदमी छल। हुनकर बोलक सुराहीनुमा छलन्हि। पहर भरि ओ सोहर गबैत रहलाह। डेढ़ रुपैया आओर दू सेर धान लेलन्हि तखने उठलाह, बड़ लगार होइत छैक ऐहो सभ। बाबू लोकक हवेली तऽ नहि मानी नतेक समान उठा लए जाइ छथि।

हम किछु नहि बुझि सकलहुँ। पुछलिऐक—की छौक रे?

अरे शुगुन भऽ गेल! कहबो तऽ करै किछु! हम खउँझा कऽ बजलहुँ तऽ ओ फुसा-फुसा कऽ कान मे कहलक—जमंगला (जयमंगला) के लहेरिया-गंजबला दरजीबा उराकऽ लऽ गेलै।

आश्चर्य सँ हम ओकर मुँह देखा देलिऐक। इएह चारि पाँच दिन पहिने हम ओकरा पोखरि पर ठाढ़ देखने रहिऐक आखिर ई भेलै कोना?

चल, रस्ता मे कहबौक—रामखेलाबन कहलक।

कमीज पहीरी कऽ ओहरे देह पर धऽ लेलहुँ आओर घर सँ बाहर निकललहुँ—हाथ मे लाठी छल। पता चलल जे पहिले लहेरियागंज, फेर मधुबनी दरभंगा आओर जयनगर (जनकपुर) तक जाए पड़त·········

रास्ता मे रामखेलाबन सँ जे किछु पता चलल, से बता दिअ? त लिअ, सुनू—

हमर बड़का मालिक बाबू गौरीशंकर चौधरी के बेटी, बेटा इएह जयमंगला। बूढ़ा मालिक के कतेको वर्ष पहिने स्वर्गवास भऽ गेलैन। जेठका बेटा वकील आओर छोटका डिप्टी मजिष्ट्रेट। बेटी जहिआ सँ सतोमात भेलैन तहिआ सँ बापे लग मे रहऽ लगलैक। श्याम सूरति, बड़की आँखि, गोल-मटोल मुँह। देखऽ मे बहुते सुन्दर छलैक। अवस्था छल हेतैक चौब्बीस-पच्चीस के।

लहेरियागंजक एकटा नवजवान दर्जी हवेलीक सबटा कपड़ा सीबैत छलैक। खूब सूरत मुसलमान। ओकरा मामा के मधुबनी मे सिलाइक दोकान छलैक। बूढ़ा मालिक ओकरहि सँ अपन कपड़ा सिवबैत छलाह। ओकरा सँ सीख कऽ ओकर भागिन जखन तैयार भेलै तऽ नाप लेबाक हेतु जनानी कपड़ाक हवेलीक अन्दर आबऽ जाए लगलैक। इम्हर इ दू तीन वर्ष सँ मशीन लऽ कऽ ओ लहेरियागंज मे रहऽ लागल। बीच मे दू तीन बेर एना भेलैक जे कपड़ा कटैको तरहक आओर बहुत सियाबक छलैक, किन्तु कपड़ा किमतीओ छलैक। नबका दर्जी बड़ बढ़ियाँ सियाइ करै छलै, बच्चे रहै तहिए सँ मलिकाइन ओकरा जनैत छलखिन। त, बैसक मे बलगे एकटा कोठली तऽ अन्दरे सियाइ करबाक हुकुम भेटलै। चारि चारि, छः छः दिन दू-तीन बेर ओ मालिकक ओहिठाम रहि चूकल छैक। मशीन अबइ आओर जाइ। दर्जी के मजूरी भेटै छलै भोजनो भेटैत छलइक आओर नास्ता पानी सेहो... एहि बीच दुनूक नजरि चारि भऽ गेलैक, दुनू दिल अपन रास्ता सेहो निकालि लेलक। बाहर ककरो बूझल नहि छलैक आओर भीतर लोहिया मे गूर पकैत छल। एहिबेर दर्जी आएल तऽ साल रफू करय अहिना आइल, मशीन अनबाक तखन काजे कोन रहै? दू तीन दिन रहलाक पश्चात् ओ राति के गेब भऽ गेल, जयमंगला सेहो गेब रहै! खानदानक नाक कटि गेलै भैया! हम लाठी लऽ कऽ लैला मजनू के ताकक हेतु नीकललहुँ। लहेरियागंज मे जे

कोठली बर्जा नेने रहए किराया पर तकरा ओ दू मास पहिनहि छोड़ि देने रहैक। मधुबनी मे ओकरा मामा सँ पुछलिऐक तऽ बुढ़वा अपना छोट, छोट दाढ़ी पर हाथ फेरऽ लागल, फेर कान छूलक आओर बाजल......ती... वा! तो ......वा। ई की सुनबऽ आएल अछि हमरा? वा ई लाही।

किछु रुकि कऽ ओ एकटा जूता निकालि लेलक आओर ओकरा घुमावऽ लागल एहन सन् कम जेना ककरो पीटऽ चाहैत होइ। फेर क्रोध मे आबि कऽ बाजल—सारक खाल खींची लेबैन, आवारा कहीं के। दू तीन मास सँ गेल अछि, मशीन बेचि कऽ खाऽ गेल।

हम ओतऽ सँ हटि गेलहुँ। मिलेलनमे घूमैत-घूमैत टीसन पर अएलहुँ। सेर तीन-एक चूड़ा देने छलखिन मलिकाइन, रामखेलावन, ओकरा खोलिकऽ खाय लागल आओर हमहुँ। बड़ीजोर सँ भूख लागल रहै। थोड़ेक-थोड़ेक खाय लेलाक पश्चात् नून हरियर मिरचाइ मोन परल। खाय कऽ टीसनक बाहर सँ पानि पीबि अएलहुँ।

थोड़ेक कालक पश्चात् गाड़ी एलइक। हमसब एखन तक टिकट नहि कटएने छलहुँ। एकाएक हमरा सूझल बेकारे हम सब भटकब। जयमंगला अहिना नहि नीकलल रहै, पाँच हजारक गहना सेहो अपना संगे उड़ाक लऽ गेल रहै। ककरा मुँह मे धान या गहुँमक दाइल हैतैक ओहि उरति ओराक पैरि भला के पाओत? छोरि दैह।

समूचा दिन आओर समूचा राति हम मधुबनी मे काटि देलहुँ, भोर गाम गेलहुँ। रामखेलावन जाकए बड़की मालिकाइन के ताकऽ हेरक नतीजा कहि देलकनि।

झूठ किएक कहू, हमरा कोनो खास तकलीफ नहि रहै। देह मे तागति छल, कसिकऽ काज करै छलहुँ। पन्द्रह कट्ठा के लगभग जमीन हाथ पर

दाबि गेल छल, पाँच कट्ठा अपन अलगे छल। संतोषी भाय छल, फरमाइस कराबऽ वाली घरवाली भेटल छल, हिलति डोलति, थलकि-थूकति सोनाक मूर्ति सन बच्ची भेटल छल! आओर की चाही? पांच-एक टा बातक जरूरत छल भइया। कहिओ-कहिओ टाका कैंचाक तंगी जरूरी बुझाइत छल। पाँच दस महीना जँ कतहु सँ आबि जाइत तइओ बालचन्द राउत चटेसर भऽ गइतथि। झूठ किएक कहू भइआ? समांग नीके रहय काम-काज भेटइत रहय, परिवार छोट रहै, नीयत खराब नहि होइ। मोन मे दस-बीसक लेल जगह होइ... आओर की चाहीऐक? तऽ पाइक तंगी कोना मेटा सकइत छलइ भइया?

एक तऽ हम ठीक केलहुं एहि बेर कुसियारक खेती अवश्य करब। दोसर बात जे सोचि सोचि कए पक्का कएलहुं से छलईजे बड़का पत्ता वला तमाकूक खेती करक विषय। हमरा घर सं दक्षिण पचकौरी बाबूक थोड़ेक जमीन परइत छलइक, ओकरा ओ बे—आबाद छोड़ि देने छलखीन। खादत—पियइत आदमी छलाह, बेटा राज मे तहसीलदार छलखीन। सतरंज खेलऽ-बाक भारी सोखीन छलाह। एहि मे पंडितजी हुनकर जोड़ीदार छलखिन, दएह पंडित बौअन पाठक?

पूछलाक पश्चात् पचकौड़ी बाबू कहलन्हि तम्बाकू नहि, आलू उपजा सकइत छऽ तऽ ठीक; नहि त नहि।

अच्छा सरकार—! हम वापस अएलहुं। कतेक दिन तक सोचइत छलहुं जे जमीन लीअए या नहि। घरक बिल्कुल लगमे छल। हमरालेल इयह भारी गुण छल। भांग आओर चकोढ़क गाछ छलइक ओहि मे, दू एक-चार धुर मेहो छलइक हैत। खैर, भइया तम्बाकू बला बात तऽ रहि गेल। कुसिआरक खेती करबाक जरूरी छल! दामे ठाकुर वला खेत सेहो ओकरे संग।

पछिला साल एक बरद हाथ लागल छल।

फूलन मिसिरक घर वाली के एकटा पुरान गाय छलैन्ह। सात बेर तऽ ओकरा हमरे सोझा मे बच्चा भेल रहैक आओर मरल रहैक। आब ओकर चिन्ह बस यैह बरद मिसिराइनिक घर मे छलन्हि। इमहरका कतेको बरख तऽ बेचारी अस्वस्थ छल। बरदक सेवा ओकरा सँ पार नहि लगैत छलैक। भेलै ई जे चारि दाँतक जवान बरद बेहद कमजोर पड़ि गेल छलैक। चरावक्खा तऽ कपो रहैक नहि, दिन-राति बेचारा खुट्टा मे बान्हल रहैत छल! मसोमात एक बेर दिन मे ओकरा खोलैत छलैक, सेहो एहि लेल जे लगक पोखरि मे सँ पानि पीआवए दू मुट्ठी पुआर भरि आओर दू मुट्ठी सानि कऽ ओकरा आगू धऽ देल जाइत छलैक। ई पुआर छाइत-खाइत बेचाराक भूख मीत भऽ जाइत छलैक......आँखि मे कीची, कनपट्टी लग नीचाक दिश नोइक चिन्ह। हाड़ पाँजर पर रोआदार चमड़ी मढ़ि कऽ कोनो हमशायल देवता मानू अहि जीव के दुःखित बरदकभेडौल आओर बदसुरत शकल देने होइ। खुट्टाक चारु कात थोड़ेक जगह छलैक जे मूत गोबर सँ हरदम गील रहैत छलैक। दूरे सँ सड़ल सुखायल, गील पुआरक अजीब गंध सोरा नाक के छेदैत अंदर चलि जइतऽ। तीन दिश फूस के झझीदार ठाठ छलैक। अपन थुथुन सँ ओ बेचारा नहि जानि किएक ठाठ के सामने छेद कए देने रहैक! ठीक ओहये छहेक ओकर माथ निकलक हेतु काफी छलैक। गलाक रसी भरिसक गाय के आओर आगू जाय सँ रोकैत छलैक। से भैया मिसराइनि के दुःखित बरद ठाठक ओहि छेद सँ माथ निकालि आबए जाय बला दिश एक टक तकैत रहैत छल—लाचारी तथा शून्य निगाह सँ! ओहन नजारा हम कहियो नहि देखने छलहुँ......महिनो भरि बेचाराक विषय मे सोचैत रहैत छलहुँ। बीच-बिच मे जाकऽ देखि अबैत छलिएक—ओ जबरदस्ती जीब रहल छल। देहाती

दुनियाँक लाचारीक एक डेराउन साइन बोर्ड जकाँ हमरा लगैत छल। आखिर एक दिन एना बुझाएल जे आब जैं ओहि बरद सँ आँखि चारि होयत तऽ माथ फाटि जायत......पथिया भरि घास लऽकऽ साँझ खन हम बरद लग पहुँचलहुँ, घास सामने दऽ कऽ ओकरा हम कहलिऐक नहि बेटा हम तोरा एहि तरहे नहि मरऽ देबौक। बस, बहुत भऽ चुकल! आई सँ हम तोहर आओर तो हमर......

ओ धिरे-धिरे घास खाय लागल, बिनमाय बठोओने खाइत छल। हम मिसराइनि के नगीच पहुँचलहुँ। ओ आंगन मे सिलखाटी ओछा कए गेरुआक सहारा सँ सुतल छलीह। भादवक गर्मी छल। बाँसक खपच्ची सँ बनल बिअनि हाथ मे छलैक। आहट पाबि कए उठि बैसलीह आओर आवाज चिन्ह कऽ बजलीह—की छौ रे बलचनमा?

किछु नहि मालिकिन, घास अनने छलिएक थोड़े—हम कहलिएक।

दऽ देलहिक बरद के आगाँ कऽ?

हँ मलिकिनी, दऽ देलिऐक।

अच्छा......

अच्छा नहि मलिकिनी—निसास लऽ कऽ हम बजलहुँ—ई बरद आई सँ हमर भेल......

मसोमात हँसऽ लगलीह। हिनका लग मे जे बलचनमा दिन भरिक थाकल अछि, हँसी-ठठ्ठाक गप दऽ कऽ मोन बहलाबए आएल अछि। किन्तु नहि फुरलेक तऽ बरदेक बात उठा लेलक। बिअनि के मुँह सँ पीठ नोचैत बजलीह दूर मुरहा! मासो डेढ़ मास की ई बरद आब काटि सकतै? मरतैक तऽ अगिला जन्म मे तोरे हर बहतौक! घास खुअने छहीक, मोन नहि रखतौक? ही-ही-ही-ही-ही, हुः हुः हुः हु हु हु होइ......

ठहक्का मारि कए हसलीह मिसराइनि हम मुदा गुम-सुम छलहुँ । ओहो की हँसैक बात छलैक भइया ?

हँसि-हँसि कऽ जहन हल्लुक भेलीह तऽ पुछलीह—के लऽजायत अहि बरद के ? चारि रुपयाक खाल तऽ निकलत, हम बुधुआ (बूढ़ चमार) के बजबहि वाली छी । ओ आबिकए खोलि कऽ लऽ जाए एकरा, जावे तक ओकर तावे तक सबूर रखए पाछु......

नहि मलिकीनी, हम एकरा एखने खोलि कऽ लऽ जाइत छी—एतेक कहि कऽ हम उठलहुँ तऽ ओ मुँह लटकावऽ लगलीह—किछु भए गेलैक एकरा तऽ नाहक मे तोरा गउवधक परासचित नहि लागि जाउक । बाप, हमरा तऽ बड़ डर लगैत अछि ।

डर कथिक मलिकिनी ? हम कहलिएक—भगवान करताह तऽ चारि महीना मे एकर ढाँचा बदलि जयतैक । अहाँ किछु फिकिर नहि करब... ओ हमरा धोखा दइए, नहि सकैत अछि ।

अहि पर ओ कहलीह—से तूँ जान ! किछु काल कऽ कहलकैक—काल्हि सबेरे लऽ जाइहे, एखन राति कऽ ठीक नहि होयतैक ।

हम कहलिऐक—अच्छा मलिकिनी । ओहिराति कऽ खुशीक मारे हमरा नींद नहि आएल छल । एहन लगैत छल कि बहुत बड़का काज कए अएलहुँ अछि......

सबेरे अगिला दिन बरद के अपना ओहिठाम लए आएल छलहुँ । महीना भरिक सेवा बेचाराक सूरत...शकल बदलि गेलैक ! दू महीनाक बाद तऽ ओ मैदान मे दौड़ऽ लागल । भादो, आसीन, कातिक आर अगहन......चारिमासक बाद ओकर एकदमे काया पलटि गेलैक । ब्राह्मणी के कतेको आदमी दुसैलकैक वापस कए लीअ अपन बरद, की ओ बलचनमाक बापक छैक ? चालीस-

पचास रुपया सँ कम नहि लेब, हँ.........

मिसराइनि ककरो बातक ध्यान नहि देलखिन्ह, हमरा सँ एक दिन कहलन्हि—बालो, आब ई काज लेबए लायक भऽ गेलह । छकौरी हमरा खेत के तोरा जिम्मा कए देने छह, ई बरदो तूहीं राखऽ बाबू—हमरा ओहिठाम जाएत तऽ फेर एकर उएह दशा होएतैक ।

ई मलोमान जानकीएक दया छलैक जे तोहर दोस्त बालचन्द राउत बरद बना कहाए लगलाह ।

एकटा बरद रामखेलावन के सेहो छलैक । हम ओकरे सँ अपन भाँज मिलौलहु । हर ओकरे छलैक । एक दिन ओ जोतैक छल, दोसर दिन हम । हमरा संग अपन जमीन तऽ नामूँ छए छल । अक्सर हमर हर-बरद दोसरक जमीन मे काज अबैत छलैक, एकरा लेल चारि आना रोज बतौर भाड़ाक भेटैत छल ।

कुसियारक खेतीक लेल हमरा चुन्नीक समान शाता भेटि गेल । चुन्नी सम-वर्ष चारि-छः कट्ठा कुसियार जरूर गोड़ैत छल । किछु मिल मे पठबैत रैयाम आओर किछुक गुड़ बनबैत छल । डेढ़ दू सौ नगद भेटिए जाइत छलैक ।

दामो ठाकुर वाला जमीन डुड़िया पोखरिक करीब पड़ैत छलैक । आठ दस बेर जोति कऽ हम खेत तैयार केलहुँ । दू बेर पोखरि सँ पानि लाबए पड़ल कीन हागा कऽ । सुखला पर फेर जोतलिएक । ढेप सभ के भुरभुरा देलिएक । तखन आए कऽ सोझ रेखा मे खंडी-खंडी कए कऽ कुसियार गोड़ैत गेलहुँ । हम छलहुँ, रामखेलावन आओर चुन्नी छलैक ।

माइट देबक बाद, डाढ़िक बीच-बीच थोड़ेक-थोड़ेक पानि आओर देल गेलैक ।

महीना भरिक बाद पैंप निकललैक तऽ खुशीक मारें हम नाचि गेलहुँ। घर आबि कऽ बहुत देरी तक बच्ची सं खेलाइत रहलहुँ। कुसियारक खेती ई जे हम शुरु केलहुँ, अहि सँ सुगनी सेहो फूलि नहि समाएल। ओ ठेठ गृहस्थक बेटी छल। ओकर नैहर हमरा घरक जकाँ निपट्ट उजड्ड नहि छलैक। मूलो सं जहिया कहियो हम बाहर जाकऽ नोकरी करक बात उठबैत छलिएक तऽ ओकर मोंह मुर्दैतीक समान बनि जाइत छलैक! आओर जखन कहियो हमरा मुँह सं खेती-बाड़ी मे कोनो नव बात निकलै तऽ सुगनीक मुँह धकधकलक समान खिल उठैत छलैक।

हौलास अबैत-अबैत कुसियारक गाछ डाँर तक लहराए लगलैक। अहि वर्ष सगठाम कुसियारक खेती बढ़ियाँ छलैक, कोनो रोग नहि, ने कोनो कीड़ा।

मुन्शीजीक बेटा मधुबनी-दरभंगा आइते रहैत छलैक। एहिबेर सावन मे ओ एक नव समाचार लओलक कि अगिला साल कांग्रेसी लोक मिनिस्टर बनि जएताह, अंग्रेजक अमलदारी उठि जएतैक आओर जमींदारी सेहो नहि रहि पओतैक............

ब्रजबिहारी छलैक ओकर नाम, परन्तु दुलार सं लोक बच्चू कहैत छलैक। जाहि दिन ओ दरभंगा सँ आएल छल ओहि सांझकऽ हम ओकरा सं भेंट केलहुँ आओर पूछलिएक—बच्चू, मजिस्टर, कलक्टर तऽ सभ के बूझऽ मे अबैत छइक, ई मलिस्टर की होइत छैक ?

मलिस्टर नहि, मिनिस्टर! ओ हँसि कऽ बाजल कानून कायदा के अमल मे लाबएक लेल मामूली हाकिम सभ के देखभालक लेल आओर मुलुकऽक सरकार के चलाबए के लेल मेम्बर लोक अपनो मे सँ दिस पाँच आदमी सभ मे मुखिया चुनैत छथिन्ह वेह मिनिस्टर कहबैत छथि। सभ मुलुक भोट दऽ

कऽ लाखो करोड़ो मे सं सैकड़ो कें मेम्बर चुनैत छैक। सैयो मेम्बर अपना मे सं दस-बीस पर सभ काज चलाबक जिम्मेदारी सौंप दैत छथिन्ह फेर इनके राइरक मुताबिक लोक सभ किछु करैत छथि।

आब हमरा समझि मे आबि गेल कि मिनिस्टरक की मतलब होइत छैक स्वामी जी कहने छलाह कि जमींदार लोक कांग्रेसी बनि कऽ किसान सभ के ठकैत फिरैत छथिन्ह। हमर माथा ठनकऽ लागल की वेह जखन मिनिस्टर भए जयताह तऽ गरीब सभ के भलाई हैतैक अहि सँ वा बड़का बड़का बाबू लोक सभ के?

बच्चू सं इहो पता लागल की फूल बाबू सेहो मेम्बरीक लेल ठाढ़ होएताह, कांग्रेसी अही इलाकाक लोक सभ सं भोट दिया कए फूल बाबू कें असेम्बलीक मेम्बर बनाबए चाहैत छन्हि।

हम सोचए लगलहुँ, भए सकैत अछि कि मेम्बर बनि चुकला पर हमर छोटकी मलिकाइन के येह भतीजा बाबू मिनिस्टर सेहो भऽ जाइथ; तखन तऽ भेल। भूइडोलक बाद रिलिफ फण्डक रुपया लए कऽ ई बाबू साहेब हमरा बस्ती मे केहन खेरात बाँटल गेल छल तेहर साल, से आइयों के बताए चुकल छी भैया। एहन मेम्बर सं तऽ हमरा ईलाकाक बंटबारा भऽ जाएत, तऽ पानि मे आगि लागि जायत......

गाँव मे रोज दू एक टा अखबार आबऽ लागल। पटना सं सात-सात दिन पर निकलऽवला अखबार 'क्रांति' किसान आओर मजदूरक विषय मे खुलि कऽ लिखैछलै। ओकरा पाँती-पाँती सं असन्तोषक चीनगारी नीकलइ छलइ। दू रुपैया पठाक ओ अखबार पहिले बच्चूए मंगबाएब शुरु कएलक। ओ कहलकैक जे मधुपुराक किसानक विषय मे क्रांति मे कइयो बेरि छपि गेल छैक। कांग्रेसी अखबार वा सेठ जमींदारक अखबार एहन खबरि कें बिल-

रिओ कऽ नहि छपबैत छथि।

'क्रांति' मंगल कऽ नीकलैत छैक। हमरा बस्ती मे विरहस्पति आओर सोमक दू सनदऽ रहै डाकप्युन कें अएबाक। बच्चू कें ई अखबार बिरहस्पतिक भेटि जाइछलै। ओइदिन साँझकऽ ओकरा बैठक मे मेला जुटैत छलैक। लालटेन जरा कऽ बच्चू हमरा सभकें क्रान्ति के विषय मे सुनबैत छलाह। सुनऽ वलामे पाँच छ गोटे तऽ छला तारानन्द बाबू, बंसोल झा, रमखेलौना, तीरी अमात, कपिलेसर मड़र आओर हम। कहिओ कहिओ चुन्नीओ शामिल भऽ जाइत छल। तारानन्द मामूली गृहस्थ छलाह, कर्ज-वर्ज नहि छलै। बंसोल झा कें छलनि पहलमानिक सोख...मानस बढ़ियां करै छलाह, खाएकऽ गोस आओर माछक। घरक गरीब छलाह, दरभंगा—मुजफ्फरपुर रहि रहि कें बीच-बीच मे होटलक नोकरी आओर जमींदारक ओहिठाम कुस्तीक दाबपेंच देखबैत छलाह। तीरी, कपिलेसर आओर रामखेलान हमरहिजँका आधा खेतमजुर आओर आधा किसान छल। बच्चूक बाप मुन्शी बिपिन बिहारी लालदास मधुबनी इस्टेट मे एकाउन्टेंट छलाह। बढ़ियाँ आमदनी छलैन। तऽ हमर ई मंडली मन लगाकऽ बच्चूक मुँह सँ एखबारक एक-एक पाँति सुनल करै छल.........

किछु दिनक बाद बच्चू कतहु मरिलक रहमान साहेब क पास सँ, किसान सभाक रसीद वडाऽ अनलक. इकनी दय अधकटी लैह, बस आइ सँ तों किसानक मेम्बर बनि गेलह।

अपना टोल मुहल्ला मे हम दस आदमी मेम्बर बनेलिऐक। मसोमात कुन्नी सुनलेन्हि अपने आबि कऽ इकनी दऽ गेलीह आओर रसीद लऽ गेलीह। कहलनि बाला देवताक प्रसादक हेतु इ चुटकी भरि चिक्कस हमरो गरीबीनी के।

मधुबा गाम मे पचास-एक मेम्बर छलाह होएत। मजूराक किसान कें लड़ाईक इएह अवसर छलै। मालिक आओर पैघ-पैघ किसान कें छोड़ि कऽ बाँकी सभक दिलचस्पी पड़ोसीक इलाकाक आन्दोलनक तरफ रहैक। मनियार काका सँ शेखअब्दूल तक, तारानन्द बाबू सँ लऽ कऽ तीरी अमातक आओर कुदर मिसीरक मसोमात सँ भैबीन मसोमात हमीदा तक...सब मेम्बरी रसीद लेलनि आओर एक-एक आना देलखिन।

महिला मालिक तथा बक्षी बाबू अपना खिलाफत आन्दोलन कें ओना-मासी धंग बुझलाह। छलैहो बात ठीके। हीनका सभक सूद दर सूद पर जनता तबाह भऽ गेल छल। एक टाका वर्ष भरि मे डेढ़-पौने दूइ टाका आओर एक मन धान मास-दूइ मास मे डेढ़ मन भऽ जाइत छलनि।

छोटका जमींदार तं आओर कसाइ होइत छैक, एक तऽ करैला फेर ओहि पर नीम चढ़ल। किछु नहि पूछू भैया! मझिला मालिक भारी कंजूस छलाह। तों देखतहुन तऽ कहि उठितह हाथराम, भैस धोती पीयर-पाँस...इएह डेढ़लाख टाकाक आदमी छथि?

हँ भैया, इएह डेढ़ लाखहुक मालिक छथि बाबू जसोधर चौधरी... आओर बिछिओ बाबू कें जगानी भीरानी लगभग पचास हजार टाकाक छल होएतैक। मझिला मालिक कें अपन खेत छलैन चारि सै बीधा।

मालिकक बाप पद्दीक डेढ़ हजार बिघा काश्त जमीन बेनीपट्टीक नजदीक छलइन, जकरा ओतैक किसान सुशोभित कएने छल, आओर हिनका सभकें मालगुजारी भेटैत छलैन। एतऽ अपना ओहि ठाम डेढ़ सए बीघा जमीन रैयत ओतैत छल, मनहूंधा। दोसर दिस जालफरेब सँ छोट किसानक मरौसी जमीनक अधिक हिस्सा मझिला मालिक पहिनहि हरपि नेने रहथिन। बिल्लू बाबू कें जमीनक बेसरे चौथाइ हिस्सा बेइमानीक प्रसाद छलइन। हुनकर परदादा भारी पंडीत छलखिन, पच्छिम सँ खूब कमा कऽ अनने छलखिन। दादाक

पाँच हजारक सम्पति पोताक अमल मे खाबि कऽ एक लाखक भऽ गेलइन। दस एक हजारक वस्तु सासुरहु मे हाथ लागल छलैन छिल्लो बाबू कें। स्त्री एहन भागमंती जे माय-बाप कें एके सन्तान।

ओ एहि विषय कें सोचिओ नहि सकै छथाह जे कि मालिकक मुकाबला कैल जाय सकैछ। महपूराक किसानक लड़ाइ सं हमर आँखि खुजि गेल हम ई तऽ कऽ लेलहुँ जे बित्तो भरि जमीन आब मालिक कें हरपऽ नहि देबै।

गाँवक पश्चिम, एकदम करीब, खेतक एक टा बढ़ियाँ टुकड़ा छलइक नब्बे बीघा के। एहि जमीन मे सब किछु उपजैत छलइक। धानो, मरुआ, सरिसोओ, कुशिआरी, तिसीओ, राहड़िओ, अब गहूम तेहो, ऊडीद तेहो, कुर्थी तेहो। ई जमीन तीस-एक मुसलमान ग्वार आओर मलाह समक अधिकार मे रहैक परंच चलाकी सं मालिकक परदादा एकरा अपना नामे चढ़वा लेलखिन।

ओहि तीसो किसानक नाम एक दिन एकाएक अदालतक सम्मन अएलइक तऽ गाँव भरि मे बिजली दौड़ि गेलइ। कागज देखला सं पता चललइक जे चारि वर्ष पहिले बैसी मालगुजारीक नालीस कऽ देलकैक मालिक।

परेशान करबाक ई एक टा बढ़िया बहाना छलैक, किसान मालगुजारी सालक साल देत आयल रहैक।

हमर विचार भेल जे सम्मन लऽ ली परंच कचहरी कियो नहि जाइ।

दोसर दिन बरहम स्थान मे लोक जमा भेल। हम महपुरा जाय डाक्टर रहमान कें बजा अनलियनि'''पचास-एक किसान मिलि कऽ सपथ खयलहुँ जमीन नहि छोड़ब, चाहे किछु भऽ जाय। बच्चू कें सिकरेटरी बनाएल गेलैक हम बनलहुं स्वयंसेवकक मुखिया—फौज सं पहिनहि सरदारे चुनल गेलाह।

मालिक सब कें रुपयाक बल रहैक, दरोगा, एस० डी० ओ० आओर कलक्टरक बल छलइन। ओ सुरुहे मे एहन चालि चललाह जाहि सं किसान

हिम्मत हारि कऽ बैसि जाथि।

फसिल तैयार भेलइक तऽ ओहि पर दफा १४४ लागि गेलइक। दू लोरी मिलेटरी आएल। जमीन नजदीक वला बगीचा पर तम्बू तानि गेलइक। खेत पर पहड़ा छलइ।

एहन मौका पर मसोमात हमीदा बड़ बहादुरी देखलकैक। जकर ई जमीन रहैक ओहि किसानक ओहि ठाम सं दस-पन्द्रह टा जनाना कें बजा कऽ लऽ गेलैक आओर चारि कट्ठा तैयार पाकल धान काटि लेलक। जारक' राति धकड़ जरि रहल छल। ड्यूटी वला दूनू सिपाही गाछ पर ओंठगल सूतल रहय।

महपूराक किसान खुलेआम दिन दहारे फसिल काटय चाहलकैक, जाहि मे एक आदमीक खून तेहो भऽ गेलैक। अपना ओहि ठाम हम सभ बदलि गेलहु। जमींदार ओर सरकारी अफसर दुर्योधन ठहरलाह हुनका युधिष्ठिर, परास्त नहि कय सकै छलखिन भैया। पिटाइ पर पिटाइ खायब आओर भेड़ बकरी जकाँ जेल चलि जायब बहादुरी नहि। एहन सीधाई सं पूजा होऽ तं जमीन छुड़योक नोक भरि भेटबाक नहि रहै।

दरोगा पड़ोसक मुसहर के फसल काटयक हेतु तैयार कएलक त हम, बच्चू तीरी वगैरह हाथ जोरि कऽ समझौलिअइ। बड़ सोझ सीध आओर ईमानदार होइत छथि। हमर गप्प मानि गेलाह—बजलाह हमरा मुखिया सं कहिए मालिक कहलकैक दूई बीघा हम तोरा, आओर बाँकी आदमी के घर पिछू दस कट्ठा क खेत लिखि दैत छिऐक, कतेक घर छें तों सब?''''''मुखिया साफ कहलकनि नहि सरकार दोसरक पेट काटि कऽ देब तऽ नहि दिय। हं, अपना खेत मे सं देबए चाहैत छी तऽ ठीक छैक'''से हम तोहर फसिल कोना कऽ कटबह।

मुसहरक मुँह सं सहानुभूतिक बात सुनि कऽ हमर सीना आरो चौड़ा

भऽ गेल भैया।

अफसर सभ सोच विचार मे परि गेलाह। किसान कें एकटा छोटबाक चालि सेहो चलल गेल रहैक। मालिक दिस सं आओर बिज्जी बाबू सन पैघ विद्वान दिस सँ सेहो किसान सभ पर दबाव डालल गेल रहैक। मजिस्टर आओर एस० डी० ओ तऽ बीच बीच मे अबितहि छलाह। मालिक अपना मुन्शी बला हिसाब भीरेनहि छलाह। मिलेटरी वाला फसिल कटया कऽ कोम्पक लग ढेरी कैल गेलइक।

माय कें आओर सुगनी कें मलिकाइन अलग-अलग सं बजा कऽ बुझल-खिन आओर कहलखिन यदि बालचन अपना हरकत कें नहि छोड़त तऽ घर फूंकवा देबैक······

एकदिन नोड़ायल आँखि सं माय आबिकऽ बैसल। हम ओलती मे हुक्का पीबि रहल छलहुँ। पूछलिऐक—की छोक माय?

ओ कहलक—मलिकाइन तोरा पर बड़ तमसायल छथुन कहलखुन जे जं संच मंच सं नहि रहत तऽ घर फुकवा देबैक।

घर फूकवा देती—हम कड़कि कऽ बजलहुँ—हुनकर बापक घर छैन्ह? जो बैस···मेल की कर छलेहैं।

कोरा मे गरमा कऽ मुंगरिया सूति रहल छल, मुंगिया हमर सुन्नी। अठारह मासक बेटी। हमर कड़कल आवाज सुनितहि ओ जागि गेल आओर कानऽ लागल। हुक्काक खोली हम टिका देलिऐक। माय अन्दर चलिस चलि गेल तऽ बाजल—पागल कहीं कें। घर ककरो फूकि देब सोक बात छेक? हमरे की जमीदारक बध चलत जे ओ सभक घर फूकि देथिन।

मुंगिया कें लऽ जा कऽ हम सुगनी लग दऽ अएलिऐक। लाठी उठएलहुँ आओर चलि परलहुँ आसरमक दिस। सुगनी चलैत काल मना कयलक तऽ हम कहलिऐक दस एतेक डेराई किएक छैं।

आसरम बरहम स्थानक लग सिसबोनी मे छलइ। शेख अब्दुलक अपन दादा आओर ससुर शेख मकदमक विरासत मे ई जमीन भेटल छलइ पन्द्रह कट्ठा। आसरमक हेतु समूचा सीसबोनी शेख दऽ देलकैक। बदलू आओर मनीलाल झा बाँस देलखिन्ह। चूनी बाप के तमसाएक घर सँ दुइ बोझ नार देलकैक। हम लाबेक सेर भरि जोर।

हम ओतऽ पारी पारी सँ सूतैत छलहुँ। ओहि राति हमर पारी, बदलू, मनीलाल झा आओर शेख डेढ़ पहर राति तक रहलाह—बीच मे अलाव छलैक। एकान्त मे चारू गोटे बैसकऽ रोज राति तक विचार कयल जाइ छलइक। ओहि राति एकटा नव खबरि बुझाएल—रैयाम कोठीक चीनी मिलक मैनेजर पर अपन पीसा (छोटका मालिक) कें कहला पर फूल बाबू दबाव देलखिन अछि जे कि रामपुरक फलां-फलां किसानक कुसियार नहि लेब···

हमरा सभक हेतु भारी मुसीबत आबि गेल छल। हमरे सन ओसीक कुसियारक फसल तैयार रहै—बड़ निमन फसिल। वर्ष भरि सं एहि फसिल पर आश लगौने छलहुँ। एक-एक किसान अपन मोनो भरि करीब पसीना सुखेने होयत तहन आकऽ कहीं ई रस भरि घर तैयार भेल। ककरो सय, ककरो दुइ सय, ककरो पाँचसय तक भेटऽ वाला छलैक, एही पैसाक बल पर जालिम जमीन्दार कें सेहो हम सभ एखने सँ अंगूठा देखबैत छलिऐक।

धानक सैकड़ो मन फसिल मिलेटरीक कब्जा मे छले आओर कुसिआरक एहि खेत पर एहि तरहक संकट मड़रा रहल छलैक···ओ सभ चलि गेल छलाह। हमरा ओड़ी काल तक निन्न नहि भेल। दुइ स्वयंसेवक—कहिओ-कहिओ तीन, चारि, पाँच तक—ओतऽ दिन राति लोक रहै छलैक परंच हमरा सेहो एक-कें पार सँ बेराबेरीक ओतऽ सूतब जरूरी रहैक। ई दूनू स्वयंसेवक भाइ

देकुलि सँ पठाएल गेल छलाह। ओद् जमींदारक खिलाफ किसानक मोर्चा बड़ मजबूत रहै। एतहु जोरदार अंदोलन होबाक हेतु छलैक, एहि हेतु किसान सभाक जिलाक-कौन्सिल शुरुहे मे दूइ नवजबान कें हमरा बीच पठौलक। सीधा-सामीग्री, साग, सब्जी, नून, तेल, लकड़ी, फड़ा, घी, हाँड़ी घड़ा सभ इंतजाम आसरम मे हमरा सभदिस सँ छलै। ओ भोर साँझ हमरा नवजवानक आगू-आगू नारा लगबैत फिरैत छलाह—गाँवके अन्दरो आओर कगरा बाली जमीन क चौगिर्द मे हो। कहिओ-कहिओ पास परोसक बस्ती मे जाक ओलोक एखुका हाल कहि अबितथिन, आ सभ मुट्ठीभर अनाज सेहो असुलैत अबितथि। इप्ता मे दूइए बेर परोसक गाँव मे नीकलितथि। तैओ खूब प्रचार भऽ गेल छलैन।

मोलहियर भाइ सूति रहल छलाह आओर हम चिन्ता सँ सूति नहि सके छलहुँ। पोआरक नेवाबट पर परल नहर रही। महपूराक एक किसान जान सँ मरल छल, एतहु ककरो लास खसि सके छलैक—हम सोचैत छलहुँ—ककरो किएक ककेको के लास खसि सकैत छइक। ओहि मे हमहुँ भऽ सके छी! हैजा-प्लेग पकरैत छैक तऽ ओहि मे आदमी तरपि तरपि कऽ मरि जाइत अछि, विषधर साँप कटै छइक; नाबी हमेशाक हेतु डूबि जाइत छइक, चोमासा मे कोसी महरानी कि कजला मे रातारातो ककेको के अपना पेट मे लय लइत छथिन, बिजलका ले कै छइ आओर बजर (बज्र) खसैत छइक तऽ ओहि मे ककरो आमो चलि जाइ छइक'''बचीक गोल-हँसीक चेहरा नजरि पर नाचय लागल'''सुगनीक खिलखिलाहट कान मे गूँजि उठल--मायक हाथ तरहत्थी गाल पर फिरैति बुझाएल! सोचैत-सोचैत माथा झन-झन करय लागल तऽ हम उठि गेलहुँ। गंजीक उपरका जेबी मे बीरी परल छल ओकरा निकालहुँ आओर बाहर पलानी मे आबि कऽ बैसलहुँ आँगुर सँ उठा कऽ देखलहुँ तऽ अन्दर

आगि छलइ।

दूइ मुट्ठी पुआर ओछाओन मे सँ खींच अनलहुँ घूर सँ चीनगारी निकालि फूकि-फूकि कऽ पुआर धधकयलहुं आओर बीरी सुलगेलहुँ।

आब ऊपर आकाश दिस मुँह कएलहुँ, एकटा बड़का बूढ़ शीशोक माथ झूकि आयल रहैक ठीक हमरे माथ पर। इजोरियाक तेरस रातिक दूपहर छलइक। गाँव-घर, खेत बाग, बड़, पीपड़, तार सब झक-झक! सभ धोल सभ उज्जर, सभ साफ! थक-थका कऽ बेसुध पड़ल धरती पर चन्द्रमा भरि-भरि सूप दूध उझिलइत छलथिन। बड़ी बाबूक बैसक बला नबका खपरैल मकान हाले मे चूनेटल गेल छलइ, ओ तऽ सभ सँ अधिक उज्जर लगइत छलइक। ऊपर मामूली खपरा एक पाँति छलैक तऽ दोसर उज्जर खपराक। ओह मकानक चार एक तऽ पाने नजरि खीचैत छलैक परंच एखन बड़ा गजब करै छलैक। पास-परोस मे चारि छ कोस तक ओहन खूबसूरत मकान आओर कोनो नहि छलैक। अपन मड़ैया भला कोना देखाइत।...मकिता मालिक आओर बड़ी बाबूक मकान सभ पोआरक तीन-चारिटा टाल रहैक तार जकाँ उँचाइक गोल घर बूझू। हूँ हूँ हुनका जमीन जायदादक सभ सँ पेध गवाह इएह छलो कीने?

जखन-जखन कूकरक आवाज सँ रातिक सन्नाटा टकरा जाइ तऽ हमर मन अपना खोल मे लौट अबितै। बूढ़ शीशोक झूकल माथक छाँह सँ दिल के एक प्रकारक तसल्ली भेटैत छल, लगै छल जे अपने कोनो पुरखा आशीर्वाद दऽ रहल होऽ—हमरा माथ पर झूकि कऽ। आहि नव रास्ता पर हम पैर बढे लहुँ अछि ओहि पर चलि जायक हेतु एतेक भारी इशारा पाबिकऽ हमर रीढ़ एकदम सोझ भऽ गेल। सीना तनि गेल छल बाँहि फैलाक किछु काल तक अपन छाती देखैत छलहुँ.........

आब दिमाग हल्लुक भऽ गेल छल पेर अपने आप आश्रमक मड़ैया दिस बढ़ि गेल। अन्दर आबि कऽ गोआरक ओहि पंचायती ओछाओन पर खसि रहलहुं, टटोलिकऽ गरांस ठिकिया केलहुं ओ अपना जगह पर ओहिना पड़ल छलौ·········

आश्रम मे नुकाकऽ हम सभ एकटा गरांस रखै छलहुं। मालिक कें खुनी नीगाह सँ हम नवाकिफ नहि छलहुं। बच्चू, बम्भोल, रामखेलावन, अब्दुल आओर हम—हमरा पांचो गोटे कें पुलिसो फंसबऽ चाहैत छल, मालिको हमरा अपंग बनएबाक मनसूबा बन्हैत छलाह। चुनाव मे कांग्रेसक भारी जीत भऽ गेल छलैक। अंग्रेज हाकिमक बदला आब स्वदेशी मिनिस्टरक हुकुमत कायम होमऽ जाय रहल छलैक। सन् सैंतीस (१९३७ ई०) कें शुरुह होइते होइत कांग्रेसी जमींदारक भाई बन्धु आओर सार ससूर मूंछ पर ताव देबअ लागल छलैक।

कांग्रेसी जमींदारे कें फायदा करतैक—स्वामीजीक ई बात हमरा रग-रग मे समा गेल। हम पुलिसो कें चिन्हैत छलिऐक आओर जमींदार लठैतो कें—जमींदारक सह पाबि कऽ पुलिसवला हमरा तरह-तरहक मुकदमा मे फंसबय चाहैत छलाह। मालिक कनी नजरि मुंशीक हीसाबी नजरि छलैह। जमानाक रफ्तार कें परखबाक अक्किल हुनका मे कहां सँ अबितनि! हुनकर खयाल छलैन जे बस रामपुर में पांचे आदमी कें काबू मे रखबाक काज छैक—नहि आबऽ काबू मे तऽ मारपीट, जेल, खून·········जेनाहोए रास्ताक कांटो हटाबी। राति दिन आठो पहर अपना दिस, अपना जनताक निगरानी दिस हमरा दिस सँ चौकसी रखैत छलैक। ई गरांस ओहि चौकसीक एकटा सबूत अछि।

दुनू स्वयंसेवक बेखबरि सूतल पड़ल रहथि, एकक नाक बजैत छलैन फो

फर्र·····फर्र···फो···फो···फ······

बामा बांहिक सिरमा बनाऽक हमहूं आंखि बन्द कएने छलहुं। नींद आबि रहल छल की चोरबत्तीक तेज रोशनी आंखि पर पड़ल हम धरफड़ा कें उठि बैसलहुं। एक हाथ सं गरांस सम्हारति कड़कि कऽ बजलहुं—कोन तोहर बाप—आवाज आएल एहन—मारि देऽ सार के, लगा!

स्वयं सेवक के भकझोरबाक समय नहि रहल। हम गंरास लऽ कऽ लपकि लहुं बाहर। दस हाथक दूरी पर दुटा कारी मजीठ आदमी देखय पड़लै दुनू तैयार ठाढ़ छल। "चोर-चोर" चो ो ो ो ऽ ऽ ऽ ऽ र र ओ ओ-ओऽऽ और "दौर ो ो ो ो ो ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ हम एक दिस दबरलहुं तऽ दोसर ऊपर मांछ फसबऽ बला जाल फेकलक। हम ओहिना हल्ला करैत रहलहुं। हाथ पैर एकदम जाल मे फसि गेल छल गरांस बेकार छल। एकरा बाद। हमरा ऊपर चारिटा लाठीक भरपूर बार पड़ल। गरांस सं जाल के काटि जरुर देलियैक परंच ओहि सं हमरा कोनो मददि भेटल होए, से नहि।

एतबहि मे भारिक दोसर दौरि शुरुह भऽ गेलैक। वो ········· नहि रहै ओकरा पाछू आओरो कतेको आदमी रहै जे पलानी क अन्दर घूमि गेल इम्हरका एक मुँह सँ निकललै—बलचनमा, माफी मांगि ले। मालिकक ओहि ठाम।

दोसर आवाज अएलैक—नै नै एना नहि कर! चलिक माफी मांगब तऽ ससूर मंजूर कऽ लेत आओर पाछू निपत्ता भऽ जाएत सार!

हम कहलिऐक—हम तोहर की बिगारलिअइ अछि? तूहूं मेहनति मजूरी कऽ कऽ पेट पालै छह आओर हमहूं। जाल हटाबैह आओर बान्हि कऽ लऽ चलऽ जहाँ लऽ जयबाक होऽ······

ओकरा भरिसक बाजब मना कएल गेल रहैक। डीलडौल, काफी मोटाएल

ज... DATE DUE ... , ओहि मे सँ एक गोटेक हाथ अपना लग पाबि क [illegible] ओकरा कब्जा मे दाँत काटि लेलिऐक। बाप-बाप करैत ओ ओतहि खसि परल तैयो ओकर कब्जा हम नहि छोरलिऐक।

जीवन अनमोल चीज छैक भैया। परंच एहन मौका पर अपन कीमति की होइ छैक। कहिओक जे है।

ओहि कास मृत्यु के सोझा मे देखिकऽ पिरनी जँका हमर दिमाग नाचि रहल छल बेटी, घरवाली माय, कुसियार क फसिल पलानी मे सूतल भोलंटियर जिनका मुंह मे भरिसक कपड़ा ठूसि देल गेल रहैक आओर कमाएवला खाएत, एकर चलति जे कि किछु होई.........धरती ककर ? जे जोतए, बाचय करए तकर। किसानक आजादी आकाश सँ उतरि कऽ नहि अएतैक। ओ परगट हएत नीचा—जोतल धरतीक भूरभूरा ढेप के फोरिकऽ......बूढ़ा शीतो एखनो तक हमर माथ घूमैत छल.........।

की एतबहि मे आलमक पछुआर सँ एकटा आदमी आएल ओकरा हाथ मे नेपाली खुकरी (तलवारि) छलैक।

हम बान्हल छलहुँ। जाल सँ सभ अंग ओझराएल छल। हँ दाँत सँ एक गोटेक कब्जा चपने रहिऐक।

पहिलका हमरा माथ पर जोर सँ लाठी मारलक एक नहि, दोसर बेर... हम बेहोश भऽ क जमीन पर लुढ़कि गेलहुँ !